रनियां भिखारिन

मैथिली कथा-संग्रह

आचार्य रामानन्द मण्डल

ममतामइ माय

श्रीमती चन्द्र देवी के चरन कमल मे अर्पित

रनियां भिखारिन

(मैथिली कथा संग्रह)

रचनाकार

आचार्य रामानंद मंडल

प्रकाशक

मिथिला समाज ट्रस्ट

MST PUBLICATION

ISBN : 978-93-94207-03-5

रनियां भिखारिन

(मैथिली कथा संग्रह)

लेखक : आचार्य रामानंद मंडल

© लेखकाधीन

पहिल संस्करण : २०२३ इ.

मूल्य : भारतीय २००/- रुपया मात्र

आवरण : साभार

प्रकाशक :

मिथिला समाज ट्रस्ट

दिल्ली : द्वितीय तल, प्लाट संख्या - १२,

खेसरा संख्या - १२२/५/१, लालडोरा,

ब्रह्मकुमारी मार्ग, संत नगर, दिल्ली

पिन - ११००८४

मोबाइल : ९९११५६२८५९

Email : mithilasamajtrust@gmail.com

Website : www.mithilasamajtrust.com

मुद्रक : जैना ऑफसेट प्रिंटर्स, साहिबाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

Raniyan Bhikharin

A Collection of Maithili stories

By Acharya Ramanand Mandal

First Edition : 2023, Price : Rs. 200/-

प्रकाशकीय

निबंधनक कालहिसँ मिथिला समाज ट्रस्ट भाषा-साहित्य विशेष कऽ मैथिलीक लेल प्रतिबद्ध रहल अछि। ताहि क्रममे पुस्तकालय, शब्दकोश निर्माण, प्रकाशन आदि-आदि आयोजनक माध्यमे प्रयासरत अछि। एहन नहि जे बाट सुगम छैक वा मिथिला समाज कोनहुँ अमूल-चूल परिवर्तन आनि देने हुअय। नानाविधि झंझावात सँ व्यक्ति हो वा संस्था सबहि प्रभावित होइछ। तखन इहो सत्य जे ट्रस्ट लोक समाजक नजरि पर अबस्से अछि।

साहित्य कथमपि व्याकरणक नहि थिक। विश्व भरिक भाषा संगहि भारतीय भाषा परिवारो मे नूतन शब्दक आगम आ ठेंठ शब्दक रक्षाक दायित्व साहित्ये पर अछि। ताहि आलोके मे समय-समय पर शब्दकोश, व्याकरण आदि परिमार्जित होइत रहल अछि। कहबाक तात्पर्य जे भाषा तरल थिक सहज प्रवाहमान। प्राचीन कालमे मनुक्खक आवागमन अल्प रहैक, तैँ विजातीय शब्दक प्रयोगक चलनियो अल्पे। आजुक जुगमे सगर संसार समटा गेल अछि। नब शब्दक परिचय बढ़लैक आ तैं कोनहुँ भाषा मे अन्य भाषा मूलक शब्दक समावेश बढ़ि रहलैक।

रोजगार आ शिक्षाक लेल पलायन करैत समाज मे भाषाक प्रति जागरूकता अपेक्षाकृत कम छैक, भलो कोनो वर्ग हो। शिक्षित समाज अपन अइंठी, दुर्बुद्धि आ नक़ल करबाक प्रवृतिएँ छोड़ि रहलाह। इहो सत्य जे खास वर्गक भाखा सेहो बेस प्रभावित भेलैक अछि मुदा ताहि फेंट - फांटक जड़ि मे अज्ञानता अछि, तद्जन्य गौरव ओ दायित्व बोधक अभाव थिक। अभ्यासे नरा:, कारण जे रहौ मातृभाषा विकृत भेलैक अछि, ताहि मे कोन संदेह ?

मैथिली संग बड्ड विपत्ति छैक। भाषा कोनहुँ भूभागक होइछ से भूभाग तऽ नेपाल, बांग्लादेश आ भारत तीन खंड मे बंटैले अछि। सहजहि नेपाल सँ मिथिला - मैथिलीकेँ भग्न करबाक कूट चालि चलि रहल। पच्छिमा मैथिलीकेँ बज्जिका नाओं

धऽ मैथिली सँ फूट कऽ देल गेल अछि। आब ओम्हर ओकर मानक सेहो निर्धारित हेतैक आ शीघ्रहि अंतरराष्ट्रीय भाषा बनि मैथिलीक आंचरि उघारत। फूसिये अभागल लागल छथि नेपाल सँ भारत आबि मिथिला - मैथिलीक आंदोलन करबा मे। दक्षिणी मानक मैथिली, अंगिका बनि पहिनहि डीह बंटबाक लेल तत्पर अछि। झारखंड दिस देवघरिया मैथिली खोरठा नामे राज्यभाषा अहि। सबटा कूट चालिक जड़ि, राजधानीये सबमे आ मैथिलीक ध्वजवाहक लोकनिक डीहे लागि भेटत।

मैथिलीक पछिमा शैली ताहूमे भाषा-सीमांत क्षेत्र रहने बोलचाल मे जे ध्वनि विसंगति-विकृति वा विदेशज ध्वनिक आगम भेलैक अछि ताहिए शैलीमे लिखल रहबाक चलते कथ्य-तथ्य सँ इतर, ''रानियां भिखारिन' भाखा शैलीक मादे अपना सन अपने अछि। ट्रस्टक ध्येय अर्थ नहि, मैथिली विशेषक ठेंठ देशज शब्दक खोज, शोध आ रक्षा संगहि नब प्रवृतिक चिन्हान थिक। साहित्यिक भाषाक निसाँ केनिहारक उपलब्ध शब्दकोश सँ घनेरो माटिक शब्द-संतान निपत्ता अछि आ गैर मजरुआ आम जेकां दफानल जा रहल। अइ उपेक्षा आ अनर्थक मूल कारण प्रयोगक अभावे थिकैक। 'रानियां भिखारिन' पछिमा बोलीयोक सीमांत शैली मानल जा सकैछ जाहि मे ढ़ेर रास माटिक शब्द ठाम धेलकैयै। हं ! किछुठां विजातीय ध्वनि सेहो छैक तऽ से भाषा-समाजक अन्वेषण आ निराकरण, व्याकरण आ शब्दकोश बनौनिहारक तल्लुक, साहित्य आ रचनाकार कियैक करत ओकर काज ?

विशुद्ध पछिमा शैली मे कविता संग्रह 'भासा के न बंटियो' कऽ पछाति लेखक आचार्य रामानन्द मंडलक नब कृति कथा-संग्रह 'रानियां भिखारिन'लोक समाजक बीच प्रस्तुत करैत मिथिला समाज प्रकाशन सकारात्मक, रचनात्मक प्रतिक्रियाक अपेक्षा संग उत्साहित अछि।

~ इति

कवि एकांत राजीव झा

भूमिका

'रनियां भिखारिन' कवि, चिंतक आ शिक्षक (सेवानिवृत्त) आचार्य रामानन्द मंडलक दोसर प्रकाशित पोथी छनि I हिनक पहिल पोथी **'भासा के न बांटियो'** नामक कविता संग्रह छनि जे की पछिमा (वज्जिका) मैथिलीमे लिखलनि आ वर्ष-2022 मे प्रकाशित भेलनि I साहित्यिक अभिरूचि रखनिहार लोकक बीच शीघ्रहिं ई अपन स्थान सुरक्षित कS लेलक जाहिमे प्रकाशकक भूमिका सेहो उत्साहवर्धक रहल I लेखकक सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक आ राजनीतिक परिधि मध्य सभ तरि नीक जकाँ एहि पोथीक चर्चा भेल I एत' तक की पोथी अपन भ्रमण-यात्रामे वर्तमान सरकारक उप-मुख्यमंत्री केर हाथमे सेहो देखल गेल I प्रथम पोथीक स्वीकार्यता आ प्रशंसा लेखक कें दोसर पोथीक लेखन व प्रकाशन दिस प्रेरित केलक आ परिणामतः मैथिली साहित्यक दोसर विधामे रचित कथा संग्रह 'रनियां भिखारिन' अपने लोकनिक सोंझा अछि I

आचार्य रामानन्द मंडल रसायन शास्त्र आ हिन्दी साहित्य दुनूमे स्नातकोत्तर छथि आ वृत्तियें शिक्षक I एकर सभक समेकित चमक, तर्क व वैज्ञानिक दृष्टिकोण हिनक रचनामे अवश्य देखबा मे आओत I मैथिलीक बोली यथा अंगिका वा बज्जिका आदिमे रचनाक सन्दर्भ मे विमर्शक विषय ईहो रहैत अछि जे ई रचना मैथिलीक भेलैक की नहि ? अंगिका, बज्जिका आ मैथिलीक आनो बोली के मैथिली कहब आ की केवल मानक मैथिली के ? हम त' कहब एहि प्रश्नक उत्तर मे हिनक कविता संग्रह, जे की वज्जिका मे लिखल अछि, ***'भासा के न बांटियो'*** पहिने पढ़ू I

'रनियां भिखारिन' सेहो पछिमा (वज्जिका) मैथिलीमे लिखल एकटा कथा-संग्रह अछि जाहिमे छोट-पैघ मिला क' कुल अठाइस (28) टा कथा अछि I संग्रहक अधिकांश कथा प्रेम-प्रसंगक कथा थिक जे की भावनात्मक प्रेम आ

आ दैहिक प्रेम दुनू के संजोगने अछि I पुनः दैहिक प्रेम वैध आ अवैध दुनू होइछ जाहिमे वैध-प्रेम सामाजिक मान्यता सँ स्वीकार्य अछि परञ्च अवैध-प्रेमक, जकर की दोसर नाम वासना अछि, चर्चो करब लोक पसिन्न नहि करैछ I परञ्च कखनो-कखनो मजबूरी सेहो अवैध प्रेमक कारण बनैछ I यद्यपि समाजमे सब दिन एहि प्रकारक घटना-कुघटना होइत रहल अछि तइयो बहुत बेसी लेखक एहि तरहक प्रसंग के विषय बना किछु लिखबा सँ परहेज रखैत छथि I आचार्य रामानन्द मंडल एहनो विषय के उठा अपन तार्किक क्षमता सँ नव दृष्टिकोण रखलन्हि अछि I हिनक तार्किक शक्तिक पाँछा आचार्य रजनीशक दर्शन सेहो अछि जकर की चर्चा ई एकटा कथा ***'काम से राम के ओर'*** मे केने छथि I संग्रहक किछु कथा मातृ-भासाक प्रति प्रेम, सामाजिक एवं धार्मिकआदर्श, राजनीतिक दूनिया मे अपराध, नवयुवकक बेरोजगारी तथा पलायन, जीविका हेतु जागरुकता आदि विषय पर केन्द्रित अछि I ई सभटा अपना लोकनिक गाम-घरक कथा थिक, पहिनेक जमींदार आ करपरदाज वा वर्तमानक आर्थिक दृष्टिएँ सम्पन्न आ विपन्न लोकक कथा थिक I

कोनो कोनो कथामे लेखक स्वयं के एक पात्र बनौने छथि त' कोनो कोनो कथामे दयानंद नाम सँ I यदि एहि तरहक कथा कैँ आपस मे जोड़ि दी तS उपन्यासक खाका नाहित लागत I पोथीक एकटा कथा ***मैथिली*** मे बज्जिका क्षेत्रमे बाजय बला बोली सेहो मैथिलीए थिकैक, एहि बात के स्वीकार्यता पत्नी सँ करोलनि I सामाजिक आदर्शक चर्चा करैत ***आदर्श पुत्रमे*** एक्के समाजक दू टा युवकक तुलना केलनि अछि I एकटा युवा शिक्षक, जे की गाममे अछि, अपन माय पिताजीक सेवा करैत अछि आ एकटा अमेरिकन युवा इंजिनियर जे माय पिताजी के अंतिम दर्शनो हेतु गाम नहि पहुंचि पबैत अछि I ***मिताइ*** शीर्षक कथा जे की दयानंद आ सियाराम इस्कुलिया संगीक अछि एहि पढ़ाइ मे प्रतिस्पर्धाक बाबजूदो दयानंद सियाराम आ अपन बीच असली मिताइ कहैत छैक I ***सादा जीवन उच्च विचार*** एवं ***महायज्ञ*** मे समाजमे अपेक्षित धार्मिक

सहिष्णुताक उदाहरण देलनि अछि I

बेरोजगारीक नकारात्मक प्रभाव आ जीविका हेतु नवयुवकमे जागरुकता एहि प्रकारक चर्चा क्रमशः ***गरीब के कहूं गुजारा न*** आ ***हरबाह*** कथामे भेल अछि I वर्तमान राजनीतिक परिदृय ***राजनीति आ अपराध*** शीर्षक कथामे झलकैत अछि I द्वि-वर्णी व बेमेल प्रेम-प्रसंग आ ओकर कानूनी मान्यता अथवा सामाजिक स्वीकृतिक बात ***रक्त संबंध, यशोदा माय , जैविक पिता, प्रेम के जीत, सामरथ के दुख नाहि गोसाई, बाल बैरागी*** आदि कथाक माध्यमे केलनिI प्रेम-प्रसंगग उचित नियति ***पारो*** एवं ***गौरी*** मे दर्शोलन्हि अछि त' एकरामे अनपेक्षित परिणाम ***प्रेम मे धोखा*** *आ* ***विधवाक पियार*** शीर्षक कथा मे अछि I अवैध प्रेम-प्रसंग आ एकर विद्रूप रूप ***कमीना विद्वान*** *,* ***शराब आ शबाब***, ***वारिस*** *एवं* ***झापन*** मे वर्णित अछि I

एहि पोथीक नाम जाहि कथा **'रनियां भिखारिन'** शीर्षक पर अछि ओ अवश्य लेखकक एकटा उत्कृष्ट रचना छनि I एक दिस स्त्रीक अवैध दैहिक सम्बन्ध आ दोसर दिस वात्सल्य प्रेम, अद्भुत चित्रण केलन्हि अछि आचार्य रामानंद जी I वाम अंग सँ पोलियो ग्रस्त पचीस वर्षीय रनियां प्रखंड मुख्यालयक बस स्टैंड पर भीख मांगि गुजर करैत छल I पाईक खातिर बस के भीतर सफाइ सेहो करय लागल I धीरे - धीरे बसक कंडक्टर ओकरा बहला फुसला कऽ शारीरिक सम्बंध तक बना लेलकै I किछु मासक बाद ओकरा बच्चा जन्म लेलकै I यद्यपि लोकक नजरि मे ई अबैध बच्चा भेलैक परंच रनियां वात्सल्य प्रेम मे बैध - अबैध, शोषण-बलात्कार वा प्रेम आदि सभ स्थिति सन फराक भ' दोसर जगह चलि गेल।

प्रबुद्ध पाठकगण सँ निवेदन करैत छियनि जे ई कथा संग्रह पढ़थि आ लेखक केँ अपन प्रतिक्रिया अवश्य प्रेषित करबाक कृपा करथि आ

अंत मे माँ मैथिली सँ यैह प्रार्थना जे हिनका स्वस्थ रखैत हिनक कलम मे आर रोशनाई भरैत रहथुन्ह आ ई मैथिली साहित्यक सेवा मे अपन नव - नव पोथी प्रकाशित करैत रहथि।

शुभकामना सहित,

धीरेन्द्र कुमार झा 'धीरू'
हैदराबाद, तेलंगाना
मोबाइल : ८४५९१६५९६५

अप्पन बात

अप्पन रचित मैथिली कथा संग्रह - रनियां भिखारिन आदरनीय पाठक वृंद के हाथ मे देवे के लेल मन हर्सित होय हय। आइ कथा संग्रह मे सामाजिक घटना -परिघटना जे हमरा मन के झकझोरलक, वैह कथा रूप मे शब्द चित्रित भेल हय। कहल गेल हय की साहित्य समाज के दर्पन होयत हय।

रचनाकाल मे मैथिली आंदोलनो प्रभावित कैलक तऽ हम रचना के भासा देसी रखली। खास कऽ के मैथिली भासा के विभिन्न भासा शैली। जेना दच्छनी मैथिली आ पच्छमी मैथिली शैली। हम मिथिला के धिया सीता के जन्म धरती सीतामढ़ी के निवासी छी। ई क्षेत्र पच्छमी मैथिली के क्षेत्र हय। चलभास मे जौं दू तरह के अंग्रेजी हय। एकटा अंग्रेजी भारतीय आ दोसर अंग्रेजी यू.के.। अइ आधार पर हम अप्पन कथा के रचना पच्छमी मैथिली शैली मे कैली आ मैथिली आंदोलन मे सहायक बनली। अइ कथा संग्रह के पढ़ूं, समीक्षा करू आ विभिन्न मंच से प्रस्तुत करू।

रचनाकाल मे मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध कथा -साहित्य मंच सगर राति दीप जरय के 108म,109म आ 112म आयोजन मे भाग लेली आ आदरनीय साहित्यकार सभ के आशीर्वाद प्राप्त कैली। प्रत्यक्ष वा सोशल मीडिया से विभिन्न कथा पर वरीय साहित्यकार यथा साहित्य अकादमी भारत से पुरस्कृत जगदीश प्रसाद मंडल, प्रसिद्ध समीक्षक तारानंद वियोगी आ वरीय समालोचक डा रमानंद झा 'रमण' से प्रोत्साहन पैली।

साहित्यकार मित्र मंडली के रुप मे रामनरेश यादव, रामकृष्ण परार्थी, श्रीहर्ष आचार्य, रामेश्वर प्रसाद मंडल,किशलय कृष्ण, कवि राजीव एकांत, लालदेव कामत आ डा उमेश मंडल हमरा प्रोत्साहित कैलन।

अइ कथा संग्रह के लेल पत्नी प्रमिला देवी, ज्येस्ठ पुत्र प्रो. (डा) राजीव रंजन,पुतोहु उपसचिव स्वाति परवाल, पोती धनिका, मंझला पुत्र सिविल जज रवि रंजन, बहु सिविल जज नेहा भालोटिया, पोती अन्निका आ अवनिका, संझला पुत्र प्रभात रंजन, छोट पुत्र प्रभाष रंजन आ समस्त परिवार के अहम योगदान हय। धीरेन्द्र कुमार झा 'धीरू' के उत्कृष्ट भूमिका लेखन लेल हम आभारी छी। कथा संग्रह -रनियां भिखारिन के प्रकाशन मे मिथिला समाज ट्रस्ट दिल्ली के प्रकाशन के निदेशक आ मिथिला- मैथिली के अभियानी कवि एकांत राजीव झा के अमूल्य योगदान हय। अइ लेल सभ आदरनीय लोग के सादर आभार।

अइ कथा संग्रह के ममतामई माय श्रीमती चन्द्र देवी के चरन कमल मे अर्पित करइत छी।

आचार्य रामानंद मंडल
धिया सिया जन्मोत्सव 29 अप्रैल, 2023
मुरलियाचक वार्ड नं -19, सीतामढी नगर, सीतामढ़ी।
मो-9973641075

कथा प्रवाह क्रम

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	आदर्श पुत्र	13
2.	मैथिली	15
3.	सादा जीवन उच्च विचार	19
4.	धरम संकट मुक्त	23
5.	प्रेम मे धोखा	30
6.	राजनीति आ अपराध	32
7.	काम से राम के ओर	34
8.	पारो	37
9.	गौरी	41
10.	कमीना बिदवान	46
11.	गरीब के कहूं गजुारा नऽ !	48
12.	कोरोना	51
13.	रक्त संबंध	54
14.	यशोदा माय	57
15.	जैविक पिता	60
16.	मिताइ	63
17.	गोलट	65
18.	वारिस	69
19.	प्रेम के जीत	72

कथा प्रवाह क्रम

क्रम संख्या	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
20.	विधवाक पियार	75
21.	बाल बैरागी	77
22.	समरथ के दुःख नहि गोसाईं	81
23.	मुंहफटपन	89
24.	शराब आ शबाब	95
25.	महायज्ञ	97
26.	हरबाह	101
27.	झापन	103
28.	रनियां भिखारिन	105

| आदर्श पुत्र |

गोपालपुर गाम मे दूगो परिवार रहे। पुरबारी टोला मे गरीबन दास अपन पत्नी जसोदा आ बेटा फूदन दास के संगे रहे। फूदन दास गाम के प्राइमरी स्कूल मे पंचायत शिक्षक रहे। वोकर बिआह भे गेल रहे। गरीबन दास छोट मोट गृहस्थ रहलन। अप्पन खेती बारी करे। जैइमे शिक्षक रहला के बाबजूद फूदन अप्पन बाबू के खेती बारी मे संग देबे। फूदन के पत्नी अपन सास के संगे घर के काज संभाले। गरीबन दास भैंसी भी पाले। सुबह सांझ गरीबन भैंसी दूहे तऽ फूदन अपना गमछा से माछी के उड़ाबे आ डौंस के मारे। तऽ जसोदा धुंआ-धुकुर करे। शेष समय मे गरीबन दास भक्ति भजन करे। गरीबन दास कबीर पंथी रहलन दाढ़ी केश बढैले रहलन। गरा मे तुलसी के कंठी रहे। कंठी मे एकेटा बड़का तुलसी के दाना रहे। उजर चनन नाक से उपर माथा तक रहे। आस पड़ोस मे कहौं भंडारा होय तऽ दुनू बापते जाय। धीरे-धीरे फूदन दासओ कबीर पंथ के अनुआयी भे गेल रहे। माय बाप के आज्ञाकारी रहे। वोऽ स्कूल मे भी बच्चा सभ के खूब पढाबे। वोऽ व्यवहार कुशल रहे।

पछियारी टोला मे रामपूजन शर्मा अपन पत्नी सुमित्रा आ बेटा आशुतोस संगे रहे। रामपूजन शर्मा बगल के गाम सोनपुर के वित्त रहित उच्च विद्यालय मे सहायक शिक्षक रहलन। वोऽ एकटा संपन्न किसान भी रहलन। आशुतोस पढे मे बड़ा तेज रहे। पटना इंजिनियरिंग कॉलेज से पास कैला के बाद अमेरिका के एगो कंपनी मे काज करे लागल। बाद मे ओहीं अप्पन सहकर्मी से प्रेम बिआह कऽ लेलन। ओहीं रहे लगनन। मोबाइल से माय-बाबू से बात करैत रहलन। रुपया भेजे के कहियो जरूरत नऽ पड़ल। परंच सेवानिवृत्त बुढ़ बाप आ माय के जे पुत्र से परेम आ सेवा मिलै के चाही वो आशुतोस देबे मे असमर्थ हो गेलन। बाबू माय मोबाइल से लाख कहलन की आशुतोस तू अऽब इहां आऽजाऽ। हमरा पुतोहु के भी ले आबा। हम तोरा आ अपन

पुतोहु के देखे के चाहे छी। तोरा इहां कोन कमी हौअ। तोरा कमाय के कोनो जरुरी नऽ हौ। परंच आशुतोस कहे की पापा अहां के पुतोहु लोलिता जाय के लेल तैयार नऽ हैय। लोलिता कहै हैय की भारत के क्लाइमेट मे हम सरवाइभ नऽ कऽ पायब आ पापा वोऽ प्रिगनेंटो हैय। पापा हमरा माफ कऽ दू। हम भारत नऽ आय पायब।

रामपूजन शर्मा आ सुमित्रा बिमार पड़ गेल। बेटा-पुतोहु से मोह तोरैत दुनिया से गुजर गेलन। गाम के देयाद मे के भाई संतोष मोबाइल से सभ समाचार आशुतोस के देलक। आशुतोस कहलक हम अखनी बच्चा के हास्पीटल मे छी। हमरा बेटा जनम लेलक हैय। एहन परिस्थिति मे तू सभ काम क्रिया कऽ दहू। हम दू लाख रुपया तोरा खाता मे ट्रांसफर कऽ देउ छियौ। देयाद आ गाम के लोग सभ मिल के दुनू गोरे के एके चिता पर राखि के दाह संस्कार कऽ देलक। मुखाग्नि देलक देयाद के भतिजा संतोष। खुब भोज भात भेल परंच रामपूजन शर्मा के एकलौता पुत्र आशुतोस नऽ आयल। वोकर संपत्ति के देखरेख संतोष करैत हैय। अन्न उपजा के बेच के संतोस, आशुतोस के खाता मे ट्रांसफर कऽ दैइ हैय।

कुछे दिना बाद गरीबन दास बिमार परलन। फूदन दास अपना बाबू के खुब सेवा कैलन। स्कूल से छुट्टी लेके दिन रात एक टांगि पर खड़ा रहलन। परंच बाबू सतलोक चल गेलन। फूदन कबीर पंथ के अनुसार अपन बाबू गरीबन दास के समाधि देलन। जै मे देयाद संगे गाम के सभ लोग भाग लेलन।

साधु सत्संग भेल। भंडारा भेल। गाम के सभ लोग फूदन के बड़ाई करैत हैय। भगवान फूदन जैसन बेटा सभ के देत परंच आशुतोस जैसन बेटा दुश्मनो के नऽ देत। फूदन अपना पत्नी संग अपना माय के खूब सेवा करैत हैय। फूदन आइ गाम मे आदर्श पुत्र मानल जाइत हैय। ■■■

| मैथिली |

~ हे सुनु तऽ !

~ कहु, की कहइ छी ?

~ पढियो नऽ ! हम एगो कथा लिखली हए।

~ लाउ पढैय छी !

~ "एगो राजा रहैय। नाम वोकर दशरथ रहै। हुनका तीन गो रानी रहैय। बड़की के नाउ कौशल्या, मंझली के कैकेई आ छोटकी के नाउ सुमित्रा रहैइ।"

~ हे हम आबि नऽ पढ़ब।

~ कैला ?

~ हमर मुंह दुखाइ हैय। बुझाई जेना जीउ ऐठाईं गेल।

~ आउर पढू नऽ।

~ नऽ ! हमरा सं नऽ पढ़ाई हैय।

~ देखियौ नऽ। आइ के दैनिक मैथिल पुनर्जागरन प्रकाश मे विभूति आनंद के कथा छपल हैय। वोऽ कालेज मे प्रोफेसर रहलथिन हैय।

~ ज्या दियौ। ई मैथिली मे हैय। अपन सभ के भासा ई नऽ हैय।

~ अहूं तऽ मैथिलीये बोलैय छी।

~ हम मैथिली नऽ बोलैय छी। हम घर मे टुटल फूटल हिंदी बोलैय छी आ बाहर खड़ी हिंदी बोलैय छी। देखैय नऽ छी। जे नऽ पढल- लिखल हैय वोहो अपना बच्चा के खड़ी हिंदी सिखावैय छियै।

~ ई अहां के की भे गेल हैय ! अहां अपनो भासा के खराब कऽ रहल छी। बिना पढल लिखल के भासा बोल आ लिख रहल छी।

~ आब अहां पानी के पाइन, थाली के थारी, ग्लास के गिलास कहैय छी। ई ठीक बात

हैय। पढ - लिख के लोग एना बोलैय छी। धियो - पूता के बोली - बानी बिगड़ जतैय।

~ एना नऽ कहु ! ई मैथिली भासा लेके युवक सभ आईएएसो बन रहल हैय। देखियौ नऽ। शिवहर के एगो लड़िका मैथिली लेके आइएएस बनलैय हैय। मिथिला मिरर के ललित नारायन झा इन्टरव्यू लेलथिन हैय।
~ तऽ ई बात हैय !

~ हं ! मिथिला के मातृभासा मैथिली हैय। अपना सभ तऽ सीता के जनम स्थली सीतामढ़ी के छी तऽ हमरा सभ के मातृभासा मैथिलीये हैय। आउर नयका शिक्षा नीति मे तऽ प्राथमिक शिक्षा मातरिभसे मे देल जतैय। बिहार लोक सेवा आयोग के परीक्षा मैथिली विसय लेके बहुते युवक बिहार प्रशासनिक सेवा मे गेल हैय।

~ आंय ! ई बात तऽ हम नऽ जनैत रहली हैय। हम तऽ अपना धिया पुता के औफीसर बनाबे के सोचैत रहली हैय। हम तऽ बुझैत रहली हैय की एहन बोली भासा से हमर धिया पुता खराब हो जायत। अहिला हमरा ई बोली भासा नऽ निमन लगैत रहल हैय। अऽब तऽ हम इहे भासा बोलब आ लिखब। चाहे जिउ ऐंठाय चाहे अउंरी दुखाय।

~ हे। आबि कनिका हमरा पढ़ के सुनाउ। तखनी फेर हम पढब।
~ तऽ अच्छा सुनूं।

~ कौशल्या से राम, कैकेई सं भरत आ सुमित्रा सं लक्षमन आ शत्रुधन जनम लेलक। विश्वामित्र मुनि अपना यज्ञ के राक्षस सभ सं रक्षा के लेल राम आ लक्षमन के राजा दशरथ से मांग के ले गेलन। राम आ लक्षमन के विश्वामित्र जी धनुस यज्ञ देखाबे जनकपुर ले गेलन। रस्ता मे एगो नारी अहिल्या अपना पति रिसी गौतम के त्याग के दुख सं पत्थर जेका भे गेल रहे। राम के पग ध्वनि सुन के होश मे आ गेलन। ऊ

स्थान के अहिल्या स्थान आइ कहल जाइ हैय। जनकपुर के राजा जनक अपना बेटी सीता के विआह लेल प्रतीज्ञा कैले रहलन की जे वीर अइ धनुस के प्रत्यंचा चढ़ा देत, हुनके से अपन बेटी सीता सं विआह करब।

~ सीता के जनम तऽ सीतामढ़ीये मे होयल रहे !

~ हं ! मिथिला मे जौ अकाल परल रहे तऽ राजा जनक कृसक बन के हर जोते सं पहिले महादेव के स्थापना आ पुजा कैलन ऊ स्थान के लोग हलेसर स्थान कहैय हैय।

~ हं ! हमहु दूनू गोरे तऽ बसंत पंचमी के जल ढारे हलेसर स्थान गेल रही।

~ तऽ सुनूं। हर जोतैत रहलन तऽ सीतामढ़ी के पुनौरा मे खेत मे एगो बच्ची हर के फार के
नोक तर मिलल रहै, नोक के सीत कहल जाइ हैय। तैइला बच्ची के नाउ सीता रखल गेल। राजा जनक सीता के अपना राजधानी जनकपुर ले गेलन।

~ उहीं सीता के विआह राम से धनुस तोड़ला के बाद भे गेल। जनक जी के दोसर बेटी उरमिला सं लक्षमन के आ जनक जी के छोट भाई के बेटी मांडवी सं भरत के आ दोसरकी बेटी श्रुतिकिरती सं शत्रुधन के बिआह भे गेल। बिआह कऽ के अयोध्या जाइत रहत तऽ सीता के डोली के एगो विशाल पाकर के गाछ तर रखल गेल। वोइ तर एगो मनोरम पोखरो रहे। आइ वोइ स्थान के पंथपाकर कहल जाइ हैय।

~ बाद मे राजा दशरथ राम के जुवराज बनाबे चाहलन। परंच दोसरकी पत्नी कैकेई के चलते राम के वन जाय के परलन। राम के संगे सीता आ लक्षमन जीयो वन चल गेलन।

~ वन मे सीता के राक्षस के राजा रावन अपहरन कऽ सं के अपन राजधानी लंका ले गेल। हनुमान आ सुग्रीव के सहायता सं राम के वान से रावन मारल गेल। राम

अयोध्या के राजा बनलन।

~ हे ! ई खिस्सा पहलेहु सुन ले रहली हैय परंच हिंदी मे। आबि अंहा के मुंह सं मैथिली मे सुन ली हैय तऽ बड़ा सुन्नर आ मिठगर लगैय हैय।

~ हं ! मैथिली भासा बड़ा मिठ भासा हैय।

~ लाउ ! आबि हम पढैय छी।

~ राम जी के दुगो पुत भेल रहैय। लव आ कुश।

~ हे, सीता के एगो नाउ मैथिली हैय।

~ हं ! एहीले भसो मैथिली हैय।

▪▪▪

| सादा जीवन उच्च विचार |

एक दिन कमाली जी भेट करे आयल रहथि। हम पुछली ~ 'जमसेद साहबक की हालचल हइ ?'

कमाली जी बजलन ~ 'वोऽ तऽ कोरोने कालिमे कबर चल गेलन। सरदी - खांसी रहइ'।

हम नि:शब्द हो गेली। हम अतीतमे खो गेली। बीपीएससी के अनुशंसा पर प्राथमिक शिक्षकक पद पर मध्य विद्यालय, फूलवारीमे ज्वाइन कैली रहे। विद्यालयमे दूटा आउर शिक्षक ज्वाइन कैलन। इसराफिल जी आ कमाली जी। माने की तीन टा शिक्षक ज्वाइन कैली। उहां पहिले सं काज करैत रहलन। प्रधानाध्यापक के रूपमे चौधरी जी आ सहायक शिक्षकके रूप मे राय जी, जमशैद साहब आ नैना कुमारी।

ज्वाइन कैला के पहिलका विफेवार के प्रधान जी बतैलन आइ विद्यालय मे हाफ डे पढाई होयत आ कल्ले शुकर हए। कल्ले विद्यालय मे साप्ताहिक बंदी रहत। हम अचकचैली। शुकर के बंदी ! वोऽ बतैलन की अपन विद्यालय उर्दू विद्यालय हए। शुकर के मुसलमान आऊर जुम्मा के विशेष रूप सं नमाज पढैत हए। तइला शुकर के बंदी रहइ हए। हिंदी विद्यालय मे शनि के हाफ डे पढाई होय हए आ रविवार के बंदी रहइ हए। हम नऽ जानइत रही ई सब नियम कानून, हिंदी आ उर्दू स्कूल परंच इसराफिल जी आ कमाली जी ई सभ जनैत रहलन।

सभ शिक्षक मे ढीला-ढीली कुर्ता पायजामा आ सधारण चप्पल पहिरे वाला जमशैद साहब ज्यादा लोकप्रिय रहे। गाउंओ मे लोकप्रिय रहलन। हुनकर इहे गांवमे ममहरा आ ससुरार रहे। मामी के वोऽ ममानी बोलैत रहलन। वोऽ गांव के हिंदू लोग सऽ यथोचित संबंध राखैत। किनको नाना - मामा कहैत रहलन तऽ किनको सार सं संबोधित करैत रहलन। सार - बहनोई मे मिथिला के परम्परागत गारी - गरियोअल

संबोधित करैत रहलन। सार - बहनोई मे मिथिला के परम्परागत गारी - गरियोअल करैत रहलन। वोइ विद्यालय के वोऽ बैंक मैंसेजर रहत। गुच्छान्तर्गत माने मध्य विद्यालय से संबद्ध दूटा प्राथमिक विद्यालय के वेतन विपत्रो वोहै बनाबत आउर ट्रेज़री से लेके पेमेट तक कराबथि। अइमे एक दिन ट्रेज़री मे वितरण विपत्र जमा करे। दोसर दिना बैक से ड्राफ्ट लावे। तेसर दिना ड्राफ्ट पर प्रधानाध्यापक सं हस्ताक्षर करा के बैंक मे जमा करावे। चारिम दिना बैंक सं भुगतान करावे। प्रधानाध्यापक आ जमशैद साहब कैशियर सं भुगतान लेके झोरा मे रख के बैंक मे एक ठिम बैठ जाइत रहलन। सभ शिक्षक हुनका आगे अर्द्धवृताकार मे बैठ जाइत रहे। सबसे पहिले रूपया के गड्डी के गनतन। बाद मे भुगतान पंजी खोल के नाम पढतन आ नाम पुकार के भुगतान करैत आ नाम के आगा साटल राजस्व टिकट पर हस्ताक्षर लेइत रहलन। पैचा पालट के हिसाब करैत रहलन। बैक मे दोसरो गुच्छ विद्यालय के पेमेट होइत रहे। शिक्षक सभ के भेंट-घाट होइत रहे। पुरनका शिक्षक सभ अपन पेमेट ले के अपन अपन घर के रास्ता पकड़ लेथि। परंच जमशैद साहब नयका शिक्षक सभ के रोक के नाश्ता, चाय आ पान खुआ के बाजथि - आबि अहां सभ अपन घर जाउ। नयका शिक्षक सभ के कोनो तरहक दीक्कत नऽ होय से हुनकर चिंता रहैय। कोनो गांव के गार्जियन आइल। हुनका सभ के नयका शिक्षक सभ के परिचय कराबथि आ गर्व सं कहैत की ई सभ बीपीएससी प्रतियोगिता परीक्षा पास कऽ के शिक्षक बनलन हए। विद्यालय आ गांव के लेल प्रतिस्ठा के बात हए। विद्यालय के साफ सफाई, पढ़ाई आ कार्यालय कार्य सभ पर हुनकर नजर रहइन। बच्चा सभ के खुब पढाबैत आ खेलाबैत। हं! उर्दू विद्यालय के रहितो पढाई के माध्यम हिंदी भे गेल रहे। ई हालत उर्दू वा उर्दू के जानकार शिक्षक के अभाव के कारन हो गेल रहे। मुसलमान के बच्चा सभ उर्दू गांव के प्राइवेट मदरसा मे पढे। मदरसा सरकारी विद्यालय के शैक्षनिक अवधि के पहिले वा बाद मे संचालित होइत रहे।

जमशैद साहब नयका शिक्षक सभ के वेतन विपत्र् के तैयार करनाइ के साथ लेखा बही के संधारन संगे कार्यालय कार्य के करे के सिखावथि आ बोलतन की अगां अहां सभ के काज देत। अहां सभ उच्च योग्यताधारी छी। उच्च पद तक जायब।जमशैद साहब सादा जीवन आ उच्च विचार मे विश्वास राखथि।

कमाली जी टोकलन ~ दयानंद बाबू, केन्नऽ खो गेली।

हम कहलियन ~ जमशैद साहब मे खो गेली। केते निक आदमी रहतन जमशैद साहब।

कमाली जी बजलैन ~ हं ! हुनका नाहित आदमी आबि मिलैत केन्नऽ हए। हमरो वोऽ याद अबै हति।

हम पुछली ~ आइ कालि अहां केन्नऽ पोस्टेड छी ?

कमाली जी बजलैन - मध्य विद्यालय, हुसैनामे हेडमास्टर छी।

हम पुछली ~ इसराफिल जी केन्नऽ हतन ?

कमाली जी बजलैन ~ वोऽ मध्य विद्यालय परिहार मे हतन।

हम पुछली ~ प्रधानाध्यापक चौधरी जी केन्नऽ हति ?

कमाली जी बजलैन ~ हमरा नऽ पता हैय।

हम पुछली ~ राय जी केन्नऽ हतन ?

कमाली जी बजलैन ~ वोऽऽ तऽ स्वर्ग सिधार गेलन।

हम कहली ~ रायो जी निक लोग रहथि।

कमाली जी बजलैन ~ हं !

हम पुछली ~ नैना जी केन्नऽ हतिन ?

कमाली जी बजलैन ~ रिटायर्ड होके घर पर हतन।

हम पुछली ~ जमशैद साहब के बेटी - बेटा के की हालचाल हए ?

कमाली जी बजलैन ~ बेटी के तऽ बिआह हो गेलइ आ बेटा उच्च शिक्षा प्राप्त कऽ रहल हए।

नास्ता पानी कऽ के कमाली जी चल गेलन। आइ हम प्रधानाध्यापक से रिटायर्ड होके जीवन बिता रहल छी। परंच जमशैद साहब के याद नऽ गेल। वोऽ धार्मिक रहतन पर कट्टर नइ रहथि। रमजान मे रोज दिन गांव मे के मस्जिद मे टिफिन मे इसराफिल जी आ कमाली जी के संगे जाइत रहलन। हुनकर मधुर व्यवहार , सादा जीवन आ उच्च विचार मन मे याद रह गेल।

▪▪▪▪▪▪

| धरम संकट मुक्त |

राजेश्वर प्रताप प्रतापगढ़ के पूर्व जमींदार रहलन। हुनका तीन सैय बिघा जमीन रहे। लम्बा चौड़ा दूमंजिला हबेली। दूरा पर दू गो हाथी, दूगो घोड़ा, दस जोड़ा बैल, चार गो भैसी आ चार गो गाय रहे। तहिना नौकर नौकरानी, टहलू-टहलनी, गोबर कढनी रहे। हर जोते के लेल हरबाह, माल जाल के देखभाल लेल नौकर, खेती करे लेल मजदूर-मजदूरिन आ जेठरैयत रहे। केस मुकदमा देखे लेल मैनेजर। हाथी के लेल महावत, घोड़ा के लेल सहसवान, फिटिंग गाड़ी के लेल कोचवान, बैलगाड़ी के लेल बहलबान आ एगो जीप के लेल ड्राइवर रहे।

पच्चीस बरख के राजेश्वर प्रताप शादी सुदा रहे। घरबाली मृनालिनी भी रामगढ़ के जमींदार सूर्य प्रताप के एकलौती बेटी रहे। बाइस बरस के मृनालिनी पांचवां तक पढल रहे। साढे पांच फीट, नाक नक्श आ शरीर के कटिंग ठीक रहे। परंच रंग से मद्धिम रहे। माने की श्यामला रहे। स्नातक राजेश्वर प्रताप अपने गोर भुराक आ लगभग छह फीट के बांका जवान रहे। करिया मुंछ हुनका जवानी मे चार चांद लगाबे। दूनू अपन जबानी मे गोता लगबैत पारिवारिक जीवन जीयत रहे।

एक दिन राजेश्वर प्रताप के नजर अपन गोबर कढनी दलित बिधबा कोसलिया के एकलौती बेटी रनियां पर परल। रनियां वोइ दिन अपना बिमार मतारी के बदले गोबर काढे आयल रहे। रनियां खूब सुन्नर रहे। अठारह बरस के रनियां के देखते राजेश्वर प्रताप के ठकमूर्गी लाग गेल। माने की देखते रह गेल। कनिका देर के बाद राजेश्वर प्रताप बोललन ~ तू तऽ कोसलिया के बटी छे नऽ ?

रनियां बोललक – जी।

राजेश्वर प्रताप बोललन ~ बहुत दिन के बाद देखलिउ हैय। केन्नऽ रहैत रहलैय हैय ?

रनियां बोललक - हम अपना मामा इहां रहैत रहली हैय। हमर नानी बिमार रहैत रहल

हैय। नानी के सेवा लेल मामा बुला ले रहल हैय। आबि हमर नानी मऽर गेल। तैइला आबि हम इंहे रहब। आइ हमरा माय के बुखार लागल हैय तैइला काम करे हमही आ गेली हैय।

ई बात सुनके राजेश्वर प्रताप कहलन ~ हं ! माय के आराम करे दे आ काम कऽरे तूहें आऽ। राजेश्वर प्रताप मालजाल के घर देखैत हवेली के ओर चल गेलन।

राजेश्वर प्रताप हबेली मे तऽ चल अयलन। परंच मन मालजाल के घर मे रह गेल। दिल रनियां मे अटक गेल। राजेश्वर प्रताप के रात के नीन उड़ गेल। रात मे एक बार राजेश्वर प्रताप के मृनालिनी बोललक ~' की बात, आइ नीन नऽ अबैयऽ की ?'

राजेश्वर प्रताप आंख मुलने कहलन ~ कोनो बात नऽ। नीन आ रहल हैय कहके पहिले बार झूठ बोललन। राजेश्वर प्रताप केहुना कऽ के रात बितैलन। माने रनियां के इंतजार करैत रहलन।

रनियां गोबर काढे सात बजे सुबह मे आयल। उ रहरी के खरहरा से मालजाल के घर खहरैत रहे। राजेश्वर प्रताप भी मालजाल के घर के मुयैना कऽरे के बहाने आ गेलन। रनियां तनिका सकपकायल। फेर रनियां अपना ओढ़नी के समाहरलक जे हरबरायला के कारन नीचा गिर गेल रहै।

राजेश्वर प्रताप बोललन ~ माय के की हालत हौउ ? बुखार कम भेलैइ की नऽ ?
रनियां बोललक ~ नऽ। अखनी हाथ-मथा बरा तपत हैय। राधा किसुन डागडर के दबा चलै हैय।
राजेश्वर प्रताप बोललन ~ अच्छे ई ले एक सैय रूपया आ माय के दे दिहे आ

कहिये मालिक दबाइ ला देलथुन हैय।

रनियां घरे गेल आ माय के एक सैय रुपया देलक आ कहलक की मालिक दबाइ ला देलथुन हैय।
कौसलिया बोललक ~ मालिक के हमरा सभ पर धियान रहै छैय।

रनियां नित दिन काम करे आबे लागल। राजेश्वर प्रताप भी नित दिन रनियां से मिले लागल। कहियो रनियां के देर हो जाय तऽ राजेश्वर प्रताप ब्याकुल हो जाय। कहियो राजेश्वर प्रताप के देर हो जाय तऽ रनियां ब्याकुल हो जाय। माने के ब्याकुलता दुन्नू दिसन रहे। माने की ई प्रेम के आहट रहे। राजेश्वर प्रताप भी हबेली के ओर चल गेलन।

रनियां काम कऽ के अपना घर चल गेल। रनियां अपना माय के कुच्छो नऽ कहलक। फेर रनियां काम करे आयल। राजेश्वर प्रताप भी आ गेलन। राजेश्वर प्रताप पुछलन ~ माय के की हाल चाल हौउ ? रनियां कहलक ~ धीरे-धीरे सुधार हो रहल हैय।

राजेश्वर प्रताप हबेली के ओर चल गेलन आ रनियां अपना घरे। रनियां फेर सबेरे काम करे आयल। राजेश्वर प्रताप भी आ गेलन। राजेश्वर प्रताप रनियां से वोकरा माय के हाल चाल पूछलन। रनियां बतैलक की माय के हाल चाल ठीक हो रहल हैय। रनियां के राजेश्वर प्रताप के सहानुभूति आ व्यग्रता प्रेम के ओर बढ़े लागल तहिना राजेश्वर प्रताप के रनियां के सुन्दरता आकर्सित करे लगल आ व्यग्रता प्रेम के डोर मे बांधे लागल।

एनी मृनालिनी राजेश्वर प्रताप के व्यवहार मे आयल परिवर्तन के खोज मे रहे। पता नऽ लागे। परंच एक रात मे जब मृनालिनी पूछलक की अहां हमरा पहिले

लेखा प्यार नऽ करै छी तऽ राजेश्वर प्रताप कहलन की हमरा रनियां से प्रेम भऽ गेल हैय।

मृनालिनी कहलक ~ वैइ गोबर कढनी कोसलिया के बेटी रनियां से ?
राजेश्वर प्रताप कहलन ~ हं ! वोकरा बिना हम नऽ रह सकै छी।

मृनालिनी कहलक ~ ई अहां की बात करै छी ! वोइ गोबर कढनी के बेटी से अहां विआह कऽ के हबेली मे रखबै ? ई हम नऽ होय देब।

संजोग ई भेल की रनियां के मामा रनियां के बिआह बगल के गांव शिवहर मे ठीक कऽ देलक। रनियां बिआह के बिरोध नऽ कर सकल। राजेश्वर प्रताप भी गुम रह गेल। तय समय पर रनियां के बिआह हो गेल। रनियां ससुरा चल गेल। जाति आ समाज के रिवाज के मुताबिक चार दिन बाद अपना नहिरा प्रतापगढ़ आ गेल।

कल्ह सबेरे फेर रनिये काम करे आयल। राजेश्वर प्रताप माल जाल के घर के देखे बहाने फेर आ गेलन। राजेश्वर प्रताप कहलन ~तू आ गेलऽ। हम तऽ तोरा बिना नऽ रहब। रनियां कहलक ~ हमहू अहां बिना नऽ रह सकै छी। परंच हम बिआह के बिरोध नऽ कर पैली। राजेश्वर प्रताप कहलन ~ हमहुं कुच्छो नऽ कर पैली। रनियां आ राजेश्वर प्रताप के प्रेम परवान चढ़े लागल।

चार महीना के बाद रनियां के दूरागमन के दिन आयल परंच रनियां दुरागमन के साफ नकार देलक। माय मामा के समझावे के कोई असर रनियां पर नऽ भेल। रनियां आ राजेश्वर प्रताप के संबंध के उड़ैत खबर लरिका आ वोकरा बाप के मालूम भे गेल। ऊ रनियां के संबंध के तोड़ देलक माने की छोड़ा-छोड़ी हो गेल।

ससुरा से रनियां के संबंध टूटे के खबर से रनियां आ राजेश्वर प्रताप खुब

खुश भेल। परंच मृनालिनी कनिका चिंतित भेल। कारन की जमींदार परिवार मे ई सभ होइत रहैय हैय। राजेश्वर प्रताप से मृनालिनी बाजल ~ की सुनै छियै ? ससुरा से रनियां के संबंध टूट गेलय हय। रनियां ससुरा जाय से इंकार कऽ देलकऽ हय। हमरा तऽ अइमे अहांके हाथ लग रहल। अहीं सिखैले - पढैले होबै।

राजेश्वर प्रताप हंसैत कहलन ~हम कैला सिखैबै-पढैबै। मृनालिनी बाजल ~ हं यौ ! जमींदार परिवार सभ मे एहिना होइत रहै हैय। हमरो एगो विधवा काकी अपने नौकर से संबंध रखले छथिन। परिवार मे सभ चुपचाप हैय। ई एगो समझौता हइ। हमहुं अहां से समझौता करै छी परंच अइ हबेली मे हम रनियां के नऽ रहे देब।

राजेश्वर प्रताप कहलन ~ हमहुं रनियां के अइ हबेली मे नऽ लायब। अलगे रनियां के टोले मे मकान बना देबै आ लिव इन रिलेशनशिप मे रहब।

अऽब राजेश्वर प्रताप रनियां के एगो मकान बना देलक आ रनियां के नाम से बिस बिघा जमीन भी लिख देलक। रनियां के पति जगऽह रनियां के बाप के नाम आ पता प्रताप गढ लिखायल गेल। राजेश्वर प्रताप दूनू ठिम मे समय बिताबे लागल। रनियां के मायो परिस्थिति से समझौता कर लेलक। कुच्छे दिन बाद रनियां के माय चल बसल। समय पाके रनियां के एगो बेटा भेल। नाव धैलक मनोज कुमार आ मृनालिनी से एगो बेटी भेल। नाव रखलक माधबी। मनोज कुमार से माधबी छौह महीना छोट रहे।

मनोज आ माधबी जौरे जौरे पढे। मनोज के बाप के नाम रनियां के बिआहल पति के नाम लिखायल गेल। जाति भी पति के लिखायल गेल। दुनू गोरे जवान भे गेल। दुनू गोरे मे प्रेम भी पनप गेल। माधबी भी ग्रैजुएट हो गेल। समय पाके आरक्षन लाभ से मनोज सिंचाई विभाग मे इंजीनियर भे गेल। आबि मनोज आ

माधबी बिआह करे के बात करे लागल। मनोज के मन मे एगो बदला के भी भाव रहे। अपना माय आ राजेश्वर प्रताप के संबंध के लेके समाज के ताना वोकरा मन मे बदला लेबे के आग लगा देले रहे। मनोज आ माधबी ई जाने की हम आ माधबी दुनू दू जात के छी। अइसे बिआह मे कोनो बाधा नऽ होयत। एगो रात मे माधबी अपना माय के अपन आ मनोज के प्रेम संबंध के बारे मे बतैलक आ कहलक की हम दूनू गोरे विआह करे चाहैत छी। मृनालिनी अपन माथा पकर लेलक। मृनालिनी कहलक की हम तोरा बाबू जी से विचार कऽ के बतैयबौउ।

राते मे सुतैत बेर मृनालिनी राजेश्वर प्रताप के माधबी के बारे मे बतैलक। राजेश्वर प्रताप कहलन - ई विआह नऽ हो सकै छैय। माधबी के माय रनियां नऽ हैय परंच हम बाप छी आ मनोजो के बाप हम छियै। भले मृनालिनी , तोहर जनमल मनोज नऽ हौअ। हम मनोज के जैविक बाप छियै। माने की माधबी आ मनोज के बाप हम छियै। मतलब मनोज माधबी के जैविक भाई हैय। माने मनोज माधबी भाई -बहिन हैय। माधबी आ मनोज मे बिआह नऽ हो सकै छैय। हिन्दू धर्म मे ई वर्जित हैय। दुनु दू जात के होके भी विआह नऽ हो सकै हैय। ई तऽ बरका धरम संकट हैय।

ई सभ बात राते मे मृनालिनी माधबी के कोठरी मे आके बतैलक आ कहलक माधबी अइ अइ धरम संकट से तू ही मुक्त करा सकै छे। मृनालिनी अपना कोठरी मे सुते चल गेल। माधबी बहुत देर तक जग ले सोचैत रहे की हमरे बाबू जी के जनमल मनोज हैय। वोऽ हमर जैविक भाई हैय। हमरा दूनू मे बिआह नऽ हो सकै हैय। हम दुनू भाई-बहन छी। सबेरे मनोज भैया से मिलब। ई सोचते सोचते निन पर गेल।

मनोज अपना माय रनियां के अपना आ माधबी के प्रेम के बारे मे बतैलक आ बिआह करे के बारे मे कहलक। रनियां कहलक ~ मनोज तोहर आ माधबी के विआह नऽ हो सकै छैय। माधबी हमर जनमल नऽ हैय परंच माधबी के बाबू जीयो

तोहर बाबू जी हौअ। बौआ मनोज ई एगो धरम संकट हैय। आइ तोरे मुक्त करे के हौआ।

मनोज कहलक माय ई बात हम जनैय छी के हम माधबी के जैविक भाई छियै। परंच हमरा मन मे समाज के उपेक्षा आ ताना रखैल पुत्र कहला से हमरा मन मे बदला लेबे के भाव आ गेल रहल हैय। समाज हमरा आ माधबी के भाइ-बहिन नऽ मानै हइ। हमरा बड़ा मानसिक पीड़ा भेल हैय। आब इतना तऽ हम जनैय छी की अगरा जात के नारी दलित जात के रखैल के प्रेमिका कहै हैय। आ दलित जात के नारी अगरा जात के प्रेमिका के रखैल कहे हैय। ई मापदंड समाज मे ब्यापत हैय। जखनी की लिव इन रिलेशनशिप अतीत काल से चल रहल हैय। वर्तमान समय मे एकर चलन आऊर बढ गेल हैय। परंच तोरा कहला पर हमरा मन के बदला के भाव मिट गेल। हमरा मन से अगरा आ दलित के भाव मिट गेल। आबि हमरा मन मे भाई-बहन के प्रेम जाग गेल। हम माधबी के जैविक भाई छियै आ माधबी हमर बहिन।

सबरे कौआ के कांव - कांव से माधबी के निन टुटल। मनोज के रनियां उठैलक। सबेरे छह बजे टहलैत बेर जब मनोज आ माधबी मिलल तऽ भाई - बहन के रूप मे मिलल। माधबी कहलक ~ भैया मनोज। मनोहर कहलक ~ बहिन माधबी।

दुनू भाई - बहिन आपस मे गला मिल गेल। आइ राजेश्वर प्रताप, मृनालिनी, माधबी, रनियां आ मनोज धरम संकट से मुक्त हो गेल।

▪▪▪

| प्रेम मे धोखा |

आइ प्रो. श्याम मोहन के खून बोकरैइत परान पखेरू उड़ गेल । वोऽ हमरे मुहल्ला मे मकान बना के रहैत रहलन । हम अतीत मे खो गेली । जब हम खेमका कालेज मे पढैत रही। हम साइंस के विद्यार्थी रही । वोऽ समाजशास्त्र के प्रोफेसर रहलन । वोऽ हंसमुख, मिलनसार आ लोकप्रिय रहत । विद्यार्थी सभ हुनकर पढ़ाई शैली से संतुस्ट आ खुश रहे । हम हुनका कालेज के कामन रुम मे बैडमिंटन खेलैइत देखी । कहियो एकल तऽ कहियो डबल बैडमिंटन खेलैइत । परंच हुनकर प्रतिस्पर्धी खिलाड़ी होइत रहे वरून कुमार जे खेमके कालेज के एगो प्रोफेसर के बेटा रहे । वरून कुमार आ प्रोफेसर श्याम मोहन के दोस्ताना संबंध रहे। कारन की एक तुरिया रहे ।

जब मैच होय त प्रो श्याम मोहन अपन सुन्नर पत्नी सोनिया के मैच देखाबे के लेल अवश्ये लाबे। सोनिया अपना संग अपन साल भर के रुपवान बेटा, एगो पानी के बोतल आ चाय से भरल थरमस भी लाबे। मैच के दौरान जब प्रो साहेब के कंठ सुखे तऽ सोनिया से लेके पानी पियैथ आ थकान महसूस होय तऽ चाय पियैथ । परंच वोऽ वरून के अवश्ये पानी आ चाय पिआबथि ।

मैच मे प्रो. साहेब आ वरून के प्रतिस्पर्धा देखैइत बने । शारीरिक कसाबट मे वरून प्रोफेसर साहब से बीस रहे । जेकर फायदा अंततः बरून के मिल ही जाय। प्रोफेसर साहब बरुन से मैच हार जाय । माने की पांच मैच होय तऽ दू मैच प्रोफेसर साहब जीते तऽ तीन मैच बरून जीत जाय । अइ मैच के असर तऽ प्रोफेसर साहब आ बरुन पर तऽ नऽ परे । परंच असर प्रोफेसर साहब के पत्नी सोनिया पर अवश्ये पड़े । सोनिया बरून के दिसन आकर्सित होय लागल । धीरे धीरे सोनिया प्रो. श्याम मोहन से कटे लागल ।

जब प्रो श्याम मोहन ड्यूटी पर कालेज जाय त वरुन प्रोफेसर साहब के आवास पर आ जाय । बरून आ सोनिया प्यार के बात करे आ एक दिन प्यार करैत करैत दन्

के देह एक हो गेल। माने की सोनिया आ बरुन मे बासना के प्यार रहे। हालांकि बरून के बिआह भे गेल रहे।

प्रोफेसर साहब दुनू के रासलीला एक दिन देख लेलन। प्रोफेसर साहब सोनिया के खूब समझैलन। अहां ई सभ कियैक करै छी। अहां एगो बेटा के माय भी छी। परंच सोनिया कहलक की हम बरुन से प्यार करैइ छी। हम बरून के संगे रहब। प्रोफेसर साहब कहलन ~ हमरा घर से निकल जाउ। परंच सोनिया कहलक ~ अहीं घर से निकल जाउ। ई मकान तऽ हमर हैय। हमरा नाम से जमीन आ घर हैय। अपना बेटा के भी ले जाउ।

प्रोफेसर साहब तऽ सोनिया से सच्चा प्रेम करैत रहे। आंखि से लोर चुअबैत बेटा प्रियांशु के लेइत घर से निकल गेलन। वोऽ आ शहर मे अपना घर से दूर भाड़ा पर डेरा लेके रहे लगनन। बाद मे उहे महल्ला मे जमीन खरीद के मकान बना लेलन। बेटा के भी पढाबे लगनन। अपने पत्नी के देल प्रेम मे धोखा आ पत्नी के प्रेम के बियोग मे शराब आ सिगरेट पिये लगला। बेटा इंजिनियरिंग पढ़ैत रहे। दूर्दिन एहन भे गेल की इंजीनियरिंग कॉलेज से आवास अबैत काल बाढ़ मे उफनैत नदी मे नावि उलैटि गेला से डुब के मऽर गेल। प्रोफेसर साहब प्रेम मे धोखा आ ई आघात नहि सहि सकिला। वोऽ खाट पकड़ि लेला। पड़ोसी सभ डागडर से देखैलन। पर वोऽ खुन बोकरैत दुनिया से विदा भे गेलन। सोनिया के अनुकंपा पर कालेज मे किरानी के नौकरी मिल गेल। सारा विरासत के मलकाइन बन गेल। अइला की प्रो श्याम मोहन पत्नी के देल प्रेम मे धोखा के बादो अपन प्रेम के कारण तलाक नऽ देले रहथि।

बरुन आइ सोनिया के छोड़ के अपना परिवार संग जीवन जी रहल हैय। सोनिया अकेले जीवन बिता रहल हैय। अपना कोठरी मे प्रो. श्याम मोहन के फोटो टंगलै हैय। जै पर सुखल माला टांगल हैय। ▪▪▪

| राजनीति आ अपराध |

माया देबी एगो दबंग नारी रहे। ई दबंगई वोकरा मे छोट-मोट झगरा मे बलुआरी से आयल। देखहु मे भारी भरकम रहे। मोट कद - काठी के रहे। मरदाबा लेखा बोल - चाल भी रहे।

जहां देखु वोकरा कोनो नऽ बात मे जोर-जोर से बोलैत रहे। चाहे ऊ सरकारी रासन के दोकान रहे की सरकारी इस्कूल। रासन के दोकानदार के घटतौली आ फरजी रासनकार्ड पर नजर रखे। अइ बदला मे दोकानदार वोकरा मंगनी मे चामल-गहुम दे देबे। तहिना इस्कूल मे के मध्यान्ह भोजन के रूप मे गहुम बंटवारा के घटतौली आ छात्र के संख्या पर नजर रखे। तैय डर से हेडमास्टर भी गहूम दे देबे। पहिले आइ लेखा इस्कूल मे मध्याह्न भोजन नऽ बने।

माया देवी पंचायत के राजनीति मे भी भाग लेबे। परंच कहियो वार्ड मेम्बर भी नऽ बन पायल। पंचायत के लोग सभ के सहायता के बहन्ने प्रखंड मुख्यालय भी जाय लागल। छूट-भैया नेता के सम्पर्क मे अयला के बाद जिला के राजनीति से भी जुड़ गेल। नेता सभ के हवस के शिकार भेल। बाद मे नेता सभ के हबस पूरा करे मे भी सहायक बनल। माने की लरकीयो सभ के सप्लाई करे लागल। इहां तक की अपन संबंधीयो लरकी सभ के फुसला के कमाई आ सरकारी नौकरी मिले के बहन्ने नेतवन सभ के हबस के लेल भेजे लागल। कोई कोई लोग तऽ कहे की माया देबी केते गरीब आ असहाय के बेटी के बेच देलक। केते लरकी तऽ लौट के अपन घर कहियो नऽ आयल।

अइ सभ काम के लेल माया देवी अपन गांव मे नऽ रह के पुपरी शहर मे भाड़ा पर डेरा लेके रहे लागल आ सफेदपोश बनके वेश्यावृत्ति कराबे लागल। अइ काम मे पुपरी से पटना तक दौड़ा करे।

माया देवी कहे की राजनीति मे यौनशोषण आ सफेदपोश बेश्यावृति आवश्यक हो जाइ छै। अइ के बिना कोई काम नऽ हो सकै छई। अइ मे चोली दामन के संबंध हए। नेताइन पर तऽ नेता के गिद्ध दृष्टि रहै हए।

केना नऽ केना माया देवी के सम्पर्क अपराधी सभ से भी हो गेल। लूट पाट के बंदरबांट मे बेइमान साबित भेल आ गोली से मारल गेल। कहल गेल हए नऽ गलतो काम मे इमानदारी आवश्यक होइ छई। खास कऽ के अपराध के दुनिया मे इमानदारी आउर आवश्यक होइ छइ। नऽ होयला पर आपसी गोलीबारी होइ छइ माने गैंगवार होइ छई। अपराध के दुनिया मे बेइमान के नऽ छोड़ल जाय छई आ वोकर सजा मौत होइ छई। कमोवेश वोहे हाल राजनितियो मे होइ छई। राजनीति आ अपराध माया देवी नेताइन के प्रान ले लेलक।

▪▪▪

| काम से राम के ओर |

पहिले स्कूल दस बजे सुबह सं चार बजे अपराह्न तक चले। हम एगो मिडिल स्कूल मे शिक्षक रही। हम आ एगो आऊर शिक्षक वीरेंद्र बाबू समय सं पहिले ही साढ़े नौ बजे तक स्कूल मे पहुंच जाइ। कुछ शिक्षक दस बजे तक आऊर बाकी साढ़े दस बजे तक आ जाय। कुल सात शिक्षक रही। विद्यार्थी सभ साढ़े दस बजे तक पहुंचे। सफाई प्रार्थना के बाद एगारह बजे सं क्लास लगे।

अइ बीच मे हम आ वीरेंद्र बाबू आपस मे बात करी। अहिना एक दिन वीरेंद्र बाबू एगो सच घटना सुनैलन। वीरेंद्र बाबू कहलन-दयानंद बाबू। हम जब सातवां क्लास मे पढैत रहली तऽ हमरा गांव के स्थान मे के एगो बाबा जी, जे स्थान मे रसोइया रहे कहलन ~ वीरेन्दर चला तोरा सीतामढ़ी घुमा देव छी। जानकी स्थान देखा देव छी। त हम कह ली चलू। साइकिल सं चल देली। बाबा जी साइकिल हांके आ हम पिछा कैरियर पर बैठ गेली। केकरो कोई शक आ डर के कोनो बात नऽ रहे। अइला की बाबा जी स्थान मे बहुत दिन सं रहे आ मिलनसार रहे।

हं ! तऽ जानकी स्थान मे जानकी जी के दर्शन कैली। फेर साइकिल सं रीगा बाला रोड मे चल अइली। उहां बाबा जी साइकिल रोकलक। हमहुं साइकिल पर सं उतर गेली। हम साइकिल लेके खड़ा रही। बाबा जी रोड किनारे के चांपाकल पर गेलन आ कुल्ला कैलन आ पानी सं चनन के धो लेलन। पानी पीलन। हम कहली ~ बाबा चननो धोआ गेलो। बाबा जी कहलन ~ धुत्त बुरबक।

बाबा जी फेर साइकिल पर बैक खींच के रिंग बांध होइत एगो छोटका सन टोला पर अयलन। उहां छोटका -छोटका फुस के घर रहे। वोही के दुआर पर कहीं लैइकी तऽ कहौं आऊरत ठड़ा रहे। कोनो कोनो लैइकी छोट छोट ड्रेस पहिनले रहे। आधा छाती दिखाइत रहे। कोई कोई सिगरेट भी पियत रहे आ खराब इशारा भी करे।

पक्का घर भी रहे। कोनो कोनो घर से हरमुनिया आ तबला के आवाज आबइ। घुंघरू के भी आवाज आवइ आ महिला के गीत गावइ के आवाज आवइ। हमरा उहां केना दोन लागे।

बाबा जी कहलन ~ बीरेन्द्र इहां कुर्सी पर बैठल रहा। हम कनिका देर मे अबै छी। हम कहली ठीक हय। जल्दीये आउ। हमरा केनादन लगैय।

बाबा जी एगो लैइकी संग फूस घर मे चल गेल। हम बाहर कुर्सी पर बैठल रही। हमरे तुरिया के एगो लैइकी कहलक ~ ऐ ! तु कैला बैठल छा। चला, हमरा जौरे भीतर। हम लजा गेली। वोही समय एगो औरत जे खड़ा रहे बोललइ ~ अरे माधुरी, ई अखनी बच्चा हैय। ई खेल बेल नऽ जानै हैय। देखै नऽ छही। केना सिकुडल बैठल हैय आ हमरा से पुछलक ~ ऐअ, तू इहां केना आ गेला हैय, बाबा जी के साथ ? हम कहली हमरे गांव के स्थान मे के बाबा जी हैय। तऽ उ कहलक ~बाबाजी तऽ महीना मे दू बार तऽ अबस्से अबैय। हमरा सभ के इहां तऽ चोर-डाकू, संत - सिपाही सभ अबैय हैय। हम सभ सभके देहके सुख दैइ छियै। सभ अपन देहके भुख के मिटाबे अबैय। ओइमे बिआहल आ न बिआहल सभ हैय। हम सभ वेश्या छी। ई वेश्या टोला हैय।

बाबा जी आधा घंटा के बाद घर मे से निकललन। फेर चापाकल पर जाके मुंह हाथ धोयलन। हमरा आके कहलन आब घर चला। साइकिल से हम दूनू गोरे रिंग बांध होके फेर जानकी स्थान तर अइली। एगो जलपान के दूकान मे दूनू गोरे कचौड़ी जलेबी खैली। साइकिल से घरे के लेल चलली। रस्ता मे बाबा जी कहलन~ हमरा ई मजबूरी हैय। मानसिक भूख के लेल तऽ पूजा पाठ करै छी। परंच शारीरिक भूख के लेल टोला पर जाय के परे हैय। अइ टोला के रेडलाइट एरिया कहै छैय। हं बाबा ! एगो औरत कहैत रहल हैय कि हम सभ वेश्या छी। ई वेश्या टोला हैय। बाबा जी कहलन ~ हं ! वेश्या टोला के रेडलाइट एरिया कहै हैय। ई सभ केकरो नऽ कहिया।

~ हं बाबा ! हम केकरो सऽ नऽ कहब।

आब ऊ बाबा जी अइ दुनिया मे नऽ हैय। हमरो आचार्य रजनीश के लिखल संभोग से समाधि आ खजूराहो के मुर्ति के मर्म समझे मे आवे लागल। दशम क्लास मे पढायल शिक्षक रणजीत बाबू के याद आबे लागल की कला आऊर जीवन के एगो पाठ मे खजुराहो के बारे मे बतबैत कहले रहथिन की केना एगो माय-बाप के अपन बेटी आ वोकर प्रेमी से भेंट खजुराहो मे नग्न मूर्ति के देखैत भे गेल रहै। अपना मे शर्मिंदा भे गेल रहै। आखिर सत्य तऽ सत्य होय छैय। संभोग से समाधि के ओर अर्थात काम से राम के ओर।

▪▪▪

| पारो |

रामू छोट सन कसबा मे एगो जलपान के दूकान चलबैत रहय । वोऽ अपन घरवाली लाडो संग दूकान के पीछे वाला घर मे रहय । सुबह सात बजे से दस बजे आ दू पहर तीन बजे से सात बजे साम तक मुरही, घुघनी आ कचरी -चप बेचे से फूर्सत नऽ रहय । वोकर घुघनी आ कचरी चप बड़ा स्वादिष्ट रहय । लोग मल्हान के पता के दोना मे सुसुआ सुसुआ के खाय । माने करूगर आ तपत- तपत घुघनी आ कचरी चप । लोग घर सनेश के रूप मे मुरही कचरी चप खरीद के ले जाय ।

रामू के एगो बेटा भी तीन साल के रहे । वोकर घरवाली लाडो के फेर से पांव भारी भे गेल । जौं सात महिना बीत गेल तऽ लाडो के काज करे मे दिक्कत होय लागल । लाडो अप्पन घरबाला रामू से बोलल ~सुनैय छी।

रामू ~ बाजू नऽ।

लाडो ~ आबि हमरा से काज नऽ होयत । हमरा उठे -बैठे मे बड़ा दिक्कत होइअ ।

रामू ~ तऽ की करू । दूकान केना बंद कर दू । जीये के तऽ इहे आसरा हय । दूकानो खूब चल रहल हय ।

लाडो ~ एगो बात करू नऽ !

रामू ~ की ?

लाडो ~ हमर छोटकी बहिन पारो के बुला लूं नऽ।

रामू ~ बात तऽ ठीके कहय छी ।

लाडो ~ काल्हिय चल जाउ । काल्हि दूकान बंद रहतैय ।

रामू ~ अच्छे !

गाहक ~ की हो रामू ! आइ दूकान काहे बंद कैला छा हो ।

लाडो ~ आइ नऽ छथिन । वोऽ हमर नहिरा गेल छथिन ।

गाहक ~ की बात ?

लाडो ~ हमरा देखैय नऽ छथिन। हमरा मदत के लेल हमरा छोटकी बहिन के बुलावे ला गेल छथिन।

गाहक ~ अच्छे। काल्हिये से दूकान चलतैय नऽ ?

लाडो ~ हं ! हं !

रामू सबेरे दस बजे ससुरार पंहुच गेल। रामू ससुर -सास के गोर छू के परनाम कैलक। छोटकी सारि पारो अपन बहनोई रामू के गोर छू के परनाम कैलक आ गोर धोय ला एक लोटा पानी देलक। रामू अपन गोर धोयलक। ताले पारो अंखरा चौकी पर जाजिम बिछा देलक। रामू वोइ पर बैठ गेलक।

ससुर बुझावन बाजल ~ मेहमान ! लाडो के हाल चाल बताउ ?

रामू बाजल ~ हम लाडो के मदत के लेल पारो के बुलाबे आयल छी।

बुझावन बाजल ~ की बात ?

रामू ~ लाडो के सातम महीना चल रहल हय। घर आ दूकान के काज करय मे दिक्कत हो रहल हय।

रामू के सास बाजल ~ हं ! पारो के ले जाउ। ई मदत करतैय।

बुझावन बाजल ~ अच्छा! पारो अपना बहिन तर जतय।

रामू बाजल ~ हम आइए लौट जायब।

बुझावन बाजल ~ हं ! पहिले भोजन तऽ कऽ लू।

पारो ~ चलू जीजा, भोजन लगा देले छी।

रामू बाजल ~ चलू !

रामू भोजन कैलक आ तनिका देर लोट पोट कऽ के पारो के लेके घरे चल देलक। सांझ छौअ बजे घरे पहुंच गेल। पारो अपन बड बहिन लाडो से गला लिपट गेल।

पारो अठ्ठारह बरिस के गोर युवती रहय। सुनरता वोकरा अंग- अंग से टपकैत रहय। लाडो अपना काज मे मगन रहय। आबि लाडो राहत के सांस लैत रहय। रामूओ काज मे ब्यस्त रहय। दूकानो खूब चलय। गाहको पारो के देखे के लेल ललायित रहय। परंच सभ देखिय भर तक सीमित रहय।

अइ बीच होरी बीत गेल। लाडो एगो सुन्नर बेटी के जनम देलक। पारो अपन बहिन आ बहिंदी के सेवा सुसुर्सा मे लागल रहय। एनी पारो मे शारीरिक परिवर्तन होय लागल। वोकर पेट मे उभार देखाय लागल। कानाफूसी होय लागल। लाडो पुछैय तऽ पारो कोनो जबाब नऽ देय। बात उड़ैत उड़ैत पारो के बाप बुझावन तक पहुंच गेल। बुझावन अपन बेटी लाडो इहां भागल - भागल आयल।

बुझावन बाजल ~ मेहमान ! ई की सुनय छीयै ?
रामू बाजल ~ हमरो आश्चर्य लगैय हय।
लाडो बाजल ~ हमरा कुच्छो नऽ बुझाइ हय। पारो कुच्छो नऽ बोलय हय। खाली गुमकी मारले हय।
बुझावन बाजल ~ मेहमान। हम अहां पर पंचायती बैठायब। अहां पारो के बुला के लयली आ अहां सुरक्षा नऽ कै पैली।हम आबि मुंह केना देखायब आ पारो से बिआह के करतैय ?

बात हवा मे फैइल गेल। काल्हिये भोरे पंचैती बैठल। सरपंच बाजल ~ पारो बेटी, डरा नऽ। साफ - साफ बोला, तोरा साथ ई काम के कैलन हय ?

पारो निचा मुंहे मुंह कैले रहे। कुच्छो नऽ बोले। तनिके देर के बाद पारो बाजल ~ की कहु सरपंच काका, ई जीजा के काम हय।

रामू बाजल ~ पारो ई तू कथी बोलय छाऽ। कैला हमरा बदनाम करैय छाऽ।

पारो बाजल ~ जीजा हम झूठ नऽ बोलय छी। अहूं झूठ नऽ बोलू। होरी के रात अहां हमर सलवार के छोड़ी नऽ खोल देले रही। हम होश मे तऽ रही लेकिन विरोध करैय के ताकत नऽ रहय। अहां होरी के बहाने भांगवाला पेड़ा खिला देले रही। बहिनो के खिला देले रही। अपनो खैलै रही। हमरा तनी ज्यादा खिला देले रही।

रामू कुच्छो नऽ बाजल। अपन मुंह निचा कऽ लेलक।

सरपंच बाजल ~ एकर एकेटा इंसाफ हय। रामू के पारो से विआह करे के पड़तैय। सारि से बहनोई के बिआह करे पर सामाजिक बंधन नऽ हय। ई अच्छा भी होतैय।

लाडो बाजल - जौ हमर सैंऽ ई गलती कऽ लेलन हय तऽ हिनका पारो से बिआह करे के पड़तैय। की करब विधना के इहे मंजूर हय तो हमरो मंजूर हय। हम दूनू सौतिन नऽ,बहिने लेखा रहब।

रामू बाजल ~ सरपंच काका के इंसाफ हमरा मंजूर हय।
बुझावन बाजल ~ सरपंच साहब के फैसला हमरा मंजूर हय।
सरपंच बाजल - तऽ चलू गांव के महादेव स्थान मे।
सभ लोग महादेव स्थान मे गेलन।

अपन सैंऽ से लाडो बाजल ~ लू सेनूर आ महादेव बाबा के साक्षी मानैत पारो के मांग भर दिऔ।

रामू महादेव बाबा के साक्षी मानैत पारो के मांग मे सेनूर भर देलक। हर हर महादेव के आवाज से महादेव स्थान गूंजायमान हो गेल। नौ महीना पूर होइ पर पारो एगो सुन्नर लड़िका के जनम देलक। आइ दूनू पत्नी लाडो आ पारो के संगे रामू खुश आ खुशहाल हय।

▪▪▪

| गौरी |

पंडित महादेव मिश्र बीस बीघा जमीन के जोतिनिया रहथि। जमींदारे लेखा ठाठ बात। कनाती वाला हबेली आ छतदार दरबाजा । नौकर - चाकर, दू जोड़ा बैल, हरबाह,जन,एगो भैस आ ऐगो गाय, चरबाह। पंडित जी पूजा नऽ कराबथि वरन् पूजा करैत माने की यजमानी नऽ।

सुबह पूजा पाठ के बाद दरबज्जा पर बैठकी। जहांऽ मुंहलगा सभ के संगे चाय -पान आ तशवाही। एकर ई नऽ माने की खेती पर ध्यान नऽ, से बात नऽ। खेती के समय खेत के आड़ी पर बैठ के जन-मजदूर पर ध्यान। खेती सं दू सौ मन धान, एक सौ मन गेहुम आ भरपूर तेलहन - दलहन हो जाइन। गांव के राजनीति करे मे माहिर रहतन। प्रतिष्ठा खूब रहैन।

पंडित जी के पत्नी सती देवी रहिन। सति देवी खुब सुन्नर रहय। मृदुभाषिणी आ वाक्पटुनी सेहो रहय तऽ पंडित जीयो कम नऽ। सामान्य कद के गोर शरीर, बड़ बड़ आंख आ रोबदार मोछ। माथा पर त्रिपुंड। परिवार खुश हाल।

परंतु बिधना के बिधान। सती देवी एगो सुन्नर लड़िका के जनम देलक। परंतु छठियार के बिहाने सती देवी परलोक सिधार गेल। पंडित जी के विधवा बुढ़ही माय वोइ लरिका पाललक। पंडित जी दुखी रहे लगलन। पंडित जी आबि भगवान शंकर के आउर पूजा करे लगलन। अपने हाथे माटी के महादेव बनाबथि, बेलपत्र पर राम नाम लिखैत। वोइ बेलपत्र आ कनेर -धथुर फूल से पूजा करैथ।

पंडित जी आबि पैदल कांबर लऽ के बाबा बैद्यनाथ धाम जाय के बिचार कैलन आ अपन मुंहलगुआ सभ के बतैलन। बिचार भेल की अइ माघ श्री पंचमी के बाबा बैद्यनाथ पर जल चढायल जाय। सभ तैयारी भेल नौकर - चाकर संगे रसोइया तक कांवर लेके जायत। माने की खाय पिये के सभ समान भरिया लेके चलत। खाली

जलावन ठहराव स्थान पर खरीदल जायत।

पंडित जी अपन चचेरा ससुर के बाबा धाम चले के संवाद पठैलन। चचेरा ससुर गिरीश पाठक से खूब पटैन। पहिलोही कहीं तीर्थाटन मे जायत रहलन तऽ पाठक जीयो संगे रहैन। पाठक जी बाबा धाम जाय के लेल पंडित जी के घर कैलाशपुर अइलन। परंच संग मे रहैन पच्चीस साल के युवती बेटी गौरी। पाठक जी सोचलैन की अइ साल गौरी के हाथ पियर कऽ देबय। अइसे पहिले गौरी के बाबा बैद्यनाथ के दर्शन करा दैबक चाही।

गौरी कालीदास स्मारक महाविद्यालय, चंदौना से बीए, समाजशास्त्र कैले रहे। गौरी गौरांगी, कोमलांगी आ व्यवहार कुशल नवयौवना रहय। पंडित महादेव मिश्र गौरी के बाबा बैद्यनाथ धाम दर्शन कराबे के विचार से प्रसन्न भेलन। पंडित महादेव मिश्र आ गौरी के यदा कदा ओझा- सारि बाला मनोविनोदो भेल रहय। अइ भेट से दूनू गोरे हर्षितो रहय।

बाबा धाम यात्रा शुरू भेल। सभ पियर -पियर वस्त्र मे। सभसे आकर्षक पंडित महादेव मिश्र आ गौरी पाठक लागे। जेना संयासी –संयासिन। सभसे पहिले कुल देवता, गांव देवता आ महादेव मठ मे पूजा भेल आ बाबा धाम के लेल प्रस्थान। हर हर महादेव के स्वर से धरती आकाश गुंजायमान हो गेल। सभ ठहराव स्थान पर शिव पुराण के चर्चा पंडित महादेव मिश्र करैथ। सुनिहार केवल आ केवल गौरी पाठक। आउर लोग खाना -पीना के व्यवस्था मे। मुख्य व्यवस्थापक रहथि -गिरीश पाठक।

शिव पुराण के कथा मे शिव-सती के प्रेम, सती के हवन कुंड मे प्रान त्याग आ गौरी के शिव से पुनर्विवाह। प्रेम कथा से दूनू गोरे के प्रभावित होय लागल। धीरे -धीरे पंडित जी आ गौरी मे प्रेम के प्रस्फुटन होय लागल। प्रेम के रंग मे रंगाय लागल। अन्य लोग अइ प्रेम से अंजान रहय।

आबि तऽ गौरी, पंडित जी के पैरो दबाबे लागल। परंतु बाबा बैद्यनाथ धाम दर्शन आ जल चढाबे के ध्यान रहय। पंडित जी आ गौरी साकंक्ष रहतन। यात्रा समाप्ति भेल। ठीक माघ श्रीपंचमी के बाबा बैद्यनाथ के दर्शन भेल आ पंडित जी आ गौरी लिंगाकार बाबा बैद्यनाथ पर जल चढैलन। सभ लोग जल चढैलन।

पंडित महादेव मिश्र अप्पन कुल पुरोहित पंडा के यहां डेरा डाललन आ गिरीश पाठक से कहलन ~ दू सप्ताह बाबा धाम मे रूकब। दू गो कोठरी लेल गेल। भोजन बनाबे के लेल अलग से। एगो कोठरी मे पंडित जी, गौरी आ गिरीश पाठक। दोसर रुम मे बांकी लोग। परंच गिरीश पाठक के ज्यादा समय भोजन आदि के व्यवस्था मे बीते। ज्यादातर दोसर कोठरी मे रहथि। पंडित जी आ गौरी के एकर लाभ मिलैत रहय। दूनू गोरे के प्रेम परबान चढ़ैत रहय। एक तरह से शिव आ गौरी के कथा दुहराबे के विचार करे लगलन। एक दिन पंडित महादेव मिश्र बजलन ~ गौरी। बाबा धामे मे दूनू गोरे के बिआह कऽ लेबे के चाही। एहन पवित्र स्थान आ समय केन्नऽ पायब।

गौरी बाजल ~ हं ! मिसर जी। बात तऽ पवित्र आ नेक हय। हमहूं आबि अहां बिना न जीव सकैय छी। अहां से हमरा पवित्र प्रेम हो गेल हय।

पंडित महादेव मिश्र बजलन ~ बिधाता के इहे मंजूर बुझाय हय। भगवान भोलेनाथ के जीवन घटना नाहित हमरा संगे घट रहल हय।

गौरी बाजल ~ बिधाता जे करय छथिन, अच्छे करय छथिन, परंतु बाबू जी से पूछ लिये के चाही।

पंडित महादेव मिश्र बजलन ~ हम गिरीश बाबू से पूछ लेबैय। हमरा विश्वास हय जे वोऽ मान लेतन।

गौरी बाजल ~ जी ! हमरो विश्वास हय जे बाबू जी मान लेथिन।

दोसर दिन रात मे जब गिरीश बाबू सूते ला अइलन तऽ पंडित जी बजलन ~ गिरीश बाबू एगो महत्वपूर्ण बात करे के चाही छी।

गिरीश पाठक बजलन ~ मिसर जी, बाजू !

पंडित जी ~ हम अहां सं गौरी के हाथ मांगै छी। हमरा विश्वास हय जे हमरा गौरी के हाथ देब।

गिरीश पाठक ~अचानक ई मांग सुनके सन्न रह गेलन आ सोचे लगलन।

गौरी बाजल ~ हं ! बाबू जी। मिसर जी ठीके मंगलैन हय। हमहूं मिसर जी सं प्रेम हो गेल हय। हमरा वोऽ साक्षात महादेव लगैत छथि। हम हुनकर गौरी। हमरो विश्वास हय जे अहां ओझा जी के मांग मान लेबैय। गिरीश पाठक बजलन ~ ठीक हय। काल्हि रात मे बतायब।

गिरीश बाबू मन मे गुनधुन करय लगला। सांझ तक निष्कर्ष निकालला की पहुना पंडित महादेव मिश्र आ गौरी के बिआह सर्वथा उचित होयत। रात मे जब सुते गिरीश बाबू अइलन तऽ पंडित जी पुछलैन ~ गिरीश बाबू, की बिचार कैलियन ?

गिरीश बाबू बजलन ~ जे अहां आ गौरी के विचार हय सेहे विचार हमरो हय। ई उचित आ मंगल विचार हय। काल्हिये बाबा के मंदिर मे शुभ पानिग्रहन सम्पन्न कैल जाय।

आइ सबेरे दोपहर सं पहिले गिरीश बाबू, गौरी के हाथ पंडित महादेव मिश्र के हाथ मे सौंप देलन। बाबा भोलेनाथ के साक्षी मानैत पंडित महादेव मिश्र गौरी के मांग मे सेनूर भर देलन। विआह बाबा धाम के पंडा करैलन। आइ गौरी महादेव के अर्धांगिनी बन गेल। सभ खुश रहे। बाबा के जयकारा लागल।

एगो जीप आ एगो मिनी ट्रस्ट भाड़ा भेल। जीप सं दुल्हिन गौरी - दुल्हा महादेव आ ट्रक सं गिरीश बाबू आ अन्य लोग घरे कैलाशपुर अइलन। पंडित महादेव मिश्र के माय दुल्हिन गौरी आ दुल्हा महादेव के आरती उतारलैन आ गृह प्रवेश करैलन।

तनिके दिना बाद गौरी एगो लड़िका के जनम देलक। सती के जनमल लरिकको के गोरी खूब माने। दूनू लरिका जवान भेल। शादी विआह भेल। गौरी आ पंडित महादेव मिश्र आइ दादी -दादा बन गेलन। परंच गौरी पाठक आ पंडित महादेव मिश्र के प्रेम आइयो दिगार मे चर्चित हय।

▪▪▪

| कमीना विद्वान |

कुमार भरोस प्रसिद्ध मैथिली साहित्यकार रहलन । वो एके संगे कवि, कथाकार, उपन्यासकार आ आलोचक रहलन । सोना मे सुगंध ई की वोऽ मैथिली विश्वविद्यालय मे मैथिली विभाग के विभागाध्यक्षो रहलन । हुनकर पढाबे के शैली पर विद्यार्थी दीवाना रहय । दोसरो विभाग के विद्यार्थी हुनकर क्लास मे बैठ जाय । खचाखच क्लास भरला के बाद क्लास के खिड़की आ गेट पर खड़ा होके सुनय लागे । परंतु कोई शोर गुल नऽ । केवल कुमार भरोस के आवाज । लेक्चरर के समय पाठ के अनूकूल भाव भंगिमा मन मोहक ।

कुमार भरोस के रहन सहन मे रइसपन टपके । गर्मी मे सफेद कुर्ता -पैजामा तऽ कहियो सफेद धोती कुर्ता । जाड़ा मे कोट-पैंट आ मफलर । मुंह मे पान आ आंख पर गोग्लस। सायं मे मदिरा । कोनो कंजूसी नऽ । रिक्शावालो हुनकर दिवाना । रिक्शावाला के नज़र जौं प्रोफेसर साहब पर परल की दोसर सवारी के लेवे से मनाही । कारन प्रोफेसर साहब कहियो भाड़ा गिनके नऽ देलन । जेबी से जे निकल जाय । जौं जेब खाली तैइयो रिक्शावाला के मुंह नऽ म्लान ।

कुमार भरोस साहित्य के संगे नारी सौंदर्य के दिवाना रहतन । वोऽ हमेशा सुंदर नारी से घिरल रहतन । चाहे वोऽ प्राध्यापिका रहे वा छात्रा । हुनका कोनो कोनो से वासनात्मक संबंधो रहय । पीएचडी करेवाली एगो छात्रा तऽ शिकायतो करैले रहे । परंतु हिनकर विद्वता आ उच्च संपर्क के आगे शिकायत निरस्त हो गेल ।

प्रोफेसर कुमार के पत्नी रहे कामिनी । उच्च कुल के बेटी । बाबू ब्लाक के बड़ा बाबू । कामिनी स्नातक रहे । खुब सुन्नर । साक्षात कामिनी । परंतु कामिनी सेयो बीस रहे वोकर छोट बहिन काम्या । काम्या एम ए मैथिली मे कुमार भरोस के छात्रा रहे । सौंदर्य के भमरा से सौंदर्य के फूल कहुं बच के रह सकैय हय । कुमार से काम्या बच नऽ पायल। भ्रवंरा जेते फूल के चाहैत हय, वोतवे फूल भ्रवंरा के चाहैत हय । प्रेमी लुटे

चाहय हय तऽ प्रेमिका लुटाय। ई दूनू के परस्पर विरोधी आकर्षक संबंध हय। रहल कामिनी के विरोध के बात तऽ उच्च कुल आ कुमार भरोस के विद्वता बाधक। समाज मे विद्वान के गलत काज के विरोध करे मे समाज असमर्थ हो जाइ हय। छोड़ूं वोऽ विद्वान छथिन, हुनका लेल एकटा खून माफ हय।

तऽ कुमार एगो खून के देलन। रहस्यमय खून। जेइमे खून नऽ बहल। कुमार भरोस अपना सारि आ छात्रा के विआह अपन स्वजातीय छात्र शेखर से करा देलन आ वोऽकर हत्या के खडयंत्र रचलन। एकांत मे कुमार बजलन ~ काम्या अऽब हम दूनू गोरे बिना लाग-लपट के साथ रहब। लिव इन रिलेशनशिप।

काम्या बाजल ~ कोना जीजा जी ?

कुमार बाजल ~ अहां के मनमोहनी विस कन्या बने पड़त। अहां रात मे अपना दुल्हा के दूध मे जहर मिला के पिला दू। आगा सभ हम देखि लेबय।

काम्या बाजल ~जीजा जी ! अहां सौंदर्य के खतरनाक खिलाड़ी छी।
कुमार बाजल ~ कोनो अहां कम खेल्हाड़ि छी ?
काम्या बाजल ~ बेश जीजा जी !

काम्या आइ रात बिस कन्या बन गेल। अपन सौंदर्य जाल मे समेटित शेखर के जहर मिलायल दूध पिआ देलक। सबेरे शेखर विछावन पर मृत पायल गेल रोना रोहट भेल। कुमार भरोस के पहल पर पुलिसो के सूचितो नऽ कैल गेल। बातो खतम भे गेल। कामिनी तऽ अपन मुंहे बंद कऽ लेलक। कुमार भरोस आ मसोमांत काम्या लिव इन रिलेशनशिप मे रहे लागल। आइ लोग कहय हय कुमार जेतबे विद्वान हय ओतबे कमीना इंसान हय।

▪▪▪

| गरीब के कहूं गुजारा न |

मोहन बाजल ~ तलेवर का, जनला हय ! नारायन दिल्ली मे गायब हो गेलय हय। उहां से वोकर संगी रमेसर फोन कलकैय हय जे हम सभ नारायन के एक महिना से ढूढ़ रहली, परंच कहौं पता नऽ चलल हय। खबर सुनला पर सभ परिवार रो रहल हय।

तलेवर बजलन ~ ई तो बड़ा आश्चर्य के बात हय। नारायन तऽ दिल्ली मे ठेकादारी कऽ के तीन बीघा जमीन खरीद लेलक आ ईटा के छतदार मकानो बना लेले रहल हय। आब तऽ अनर्थ हो गेल। दू गो नाहि- नाहि बच्चा के की होतेय ? कनिया बिधबा होके केना जीबतैय ? ई सभ ठिकेदारी के कारन भेल होतय। कहौं मार के फेक देले होतय।

मोहन बाजल ~ गांव मे बेरोज़गारी के कारन लोग दिल्ली, पंजाब जाइ हए। देखा की भे गेलय !

कुच्छे महिना बाद। मोहन बाजल ~ तलेवर का ! एगो बात मालूम भेलो हय।
तलेवर बजलन ~ की भेलय हय ?

मोहन बाजल ~ हे। बुझावन के कनिया बुझावन के छोड़ के एगो पंजाबी जौडे भाग गेलय हय। पंजबिया कम्पनी मे सुपरवाइजर रहलय हय। सुपरवाइजर के बुझावन इहां आन जान रहलैय हय। बुझावन आ सुपरवाइजर एके कंपनी मे काज करैत रहलैय।

तलेवर बजलन ~ हे ! बुझावन के कनिया जबरदस्ती दिल्ली गेल रहे। बुझावन बड़ा समझैले रहे अपना कनिया के। परंच ऊ नऽ मानलैक। बुझावन हमरा ई बात बतैले रहे। हमहू कहलीय की अखनी जर जबान हय। ले जाहू। हम की जाने गेलीय की शहर मे की सभ होइ हय।

कुच्छे महिना बाद मोहन बाजल ~ तलेवर का, अनर्थ हो गेलो !
तलेवर बाजल ~ की भेलेय हो ?

मोहन बाजल ~ फेर अपना गांव खेलावन दिल्ली मे गायब हो गेलो। वोकर संगी बुधन के फोन अलैय हय की हम सभ एक महिना से ढूढ़ रहली हए। परंच आइ तक पता नऽ लागल हय।

तलेवर बाजल ~ नारायने लेखा वोकरो मार के फेक देले होतय।
मोहन बाजल ~ शहर मे एना कैला होइ हए।

तलेवर बाजल ~ पैसा के लेल होइत होतेय। पैसा जमा देखले होतय तऽ मार के फेक देले होतय आ पैसा हथिया लेले होतैय।

कुच्छे महिना बाद मोहन बाजल ~तलेवर का, जुलुम हो गेलो !

तलेवर बाजल ~ की भेलेय ?

मोहन बाजल ~ तलेवरका, बेचन के बेटी गायब हो गेलेय हय। दिल्ली सं फोन आयल हय। बेचन अपना बाबू के फोन कैले रहले हय।

तलेवर बाजल ~ की शहर मे इहे सभ होइ हय ?

मोहन बाजल ~ तलेवरका, तोरा मालूम हौअ हम नाम नऽ बताबओ। एगो तऽ कहैत रहे की शहर मे नौकरानी के उमेर के हिसाब से पगार मिलै हय। पनरह से कम उमर के पांच हजार, पनरह से तीस के दस हजार आ तीस के उपर के सात हजार पगार मिलैय हय।

तलेवर बाजल ~ तऽ ई सभ होय हय !

मोहन बाजल ~ तलेवरका, **लरकी** के खरीद बिक्रीयो होइ हए। लरकी गायब होय के मतलब लरकी के बेच लेल गेल। खास के हरियाना, पंजाब, राजस्थान मे लरकी के बड डिमांड हय। कुच्छ लरकी तऽ बांग्लादेश आ खाडी के देश तक बेचल जाइ हए।

मोहन बाजल ~ हमरा तऽ फेसबुक आ वाह्ट्स एप से मालूम भेल हय।

तलेवर बाजल ~ गांव के बेरोज़गारी आ सामंतशाही से बचे के लेल लोग गांव के छोड़ के दिल्ली, पंजाब जाइ हए आ वोहू पूंजीपति के शोसन के शिकार होइ हय। गरीब के कहूं गुजारा नऽ।

▪▪▪

| कोरोना |

मास्टरनी पत्नी के सहयोग लेल जातिगत जनगनना के पहिला दौर मकान गनना करे पंचायत के गनना ब्लाक मे गेली। दस गो भवन गनना के बाद एगो भवन प्रांगन मे पहुंचली। बरामद पर राखल अंखरा चौकी पर बैठे के चाह ली। तभीये एगो बुढ़ही के आवाज आयल ~ रुकल जाव। अखरा चौकी पर नऽ बैठू। हमरा जाजिम बिछाबे देल जाउ। तऽब बैठल जतैय।

हम कहली ~ कोनो बात नऽ, कनिके देर के बात हय। हमरा सभ के देर हो जायत।
बुढ़ही बोललन ~ नऽ ! जाजिम बिछाबे दू, तऽब बैठब। अहां सभ अखनी अइली हय , फेर कब आयब। अहां सभ शिक्षक छी। शिक्षक आदरनीय होइ छथिन।
बुढ़ही चौकी पर जाजिम बिछैलन आ कहलन -आबि बैठ के काज करु।
हम पुछलियेन -कै गो बेटा हय।
बुढ़ही बोललन - तीन गो बेटा हय।आंसू भरल आंखि आ भर्राइत आवाज मे बोललन -बड़का बेटा नऽ हबे। छोटका बेटा केन्नऽ भाग गेल से पता नऽ हय। मंझला बेटा, पुतोहु आ एकटा पोता हय।
हम पुछलियेन ~ छोटका बेटा कैला भाग गेल।

बुढ़ही डबडबाइत आंख आ रोइत आवाज मे बजलन ~ वोकर संगत खराब भे गेल रहैय। गांजा, भांग, शराब खाय पियैत रहेय। वोकर बिआहो हो गेल रहेय। औंरी दिखा के बोललन 'एगो इहे पोता वोकर जनमल हय'। पुतोहुओ छोड़ के चल गेल।

हम पुछलियेन ~ आ बड़का बेटा।
बुढ़ही बोललन ~ वोऽ करोना से मऽर गेल।
हम कहलियेन ~ कोरोना से।
बुढ़ही बजलन ~ हं ! वोऽ हैदराबाद मे एगो अखबार मे काज करैत रहैय। दू गो बेटी आ पत्नी संग उंहे रहे। पहिले वोकर पत्नी के कोरोना भे गेल रहैय। हमर बेटा छट्टी

लेके वोकरा खूब सेवा सुसुर्सा कैलक। वोकर कोरोना छूट गेलैय आ हमरा बेटा के कोरोना भे गेल। वोकर पत्नी वोकर सेवा सुसुर्सा नऽ कलकैय आ हमर बेटा मऽर गेल।

हम कहलियेन ~सेवा सुसुर्सा नऽ कैलन कैला ?
बुढ़ही बजलन ~वोकर पत्नी एगो एनजीओ मे काज करैत रहय। वोऽ वोकरा छुट्टी नऽ देइ। हमर बेटा सेवा सुसुर्सा नऽ होय के कारण मऽर गेल।

हम पुछलियेन ~ पुतौहु आ पोती आबि केन्नऽ हय ?
बुढ़ही बजलन ~ सभ हैदराबाद मे ! वोऽ अभियो ओहीं एनजीओ मे काज करैत हय। वोऽ हमरा सभ के नऽ देखैय हय। मंझिला बेटा देखभाल करैय हय। पुतौह आ एकरा से एगो पोता हय।

हम पुछलियेन ~ की करैय बेटा ?
बुढ़ही बजलन ~ बाजार पर एगो छोट-मोट किराना के दूकान हय।
हम कहलियेन ~ सभ परिवार एके ठिम राखब की अलग-अलग।
बुड्ढी बजलन ~ सभ के अलग-अलग लिख दिऔ। हमरा छोटका बेटा संग लिख दिऔ।

हम कहलियेन ~ सभ लिख देली।
बुड्ढी अपन पोता से बजलन ~ बौआ। मम्मी के कहु चाह बनाबे के।
हम कहलियेन ~ छोड़ दिऔ।

बुड्ढी बजलन ~ नऽ चाह तऽ पिये के परत। हम्मर मालिक पति जौ तक जीवित रहला। हमरा दरबाजा पर से बिना चाह पीले कोई नऽ गेलन। हम वोऽ रिवाज केना छोड़ दू। बचबा चाह लेके आइल। हम एगो कप बुढ़ही के ओर बढैली। बुड्ढी बजलन ~ हम आबि चाह नऽ पियैछी। जौं तकि मालिक रहलन। दूनू गोरे साथे चाह पीबि।

हम कहलियेन ~ आबि दसखत कऽ दियौ।

बुड्ढी दसखत कैलन ~ राधा झा।

हम दूनू गोरे परनाम कऽ के उहां से आगे बढ़ गेली। याद रऽह गेल बुढ़ही के डबडबाइत आंखि आ कोरोना।

▪▪▪

| रक्त संबंध |

कर्मवीर सिंह एकटा सम्पन्न किसान रहे। उनका एकटा बेटा प्रताप सिंह रहे। उहें गांव सोनबरसा मे एकटा सम्पन्न किसान रामबालक महतो रहे। रामबालक महतो के एकटा बेटी वसुन्धरा आ एकटा बेटा मनोहर रहे। प्रताप सिंह आ वसुंधरा साथे-साथे गांव के मिडिल स्कूल मे पढ़े। प्रताप सिंह आ वसुंधरा पढे मे तेज रहे। आठवां तक कभी प्रताप फस्ट करे तऽ वसुंधरा सेकेंड आ वसुंधरा फस्ट करे तऽ प्रताप सेकेंड। मनोहर के पढे मे मन नऽ लागे। बाद मे दूनू गोरे अपन नाम भुतही हायर सेकेण्डरी स्कूल मे लिखलैक। जैइमन सं दूनू गोरे फस्ट डिविजन से इण्टर विज्ञान कैलक। दूनू गोरे मे प्रेम बीज भी अंकुरित होयत रहे। मनोहर अपन खेती बारी के काम करे।

अऽब प्रताप आ वसुंधरा बीए आनर्स मे नाम लंगट सिंह कालेज मुजफ्फरपुर मे लिखैलक। प्रताप जहां बायज हास्टल मे रहे, वहीं वसुंधरा गर्ल हास्टल मे। दूनू गोरे मन लगा के पढे। कालेज के कैंटिन आ पुस्तकालय मे दूनू गोरे मिलत रहे। पढ़ाई के साथ प्रेम भी परवान चढैत रहे।

बीए आनर्स मे भी प्रताप आ वसुंधरा प्रथम आयल। दूनू गोरे बीपीएससी के तैयारी करे लागल। समय के साथ दूनू गोरे बीपीएससी कम्पीट कर के आफीसर्स बन गेल। प्रताप डीएसपी आ वसुंधरा बीडीओ बनल। अऽब दूनू गोरे बिआह के बारे मे बात करे लागल। प्रताप अपन पिता जी के वसुंधरा से प्रेम के बारे मे बतबैत शादी करे के इच्छा बतैलक।

कर्मवीर सिंह कहलन ~ अऽब तू डीएसपी बन गेला हैय। जमाना बदल गेल हैय। कानून तोरा पक्ष मे हौअ। भला हम रोकेवाला कै होय छी ? वसुंधरा भले तोरा प्रेम करे छौ। विआह करे के लेल तैयार हौअ परंच वसुंधरा के बाबू जी के की राय हैय। इहो बात जाने के हैय।

वसुंधरा अपना बाबू जी से कहलक ~ बाबू जी। हम आ प्रताप एक दोसर के प्रेम करै छी। हम दूनू गोरे विआह करै चाहे छी।

रामबालक महतो बोललन ~ बसुंधरा तू हमर असकरुआ दुलरी बेटी छा आ तू बीडीओ भी छा। कानून भी साथ होअ। तोहर शादी मे हमर कोई विरोध नऽ हौअ।

बसुंधरा सब बात प्रताप के बतैलक। प्रताप अपन माइ बाबू जी के बतैलन। कर्मवीर सिंह कहलन ~ प्रताप विआह मे कोई बाधा नऽ हैय।

तैय समय पर प्रताप आ बसुंधरा के विआह हो गेल। समय पर मनोहर के भी शादी हो गेल। कुच्छे दिन बाद प्रताप आ वसुंधरा के एकटा बेटी लवली आ मनोहर के एकटा बेटा आंनद भेल। समय बीतत गेल। लवली आ आंनद आरडीएस कालेज से बीए आनर्स कैलक। दूनू के पढाइ के बीच प्रेम हो गेल। दूनू विआह करे के बात करे लागल। दूनू बिचार कर के फैसला लेलन की दूनू गोरे विआह करब। भले हम रिशता मे भाई-बहिन छी परंच समाज हमारा सभ के भाई-बहिन नऽ मानै हैय।

आनन्द बोलल~ अइला की हमर फुआ-फुफा दू जाति के हैय। फूफा सवर्ण हैय तऽ फूआ अवर्ण। हम अवर्ण छी आ तू सवर्ण। हमर दूनू गोरे के विआह मे कोई बाधा नऽ हैय परंच दूनू गोरे अपना माइ-बाबू जी से राय ले लू।

मौका देख के रात मे लवली बोललक ~ बाबू जी हम आ आंनद एक दोसर के प्रेम करै छी आ विआह करै चाहे छी। ई बात सून के प्रताप आ वसुंधरा माथा ठोके लागल।

कुच्छ देर सोच के प्रताप बोललक ~ लवली ई विआह नऽ हो सकै हैय।
लवली बोललक ~ कैला विवाह नऽ हौतै। हम दूनू गोरे प्रेम करै छी। बालिग छी।
प्रताप बोललक ~ परंच आंनद तोहर ममेरा भाई हौअ। दूनू गोरे के रक्त संबंध हौअ।
लवली बोललक ~ समाज तऽ अइ रक्त संबंध के नऽ मानै छैय।
प्रताप बोललक ~ ज्या दा समाज के, परंच तोरा दूनू के रक्त संबंध हौअ आ ई विआह

वर्जित हैय।

एन्ने आनन्द भी रात मे अपना बाबू जी के सभ बात बतैलन। मनोहर महतो कहलन ~ लवली तोहर फुफेरी बहिन हौअ। तोरा दूनू के रक्त संबंध हौअ। ई विआह नऽ हो सकै छैय।

आंनद कहलक ~ बाबू जी हम समाज के उपेक्षा के कारण अइ रक्त संबंध के बूझै से अंजान रहली हैय।

आंनद सभ बात मोबाइल से लवली के बतैलक। लवली बोललक ~ हं भैया ! बाबू जी संबंध के गहराई से समझैलन हैय की जाति से नऽ बल्कि रक्त संबंध से तू दूनू भाई - बहिन हौअ।

आंनद बोललक ~ हं बहिन ! हमरा तोरा के रक्त संबंध के जेना बहिन - भाई के प्रेम अटूट हैय।

▪▪▪

| यशोदा माय |

बरहमपुरी गांव मे एकटा पुजारी बरहम शर्मा रहे। जे गांव के महादेव मठ मे पुजारी के काम करे। पुजारी मिलनसार रहे। पुजारी जी मठ मे ही अपन पत्नी अहिल्या के साथ रहे। मठ मे चौका बर्तन करे के लेल एकटा महिला मुनिया रहे। जे उहे गांव के रहे। मुनिया के पति भी मठ के खेती बाड़ी के काम देखे।

कुच्छे समय बाद दुन्नू अहिल्या आ मुनिया गर्भवती भेल। अहिल्या के लरिका आ मुनिया के लड़की जनम लेलक परंच तीन महीना बाद दूर्भाग्यवश डायरिया के कारण अहिल्या परलोक सिधार गेल। पुजारी जी अपना दूधमुहां बच्चा के लेल परेशान रहे लागे रहल। ई दुख मुनिया के देखल नऽ गेल।

मुनिया पुजारी जी से कहलक ~ पुजारी जी अहां चिंता नऽ करु। अहां के बौआ के हम अपन दूध पिला के पालव। हम बुझब की हमरा जौंआ बच्चा भेल हैय। हम समान रुप से पालब।

पुजारी जी मुनिया से कहलन ~ मुनीया। तू हमरा मन के बात पूरा कऽ देलऽ। हम तऽ बच्चा के पाले के लेल कहे चाहैत रहली हैय। हम ई ऋण तोरा बेटी के पढा के पूरा करब।

मुनिया पुजारी के बच्चा आ अपन बच्ची के अपन दूध पिला के पाले लागल। समय बीतल गेल। आइ पुजारी के लरिका सर्वजीत आ मुनिया के लरिकी मेधा का नाम गांव के ही स्कूल मे पहिला वर्ग मे लिखायल गेल। साथे साथे सर्वजीत आ मेधा पढे लागल। संगे संगे खेले लागल।

समय लगले सर्वजीत आ मेधा गांव के नजदीक सुरसर डिग्री कॉलेज मे पढ़े लागल। दूनू गोरे बीए आनर्स फस्ट क्लास मे पास कैलक। समय के साथ सर्वजीत

पुलिस मे बहाल हो गेल। दूनू मे प्रेम भी रहे। अऽब सर्वजीत आ मेधा प्रेम विआह के बारे मे बात करे लागल। परंच सर्वजीत मे अपन माय - बाबू के छवि देखे।

सर्वजीत कहलक - मेधा हम आ तू जौड़े जौड़े पढली हैय। हम दूनू गोरे जबान छी। दूनू गोरे दू जात छी। प्रेम विआह मे कोनो बाधा नऽ हैय। कानून भी हमरा पक्ष मे हइ परंच प्रेम विआह से पहिले बाबू जी से अनुमति चाहे छी।

मेधा कहलक - हं ! हं ! बाबू जी सऽ अनुमति जरूर ले ला। हमहूं अपना माय बाबू जी से अनुमति ले ली छी।
सर्वजीत अपन बाबू जी से रात मे कहलन ~ बाबू जी, हम मेधा से बड़ा प्रेम करै छी। हम मेधा से विआह करे चाहे छी।
पुजारी कहलन ~ सर्वजीत ई विआह नऽ हो सकै हैय। मेधा तोहर बहिन हैय। भाई-बहिन मे विआह नऽ हो सकै हैय।
सर्वजीत कहलक ~ बाबू जी हम दूनू दू जात छी। हम बाभन आ मेधा सोलकन हैय। विआह तऽ हो सकै हैय।

पुजारी जी कहलन ~ सर्वजीत तू नऽ जानैय छा। जब तू तीन महीना के रहा। तोहर माय मऽर गेलथून। मुनिया तोरा अपन दूध पिला के पाल ले हौअ। तोरा आ अपन बेटी मेधा के जौंआ संतान लेखा पाल ले हौअ। मुनिया तोहर यशोदा माय हौव। जेना भगवान किशन के यशोदा माय हैय।

सर्वजीत कहलक ~ बाबू जी ई बात हमरा मालूम नऽ रहल हैय। हम तऽ मेधा के माय के कामवाली समझैत रहली। आ ई हम समझली मेधा हमर बहिन हैय। काल्हि हम अपना हाथ मे राखी बंधायब।

एन्हर रात मे अपन माय के मेधा कहलक ~ माय, हम सर्वजीत से प्रेम करै छी। हम दूनू गोरे एक दोसर के प्रेम करै छी। हम प्रेम विवाह करे चाहे छी। अइला की हम दूनू गोरे

दू जात के छी। सर्वजीत बाभन हैय आ हम सोलकन छी।

मुनिया कहलक ~ सर्वजीत से तोहर विआह नऽ हो सकै हैय। चाहे हम दू जाति के भले नऽ होय। हम सर्वजीत के अपन दूध पिला के पोस ले छी। सर्वजीत जब तीन महीना के रहे तऽ वोकर माय मऽर गेल रहे। हम अपन बेटा जेका पोस ले छी। हम सर्वजीत के यशोदा माय छियै।

मेधा कहलक ~ माय, हम तऽ सर्वजीत के पुजारी जी के बेटा समझैत रहली हैय। आइ समझ ली की सर्वजीत हमर भाई हैय। हम काल्हि अपन भैया हाथ मे राखी बांधब।

काल्हि सबेरे मेधा अपना माय के साथ मठ मे पहूच गेल। सर्वजीत अपना बाबू जी के साथ चौकी पर बैठल रहे।

मेधा बोललक ~ भैया सर्वजीत !
सर्वजीत बोललक ~ बहिन मेधा !

दूनू नजरिये नजैर मे बात कैलक। कुच्छो बोले के जरुरत नऽ पड़ल। मेधा अपन भाई सर्वजीत के हाथ मे राखी बांध देलक। सर्वजीत आगे बढ़ के अपन यशोदा माय मुनिया के गोर छू के प्रणाम कैलक। यशोदा माय मुनिया अपन आशीर्वादी हाथ सर्वजीत के मुड़ी पर रख देलक।

▪▪▪

| जैविक पिता |

सारा गांव-जवांर जनै की छोटका मालिक खवास के जनमल हैय परंच छोटका मालिक अइ बात से अंजान रहै। आखिर अंजान केना न होयत। केकरा मे ई हिम्मत होयत, ई बात छोटका मालिक के बताबे के। परंच एगो अप्रत्याशित घटना से पता चल गेल की हम खवास से जनमल छी। हमर जैविक बाप खवास हैय।

घटना ई भेल की खवास छोटका मालिक के चाय पीये लेल लबैत रहे की टेबुल पर धरे के बेर हाथ से कप छूट गेल आ चाय गिर के छोटका मालिक के नयका सूट पर गिर गेल। छोटका मालिक आग बबूला हो के बिगड़ लन। खबासी करते करते बुढा गेल, परंच अऽब तक अकिल नऽ भेल हैय। मारे ला हाथ उठैलन।

खबास बोले लागल, मालिक मालिक....!

ई शोर के छोटका मालिक के माय सुनते, दौड़ल आयल आ हाथ पकड़ के जोर से बोललैन ~ ई की कैला बौआ। ई तोहर बाप छथून। ई तोहर जैविक पिता छथून। इनकरे तू जनमल छऽ।

~ ई माय, तू की बोले छी। हं बौआ, हम सही कही छिओ।

हं बौआ, ई बात तोहर बाबू जी भी जनैत रहलथून हऽ। तोरा जनम होय से तीन महीना पहिले हमरा सब के छोड़ के दुनिया से चल गेलथून। तोहर बाबू जी के खवास जरूर रहथून, परंच तोहर जन्मदाता बाप छथून। चल जा इनका से गोर धऽ के माफी **मांग**ऽ। छोटका मालिक आंख मे आसू ले के, गोर धऽ के बोललन, हमरा माफ कऽ दऽ बाबू जी। छोटका मालिक, हुनकर माय आ खबास बाबू तीनो आदमी आपस मे खुशी से लिपट गेलन।

तैनके देर बाद छोटका मालिक के माय अहिल्या देवी अपना कमरा मे जाके

पड़ रहलन। आंखि मूंद ले अतीत के याद मे खो गेलन। भगवतीपुर के पूर्व जमींदार के एकलौता पुत्र रवीन्द्र प्रताप से विआह भेल। रवीन्द्र प्रताप पच्चीस बरख के बांका जवान रहतन। गोर भुराक। बड़का बड़का आंख। कारी मोछ। चौड़ा सीना। देखते मन मोह लेलन।

अहिल्या रामपुर के पूर्व जमींदार के बेटी रहे। तेइस बरख के अहिल्या गौर वर्ण के युवती रहे। अंडाकार चेहरा। कुइश आंखि। डांर तलिक लटकैत कारी केश। उन्नत उरोज के स्वामिनी अहिल्या के देखते रवीन्द्र प्रताप दिवाना भे गेलन। तैनके दिन बाद होली रहे। होली के दिन रवीन्द्र प्रताप चुपके चुपके पीछे से आके अहिल्या के बांह मे भर ले लेन आ चेहरा मे ललका रंग लगा देलन आ फेर अबीर लगा देलन।

जौं अहिल्या चेहरा मे हरियरका रंग लगाबे के लेल रवींद्र प्रताप के लेल बढल। रबीन्द्रनाथ प्रताप हरियरका रंग से बचे लेल पीछे के ओर अपन डेग कैलन की भटाक दऽ रंग आ पानी से भीजल पक्का फर्श पर पीछर गेलन। हुनका रीढ के हड्डी मे जबरदस्त चोट लगलैन आ वोऽ शरीर सऽ अशक्त हो गेलन।

अहिल्या आ रवीन्द्र प्रताप के खुशहाली दुःख-दर्द मे बदल गेल। परंच अइ दुःख दर्द मे सहारा भेल रवींद्र प्रताप के साथी आ खवास, रामवरन महतो। रामवरन हट्ठा कट्ठा जवान रहे। गेहूंआ रंग। औठिया केश, कारी मोंछ। चौरा छाती। देखे मे आकर्षक पुरुष।

रामवरन महतोआ रवीन्द्र प्रताप के उमेर एके रहे। गांव के स्कूल मे पांचवा तक साथे साथे पढे।साथे खेले।गरीबी के कारण रामवरन आगा न पढ पायल। रामवरन अपन साथी आ पूर्व जमींदार रवींद्र प्रताप के इहां खवासी करे लागल।परंच रवीन्द्र प्रताप रामवरन के अपन साथी के लेखा माने। अहिल्या भी रामवरन के दिअर जैसन मान दे। परंच रामवरन रवीन्द्र प्रताप के मालिक आ अहिल्या के मालकिन माने।

रवीन्द्र प्रताप अहिल्या के दुख देख के बड दुखी होय। रवीन्द्र प्रताप अहिल्या के शारीरिक सुख देबे मे अक्षम हो गेल रहे। परंच अहिल्या तऽ जवान रहे।

एकटा दिन अहिल्या के सामने रवीन्द्र प्रताप रामवरन के कहलक ~ देखा रामवरन तू हमर खवास नऽ हमर साथी छऽ। अहिल्या तोरा दिअर लेखा मानौ हैय। हम आब शारीरिक रूप से अशक्त छी। आब अहिल्या के खुश रखे आ पुत्र सुख देवे के भार हम तोहरा देव छियो।

अहिल्या के ओर देख के रवीन्द्र प्रताप कहलन ~ अहिल्या आबि तू रामवरन के स्वीकार करा। अप्पन वंश के चलाबे के लेल एगो पुत्र तऽ चाही। एहन घटना महाभारत काल मे भी होयल रहे। धृतराष्ट्र पांडू आ विदुर के जनम अपन पिता से नऽ भेल रहे वरना ऋषि वेदव्यास से भेल रहे। ऋषि वेदव्यास धृतराष्ट्र पाण्डु आ विदुर के जैविक पिता रहे। अपन पुत्र के जैविक पिता रामवरण होयत तऽ कोनो हरज नऽ। दुनू गोरे के स्वीकार तऽ करे के पड़तैय। अइमे संकोच नऽ करा। अहिल्या सिर झुका के मौन सहमति दे देलक। रामवरन सिर झुला के मौन स्वीकृति दे देलक।

आबि अहिल्या आ रामवरन मे प्रेम अंकुरित भऽ गेल। अहिल्या आ रामवरन रवीन्द्र पताप के खूब सेवा करे। अइ बीच अहिल्या गर्भवती भे गेल। रवीन्द्र प्रताप अचानक अइ दुनिया से विदा भे गेलन। तीन महिना के बाद छोटका मालिक पैदा भेल। खवास रामवरन छोटका मालिक के जैविक बाप वन गेल। ई सभ घटना चलचित्र जेखा अहिल्या देखत रहै की छोटका मालिक के आवाज, माय! माय! से स्मरण विखंडित भे गेल।

▪▪▪

| मिताइ |

सियाराम आइ ई दुनिया मे नऽ हैय। परंच जौं अकेला मे रहि छी तऽ बड याद आबैय। हम दूनू गोरे संगी रही। स्कूल मे साथे पढी। मिडिल स्कूल मे तऽ एके साइकिल सं स्कूल जाइ। ऊ बैक खींच के ले जाय। ऊ फस्ट करे आ हम सेकेंड करी। हं ! सियाराम के सर दर्द के बीमारी रहे। कहियो कहियो देखिए की वोऽ गमछा से माथा के खूब कस के बांध लेवे। खुब माथा मे भिक्स रगड़े। आ खूब पढे।बुझाय की जेना सियाराम के पढे के भी बीमारी हैय। बीमारो रहला पर पढाई नऽ छोड़े।

हाइस्कूल मे हास्टल मे एके रूम मे रही। पढे मे दूनू गोरे के प्रतिस्पर्धा रहे। अपन लालटेन साफ रखे मे भी प्रतिस्पर्धा रहे। लालटेन के शीशा एकदम साफ रहे। खूब इजोत दे। हं ! पढ़ाई के प्रतिस्पर्धा मे दूइ बजे रात सं पढाई शुरू कऽ देबे। जब जाने की हम पढब तऽ ऊ अपन लालटेन के लौ कम के सुते के ढंग धऽ लेबे की हम सुत रही। तऽब हम देख के सुत रही। जब हम पढे ला उठी तऽ देखै छी तऽ सियाराम पढैत रहे। कभी हम सेकेंड करी तऽ ऊ थर्ड आ ऊ सेकेंड करी तऽ हम थर्ड। तेसर लैयका वरुण हमेशा फस्ट करे। ग्यारहवीं यानी मैट्रिक के सेन्टप परीक्षा मे एगो चौथा लैयका किशोर सेकेंड कैलक। हम थर्ड आ सियाराम चौथा स्थान पर चल गेल। वरुण फस्ट रहे। मैट्रिक बोर्ड मे हम सेकेंड कैली आ सियाराम थर्ड। वरूण आ किशोर फस्ट। इण्टर मे हम सेकेंड आ सियाराम थर्ड।

अऽब सियाराम पढाई छोड़ देलक आ नेपाल के पहाड़ी क्षेत्र के एगो स्कूल मे पढाबे लागल। असल मे सियाराम के घर नेपाल के तुलसीगामा मे रहे। वोऽ हमरा गांव मे अपना संबंधी के इहां रह के पढ़े। सियाराम के शादी भेल। धिया पुता भेल। एगो बेटा इंजिनियर हैय। वोऽ कबहु हमरा गांव अपना कुटुंब इहां आवे तो हमरा से अवश्य मिले। हम हुं बेरोजगारी से जुझैत रही। हमरो कहे ~ दयानंद, चला नेपाल।

नेपाल मे साइंस टीचर के बड कमी हैय। दुर्गम क्षेत्र मे दुगुना दरमाहा मिलै हैय। भारत के बहुत लोग साइंस टीचर हैय। परंच हम नेपाल नऽ गेली। हम इहें एगो वित्त रहित इण्टर महाविद्यालय मे पढाबे लगली। की आइ नऽ काल्हि सरकारी कालेज हो जतै। तेरह बरख बीत गेल कालेज सरकारी नऽ भेल। परंच हम प्राथमिक शिक्षक के लेल फार्म भर ले रही। पीटी मे पास कैली। बाद मे मुख्य परीक्षा भेल। ओहु मे सफल भे के मध्य विद्यालय मे योगदान कैली। बीच-बीच मे सियाराम से भेंट होइत रहे। तैनका दिन से सियाराम से भेट नऽ होय। तो हम हुनका कुटुंब से पुछली तऽ कुटुंब बतैलक की सियाराम बीमार हैय। नेपाल के बड़का बड़का अस्पताल मे चिकित्सा भेल परंच बीमारी के पता नऽ चल रहल हैय। आबि हुनकर चिकित्सा दिल्ली मे मेदांता अस्पताल मे चल रहल हैय।

मेदांता मे सियाराम के एगो बडका बिमारी ब्रेन ट्यूमर के पता चलल। तैनका दिन दवाई से चिकित्सा भेल। अंत मे ब्रेन के सर्जरी भेल। चिकित्सा सफल नऽ भेल। सियाराम अइ दुनिया के छोड़ के सदा के लेल चल गेल। बुझाई सियाराम के सिर दर्द ब्रेन ट्यूमर के कारण होय। परंच ई बात पहिले नऽ जानी। लगभग दस वरष भे गेल। हमहू अऽब सरकारी सेवा सं रिटायर्ड छी। परंच जब भी अकेला मे होय छी सियाराम के मिताइ याद आबैय जे हमरा पढाई मे प्रतिस्पर्धा उत्पन्न कैलक।

▪▪▪

| गोलट |

प्रतापगढ़ के सम्पन्न किसान रामनारायण के बड़ लरिका सत्येन्द्र नारायण सीतामढ़ी के एल के कालेज मे बीए राजनीति आनर्स के छात्र रहे। वही कालेज मे रायपुर के सम्पन्न किसान शिव प्रताप के बडकी लड़की सुजाता भी बी.ए राजनीति आनर्स मे पढैत रहे। संयोग से दूनू एके सेक्शन मे रहे। परीक्षा के तैयारी मे नोट्स के लेन - देन मे दूनू के प्रेम भी बढैत चल गेल। दूनू गोरे कालेज के बाचनालय मे राजनीति पर चर्चा भी करे। कालेज के वाद - विवाद मे भाग भी लेवे। सत्येन्द्र जहां पक्ष मे बोले वहां सुजाता विपक्ष मे बोले। कोई जीते - हारे वोइसे वोकरा प्रेम पर कोई प्रभाव नऽ परे आ दिनानुदिन प्रेम बढते जाइत रहे। फाइनल परीक्षा मे दूनू फर्स्ट क्लास मे पास कैलक।

सुजाता आ सत्येन्द्र अऽब बीपीएससी के तैयारी करे लागल। दो साल बाद सत्येन्द्र बीपीएससी किलियर कै के एसडीओ पद पर बेगुसराय अनुमंडल मे ज्वाइन कै लैलक। सुजाता भी बड़ा खुश रहे। सत्येन्द्र के बधाई आ शुभकामना देलक। वोकरा अपना रिजल्ट पर कोई पछतावा नऽ रहै।

अऽब सुजाता के बाबू शिवप्रताप के सुजाता के शादी के लेल चिंता सतावे लागल। अऽब लरिका के लेल पता लगाबे लागल। शिव प्रताप के हुनकर दोस्त शास्त्री जी बतलैयन ~ शिवप्रताप बाबू, अपना जाति मे प्रतापगढ़ के रामनारायण बाबू के बड़ लरिका सत्येन्द्र प्रताप बीपीएससी कम्पीट कऽ के बेगुसराय अनुमंडल मे एसडीओ पद ज्वाइन कैलक।

तऽब शिवप्रताप कहलन ~ शास्त्री जी कल्ह प्रताप गढ़ चलूं। शास्त्री जी कहलन- हं ! नेक काज मे देरी नऽ होय के चाही। सर्विसवाला लड़का के लेल अगुआ सभ लुबधल रहै हैय। कहौं दोसर नऽ बाजी मार ले। अइले हम सभ पहिले पहूंचू।

कल्ह सबेरे सात बजे स्कार्पियो से शिवप्रताप, शास्त्री जी, सुजाता के छोट भाई अमरेन्द्र प्रताप,, चाचा कृष्ण प्रताप आ ड्राइवर के साथ प्रतापगढ़ के लेल चललन। दूइ घंटा मे प्रतापगढ़ पहूंच गेलन। संयोग से सत्येन्द्र भी घर पर ही रहे। रामनारायण बाबू, शिव प्रताप बाबू साथे सभ लोग के खूब आवभगत कैलन। आवभगत से शिव प्रताप खुव खुश रहे। आपस मे बातचीत होय लागल। अइ बीच मे सत्येन्द्र भी आयल सभ से परनामा पाती भेल। बातचीत मे शिव प्रताप के मालूम भेल की सुजाता आ सत्येन्द्र कालेज मे बैचमेट रहे। शिवप्रताप आ रामनारायण प्रताप आ बात जान के आश्चर्यचकित आ खुश भेल।

रामनारायण बाबू कहलन ~ शिवप्रताप बाबू शादी की तैयारी करु। सत्येन्द्र कै माय हमरा सभ बात सुजाता आ सत्येन्द्र के बारे मे बता देलन हैय।

तय समय पर सुजाता आ सत्येन्द्र के शादी सम्पन भे गेल। सुजाता के छोट भाई अमरेन्द्र प्रताप के आना जाना बेगुसराय आ प्रतापगढ़ होय लागल। प्रतापगढ़ मे सत्येन्द्र के छोटकी बहन अनिता से अमरेन्द्र के आंखि चार भेल आ पता लागल की अनिता सीतामढ़ी के गोयनका कालेज मे बीए मनोविज्ञान आनर्स मे पढैत हैय। संयोग से अमरेन्द्र वही कालेज मे इतिहास आनर्स के छात्र रहे। अऽब तऽ दूनू बाचनालय मे मिलै लागल। प्रेम परवान चढै लागल।

दूनू गोरे बीए आनर्स फर्स्ट क्लास मे आयल।दो बर्ष बाद अमरेन्द्र बीपीएससी कम्पीट कऽ के डीएसपी पोस्ट पर मधुबनी अनुमंडल मे ज्वाइन कैलक। अनिता भी खुश रहे। अपना ले कोई मलाल नऽ रहे। अमरेन्द्र के बधाई आ शुभकामना देलक।अऽब रामनारायण बाबू के अनिता के शादी के चिंता होय लागल। वोऽ अपना दोस्त राहुल बाबू के बतैलन। राहुल बाबू कहलन ~ ठीक हम पता लगबै छी। परंच ई सभ सुजाता के भाई अमरेन्द्र पर कोई विचार नऽ करैत रहे, आऊर लड़का के पता नऽ चलै।

रामनारायण बाबू चिंतीत रहे। अनिता ई सभ बात धीरे धीरे जाने लागल की अमरेन्द्र पर कोनो विचार नऽ हो रहल हैय जबकि वोऽ डीएसपी हैय। परंच रिश्ता के जंजाल मे फसल हैय। कारण की वोऽ हमरा भाउज के भाई आ हमरा भैया के साला हैय। परंच हम तऽ अमरेन्द्र से प्रेम करै छी। अमरेन्द्र भी हमरा सऽ प्रेम करै छाऽ। अनिता पहिले मोबाइल अमरेन्द्र के मोबाइल रिंग कैलक।

अमरेन्द्र कहलन ~ हेलो अनिता ! की बात हैय।

अनिता बोलल ~ हेलो ! बाबू जी हमर शादी करे चाहैत हैय। परंच तोरा पर कोई विचार नऽ करत हैय। जौकि तू डीएसपी जाऽ। तू हमरा भाई के साला छा तै लेल विचार नऽ करै हैय की एहन विआह केना होतै। परंच हम तऽ तोरा से प्रेम करै छी। तू हू हमरा से प्रेम करै छाऽ।

अमरेन्द्र बोलल ~ हेलो ! अनिता हम तोरा से बड़ा प्रेम करै छी। परंच हमरा तोरा परिवार के रिश्ता जुड़ल है। सावधानी से डील करा। देखा हम इतिहास मे पढ़ले छी की राजा महाराजा के एक दोसर के बहिन से शादी होयत रह लै हैय। वोकरा गोलट शादी कहें छैय। वोइमे देहा दैही नाता रहै छैय। हम वोइ बात वाट्स एप कऽ दैय छियो। ई सभ बात माय के बताबा। वोऽ बाबू जी के बतैथून।

वोइ सांझ मे अनिता अपना माय के सभ बात बतैलक। रात मे अनिता रामनारायण बाबू सऽ कहलन ~ देखू। अनिता अपन भाभी के भाई अमरेन्द्र जी से प्रेम करैत हैय। अमरेन्द्र जी डीएसपी छथिन से अहां जनबै करै छी। अनिता बतैलक की राजा महाराजा के शादी एक दोसर के बहिन से होइत रहलै हैय। बिआह होय मे कोई दिक्कत नऽ होयत।

रामनारायण बाबू बोललन ~ बात तऽ ठीक हैय। ई सभ राजा महाराजा मे एहन बिआह होइ हैय परंच हम आऊर तऽ किसान छी।

अनिता के माय बोललन ~ तऽ हम सभ कोन कम छी ! हमरा परिवार मे एसडीओ हैय तऽ समधी के परिवार मे डीएसपी हैय । अइ समय मे एसडीओ आ डीएसपी राजा महाराजा होइ छैय।

रामनारायण बाबू कहलन - ठीक हैय कल्ह राहुल बाबू सऽ बात करब।

कल्ह होके राहुल बाबू से रामनारायण बाबू से विस्तार से बात कैलन । राहुल बाबू कहलन की ठीके बात कहै छी । कल्ह रायपुर चलू । कल्ह सबेरे स्कार्पियो से रामनारायण बाबू, राहुल बाबू, दू गो दयाद मे के भतीजा आ ड्राइवर के साथ रायपुर पहुंचलन । शिवप्रताप बाबू खूब आवभगत कैलन । सभ बात विस्तार से रामनारायण बाबू शिवप्रताप बाबू के बतैलन।

शिवप्रताप बाबू कहलन ~ ठीक हैय। जौं अमरेन्द्र आ अनिता एक दोसर के प्रेम करैत हैय आ जब राजा महाराजा एक दोसर के बहिन से बिआह करैत रहल हैय । जेकरा गोलट विआह कहै हैय तऽ अमरेन्द्र आ अनिता के गोलट विआह होतै । अहां तैयारी करू।

तय समय पर सीतामढ़ी के गोशाला पार्टी जोन मे अनिता अमरेन्द्र के गोलट विआह समाज के उपस्थिति मे सम्पन्न भे गेल। दूनू परिवार खुब खुश रहे।

▪▪▪

| वारिस |

महेंद्र प्रताप लखनपुर गांव के जमींदार रहलन। वोऽ तीन सौ बीघा जमीन के मालिक रहलन। जमीन तीन गांव मे रहे। तीनू गांव मे कचहरी रहे। सभ कचहरी मे जेठ रहैत रहे जे वोही गांव के रहे। महेंद्र प्रताप चार महीना पर मुयाना करैत रहलन। महेंद्र प्रताप पटना विश्वविद्यालय से एमए कैले रहलन। हुनकर विआह भगवानपुर के जमींदार विश्वनाथ प्रताप के एकलौती बेटी मेनका से भेल रहे। मेनका मुजफ्फरपुर के बिहार विश्वविद्यालय से एमए कैले रहे। शादी के बाद दूनू गोरे राजसी जीवन जीयत रहे।

मेनका के भरल जवानी पर महेंद्र प्रताप दिवाना रहे। मेनका खुलल विचार वाली युवती रहे। गांव के लोग मेम साहब कहैत रहे। शादी के पांच साल के बाद महेंद्र प्रताप अपन पिताजी तेज प्रताप के मरला के बाद जमींदारी करे लगनन। अऽब वोऽ शराब पीये लगनन। अऽब हुनकर नजर मेनका के खवासिन पारो पर रहे। पारो मेनका के समवयस्क रहे। ऊ सुंदरता मे मेनका से बीस रहे। मेनका जहां गेहूंआ रहे, वहां पारो दुधिया गोर रहे।

धीरे-धीरे महेंद्र प्रताप पारो के नजदीक आवे लगनन। एक दिन मेनका, महेंद्र प्रताप आ पारो के एक साथ आलिंगनबद्ध देख लेलक। पित्त मार के मेनका रह गेल। अइ बारे मे केकरो से कुच्छो नऽ कहलक। परंच वोहे रामा खटोला, मेनका बार- बार देखै लागल। एक दिन रात मे मेनका, महेंद्र प्रताप के ई सभ बात कहलन ~ हम पंद्रह दिन से अहां पारो के चलैत संबंध के देख रहल छी। एना नऽ करू। हमरा मे की नऽ हैय, जे पारो मे हैय। एगो औरत सभटा देख सकै हैय, परंच अपना पति के दोसर औरत के संग नऽ देखि सकत हैय। अऽब अहां संभल जाउ। महेंद्र प्रताप हं-हूं कहिके मेनका के अपना पांज मे ले लेलन।

परंच महेंद्र प्रताप के आंख मे तऽ बासना के भूत सवार रहे। पारो अऽब सुन्दरी नै अतिसुंदरी लागे लागल रहे। अऽब तऽ हर समय पारो के संग रहे के कामेक्षा जागै

लागल। अऽब तऽ दूनू गोरे हबस के भूख मिटाबे लागल।

एक दिन मेनका, महेंद्र प्रताप आ पारो के एक साथ ओछैना पर आलिंगनबद्ध देख लेलक। मेनका पारो के डपटैत महेंद्र प्रताप के कहलक ~ अहां के की बुझाई हैय की हम जमींदार के बेटा छी, तऽ हमहुं जमींदार के बेटी छी। अहां एम.ए. छी तऽ हमहुं एम.ए. छी। अहां शराब पीयै छी तऽ आइ से हमहुं शराब पीबै। अहां हमरा खबासिन के साथ रहै छी तऽ हमहुं अहीं के खबास जौड़े रहब। जे - जे अहां करै छी वोहे हऽमो करब। अऽब अहां देखब। महेंद्र प्रताप भी तैश मे कहलन ~ अहां के जे मन हैय से करू। हम तऽ पारो के जौड़ेए रहब। मेनका लम्बा सांस लैत, गेहूमन जेका फुफकार आ फनफनाइत दोसर रूम चल गेल।

अऽब मेनका महेंद्र प्रताप के खबास पर डोरा डारे लागल। खबास राम बुझावन महेंद्र प्रताप के ही तुरिया रहे। गांव के ही स्कूल से पांचवा पास रहे। लम्बा चौड़ा जवान। श्यामला रंग। चौड़ा सीना। बडका मोंछ। मेनका के रंग ढंग आ प्रेमक व्यवहार से वोऽ मेनका के मोह पाश मे बंधाय लागल। एक दिन मेनका साफ साफ महेंद्र प्रताप के साथ अपन संबंध मे बता देलक आ कहलक ~ तू निश्चित हो जाऽ। हम अऽब तोरा से प्यार करै छी। हमरा मन पर आ तन पर तोहर अधिकार हौ आ ई अधिकार तोरा हम देय छियौ। ई कहैत रामबुझावन के अपना पांज मे ले लेलन। रामबुझावन महसूस कैलक की मलकिनी शराब पीले हैय आ मदहोश हैय।

जवान मर्द के जब कोई जवान मदहोश औरत अपना बाहों मे जकडत तऽ भला ऊ मर्द जकडन के तोड़ सकै छैय ? धीरे-धीरे मेनका आ रामबुझावन वासना आ प्रेम मे आगे बढैत चल गेल। समय अपन चाल मे चलैत रहे। मेनका गर्भवती भे गेल।

महेन्द्र प्रताप के ज्यादा शराब पीये के कारण लीवर खराब हो गेल। एक दिन अचानक दुनिया छोड़ देलन। मरला के सात महीना के बाद मेनका के लरिका भेल।

सभ लोग कहे की मालिक महेंद्र प्रताप वारिस देके अपने असमय चल गेलन। परंच लोग वारिस के राज के नऽ जान पायल। सारा राज काज वारिस वालिग होय तक मेनका आ खवास बाबू राम बुझावन देखैत रहे।

▪▪▪

| प्रेम के जीत |

एगो गांव मे युवती मैथिली आ युवक रार के घर रहे। मैथिली देखे मे खुब सुन्नर रहे। ५ फीट ३ इंच के कद रहै। दूधिया रंग, नागीन नाहित केश, चान नाहित मुखरा, बिलरी नाहित आंखि, केरा के थम्भ नाहित जांघ, शेरनी नाहित डांर, अप्रस्फुटित कमल नाहित उरोज, आम के नयका ललका पात नाहित पैर, हथनी जैसन चलनाई आ कोयल जैसन बोली। जे देखे से देखते रह जाय। लोग कहे की भगवान फुरसत के समय मे मैथिली के बनैले हैय। मैथिली के बाप मैथिल लटगेना के दोकान कैलै रहे। वोऽ भांग पीस के भी बेचैत रहे।

तहिना रार ५ फीट ५ इंच के बांका जमान। पिडस्याम रंग, औठिया काला केश, राजीव नाहित नयन, हलका मोछ, सिंह जैसन छाती। कोनो युवती के आकर्षित करे, लेल समर्थ। रार सम्पन्न किसान के बेटा रहे। रार कभी कभी सौख मे भांग भी खायत रहे। एकटा दिन रार भांग खरीदे के लेल मैथिल के दूकान पर गेल। परंच दोकान पर मैथिल के बदले वोकर बेटी मैथिली बैठल रहे।

मैथिली बोललक ~ बाबू जी एक महिना के लेल बाहर गेल छथिन। तैला हम बैठल छी। बोला तोरा की चाही। रार कहलक ~ हम तनिका नाहित भांग लेब। सौकिया कखैन्तो कऽ खा लेइ छी।

मैथिली भांग रार के दे देलक। रार भी दाम ०२ रुपया दे देलक। अऽब रार रोज भांग खरीदे आबे लागल। वोकरा मन मे मैथिली से प्रेम होय लागल। भांग आ दाम के लेन देन मे दूनू के हाथक छूअन से प्रेमक तरंग एक दोसर के हृदय से प्रवाहित होय लागल। कुच्छे दिन मे प्रेम अपन रंग दिखाबे लागल। अपन हाल रार अपन खास दोस्त से बतैलक।

दोस्त ~ तू मैथिली के लेके भाग जा। तू अपन नेपाल के कुटुंब इहां चल जा। मैथिली के बाप मैथिल तोरा नऽ छोड़तो।

के बाप मैथिल तोरा नऽ छोड़तो।

ई सभ बात रार मैथिली के बतैलक। मैथिली बोलल ~ अहां के हम प्रेम करै छी। आइए अपना दूनू गोरे घर छोड़ दू। अहां जेन्ने ले चलव, हम चले लेल तैयार छी। हम दूनू गोरे मंदिर मे शादी कऽ लेव।

दो प्रेमी मैथिली आ रार जनकपुर के मंदिर मे पहुच गेल। भगवान आ पुजारी के सामने रार मैथिली के मांग मे सिंदूर भर देलक। अऽब रार मैथिली के स्वामी आ मैथिली रार के स्वामिनी बन गेल। रार आब मैथिली के लेके अपन कुटुंब के **इहां** हरिऔन (नेपाल) चल गेल। पहाड़ी जगऽह पर मैथिली आ रार के खूब मन लागे। पहाड़ पर घूमे। कहियो नदी मे नहाय तऽ कहियो झरना मे नहाय। घंटो पहाड़ पर बैठ के प्रेम के बात करे। उन्मुक्त वातावरण मे उन्मुक्त पियार करे। अइ बीच मे मैथिली गर्भवती भे गेल। एगो सुन्दर लैइका के जनम देलक। दूनू गोरे मिलके नाम रखलक अंगराज।

मैथिली के बाप अदालत मे अपहरण के केस कऽ देलक। परंच मैथिली आ रार लापता रहे। साल भर बाद रार आ मैथिली नवजात शिशु अंगराज संग अदालत मे हाजिर भेलन।

मैथिली अदालत मे कहलन ~ जज साहब। हम आ हमर स्वामी रार बालिग छी। हम दूनू गोरे एक दोसर के प्रेम करै छी। हम दूनू गोरे पूरे होश हवास मे मंदिर मे शादी कऽ लैले छी। हमरा दूनू गोरे के ई नवजात शिशु हैय। हम दूनू गोरे आब जीब- मरब साथहि साथे। जज साहब ~ अहां दूनू गोरे रार आ मैथिली के विआह कानूनी रूप से जाइज हइ।

रार मैथिली आ अप्पन बच्चा के लेके घर आ गेल। रार के माइ अपना बहु बेटा के आरती उतारलन। पोता सहित घर मे शुभ प्रवेश करैलन। आइ मैथिली के बाप

मैथिल भी खुश हैय।

मैथिल कहै छथिन ~ बालिग बेटा-बेटी के प्रेम मे माइ बाप के बाधा नऽ बनै के चाही। आइ मैथिली के परिवार आ रार के परिवार खुश आ खुशहाल हैय। प्रेम के जीत भे गेल।

▪▪▪

| विधवाक पियार |

हमरा वोऽ अबैत जात बड़ा गौर स देखत रहै। परंच हम बिना गौर कैले अबत जाइत रही। एकटा दिन एगो छोट लैइका एगो पूरजी लेके देलक आ कह लक सर जी बड़की माय देलक हैय। हम बड़की माय नाम सुन ले रही।

कारण पता चलल की तीन भाई मे से सबसे बड़का भाई जे बिधुर रहे तीन गो लड़की आ एगो लड़का के बाप रहे। आ सरकारी सरबिस से रिटायर रहे। अपना लड़की के तुरिया लड़की से शादी कैले रहे आ कुच्छे दिन बाद मऽर गेल रहे। वोहे विधवा युवती के बड़की माई के नाम से जाउत-जैधी आ सतवा बेटी-बेटा पुकारत रहै।

हं ! अऽब वै पुरजी के खोल के पढे लगली। पुरजी मे लिखल रहे -

प्रिये सर जी,

परनाम।

हमरा अहां से पियार भऽ गेल हैय।

अहां के शांति

पुरजी पढिते, हमर मन के शांति खतम भे गेल। मन मे शांति खलवली मचा देलक। एक लाइन के पुरजी। असल मे ऊ एगो प्रेम पत्र रहे। अऽब तऽ दिन रात शांति के बारे मे ही सोचैत लगली। हम अपना खिड़की से बेर-बेर देखे लगली। जब वोऽ नहाय कऽल पर आबे। वोऽ खुब देर तक नहाय लागल। तैनका- तैनका अंग प्रदर्शन भी करे लागल। वोहो नजैर नुका के देखे लागल की खिड़की से देखै छी की नऽ। जब वोऽ बुझ जाए तऽ आऊर अंग प्रदर्शन करे लागल। हमरो शांति अऽब कामिनी लागे लागल। हम आ वोऽ दूनू गोरे एक दोसर के देखे लगली। प्यार परवान चढ़े लागल।

अऽब वोहे लैका रोज दिन पुरजी यानी लव लेटर थमाबे लागल। अपन दुख भरल

कहानी, अपन बेदना, अपन देहक कामना, अपन भावना आ अपन सपना बताबे लागल। एक दिन तऽ प्रेमक पत्र मे लिखनन की हम अहां से विआह करै लेल तैयार छी। हमर बाबू माय बहुत पहिले से ब्याह करे के लेल कहैत रहलथिन। परंच हम तोहर बिआह नऽ करबौ। कारण की अपना सब मे बिधवा विआह नऽ चलै छैय। हम सभ कुलिन वर्ग से छी। परंच हम सभ गलती कैले छी की तोहर बिआह बुढ बर से कै देलिओ। आइ तोहर दुःख देखल नऽ जाइए। अऽब तु अपना से केकरो से विआह कऽ ले। परजाइतो मे कऽ ले। अऽब हमरा से दुःख नऽ सहल जाइ अऽ।

ई सब जान के हम किंकर्तव्यविमूढ़ हो गेली। हम तऽ बिआह के बारे मे सोचने भी नऽ रहली। एक दिन सांझ मे अचानक हमरा रूम के किबारी से खटखट के आवाज सुनाई पड़ल। हम कहली के बाहर से आवाज़ आयल, हम शांति। हम किबारी खोल देली। शांति भीतर आके सिटकिनी लगा देलक। हमरा बेड पर आके बैठ गेल। हमहुं बैठ गेली। वोइ बिधवा युवती के आइ नजदीक से देखली। वोऽ हाथ पकड़ के बात करे लागल। कखैन्तो कऽ देह के भी छुए लागल। बात करैत- करैत देह मे सट गेल। अऽब वोइ छुअन से हमरो देह मे सुरसुरी होय लागल। केना दुनू युवा देह एक देह हो गेल पता नऽ चलल। हम अपना के शर्मिंदा बुझे लगली। परंच वोऽ मुसकैत रहे। वोकर भाव शांत दिखे। वोऽ बड़ी फूर्ति से रूम के किबारी खोल के बाहर निकल गेल।

अऽब हम समझ ली की वोऽ वोकर देह के मांग रहे। जै वोऽ पूरा कऽ लेलक। हमरा वोकरा से वितृष्णा भऽ गेल। हम वहां से दोसर ठिम चल गेली। बाद मे पता चलल की वोऽ सजातीय विधुर, दूर के जीजा जी के साथ लिव इन रिलेशनशिप मे रहे लागल हैय। ई कहानी अपना पर बितल एक दोस्त बतैलक, जे बहुत दिन बाद हमरा से मिले आयल रहे। हम सोचे लगली ई बिधवा के पियार नऽ मजबूरी रहे, विधवा विवाह निषेध के।

▪▪▪

| बाल बैरागी |

रामपुर गांव मे एगो युवा साधु आयल रहे। लोग सभ उनकर नाम पुछलक तऽ साधु बोलल ~ हमर नाम बाल बैरागी हैय। हमर घर युपी के एगो गांव हरिपुर मे रहै। हमर बाबू माय बाल कालि मे स्वर्गीय भे गेल। तऽ हम एगो साधु के जौरे अयोध्या धाम चल गेली। बीस बरस तक एगो मंदिर मे रहली। बाल बैरागी नाम हमर गुरु जी के धैल हैय। गुरु जी हमरा आदेश देलन की गांव-गांव मे जाकर सीताराम नाम का प्रचार-प्रसार करऽ। सीताराम नाम के यज्ञ कराबऽ।

बाल बैरागी देखे मे २६-२७ साल के सुदर्शन युवक लागे। वोऽ अपन झोंटा आ दाढ़ी मे खुब फबे। उजर रंग के सुती चौबंदी पेहने रहे। उजरे रंग के धोती लूंगी लेखा डांर मे लपटले रहे। बम्मा हाथ मे घड़ी आ पैर मे खड़ाम पेहने रहे। लोग सभ कहलक ~ साधु जी, चलु हमरा गांव मे एगो मंदिर हैय। ओहीं रहब आ अपन पूजा-पाठ करब।

बाल बैरागी कहलन ~ हम मंदिर मे नऽ रहब। हम अलगे कुटिया बना के रहब। हमरा सीताराम नाम जप यज्ञ करे के हैय। वैके जगऽह लेल पांच बीघा जमीन चाही। एगो सीताराम भगवान के मंडप , एगो यज्ञ मंडप, जैमै नौ दिवसीय चौबीसों घंटा सीताराम नाम के कीर्तन होतै। एगो साधु निवास कुटी, जैमे हम रहब आ एगो बड़का पांडाल जै मे किर्तनीया मंडली सभ रहतै। फेन वोकरा सभ के खाये पीये के व्यवस्था।

लोग सभ कहलन ~ सभ व्यवस्था हम सभ करबैय। पहिले मंदिर पर चलूं आ महंथ जी से बात करू। जगऽह लेल जमीन तऽ महंथ जी देता। बाल बैरागी कहलन ~ चलू।

मंदिर पर अयला पर मंहथ जी आ बाल बैरागी मे दंड परनाम भेल। बैरागी जी अपन परिचय देत सीताराम नाम यज्ञ के लेल सभ बात बिस्तार से बतलैलन। महंथ जी बोललन ~ बैरागी जी, मंदिर के आगे के पांच बीघा जमीन यज्ञ के लेल दैय छी आ हम

यथाशक्ति मदद करब। परोपटा से भी लोग सभ के मदद के लेल कहब। ई तऽ भगवान के काज हैय। आशा हैय सभ समाज के मदद मिलत।

बैरागी जी कहलन ~ महंथ जी, सभ से पहिले एगो भगवान् सीताराम के लेल एगो मंडप आ एगो साधु निवास के लेल एगो कुटिया बनाबै मे सहयोग कैल जाय।

महंत जी अपना करपरदाज के कहलन की जाके बैरागी जी के काज सभ कर दा। लोग सभ भी लगभीर के मंडप आ कुटिया बना देलक | दोसर दिन से एगो जीप भाड़ा करके भाड़ा पर के लाउडस्पीकर से प्रचार होय लागल। एक महिना मे सभ तैयारी हो गेल। ठीक रामनवमी के रोज से सीताराम नाम जप यज्ञ शुरू हो गेल। नौ रोज के बाद यज्ञ समाप्त भे गेल।

अइ नौ **रोज कै** यज्ञ मे गांव के एगो अठ्ठारह बरस के नवयुवती सेहो रोज यज्ञ देखै अबैत रहे। ऊ सीता राम मंडप मे भी पूजा करैत रहै। श्वैत कमल रंग के देह, चनरमा नाहित मुखरा, नारंगी के फांकि नाहित ओठ, चांदी नाहित चमकैत दांत, सुग्गा के चोंच नाहित नाक, खंजन नाहित आंखि, बादल नाहित करिया डांर तक केश, कमल पुष्प नाहित कूच, कोयली नाहित बोली आ हिरणी नाहित चाल रहे। बैरागी जी के नजर वोऽइ नवयुवती पर पड़ल तऽ कनिका देर तक देखते रह गेल।

कनिका झैपलन फेर पुछलथिन ~ तोहर नाम की हौ। नवयुवती बोललक ~ रंभा। हमर घर इहे गांव मे हैय। जग तऽ समाप्त भऽ गेल हैय। परंच पूजा करे हम रोजिन्ने आयब। हमरा पूजा करै मे मन लागैय हैय। बैरागी जी बोललन ~ पूजा तऽ मानुष के करिए के चाही। बड़ा कठिन से लोग मानुष के देह पाबै हैय। इहे के लेल हम ठिन -ठिन सीताराम नाम जप यज्ञ करबै छी की लोगक मन मे भगवान के प्रति प्रेम आ श्रद्धा बढै। रंम्भा के ई सभ सुनि के भगवान के साथे बैरागी जी के लेल भी प्रेम आ श्रद्धा मन मे उठे लागल। रम्भा बोललक-साधु जी, अब हम घरे जाइछी। काल्हि से रोज पूजा करे

आयब।

बैरागी जी कहलन ~ अच्छा।

रम्भा फुलडलिया मे पूजा के समान धऽ के सीताराम मंडप मे पूजा करे आबे लागल। पूजा मे बैरागी जी भी साथ देबै लगनन। रंभा आ बैरागी जी के हाथ आपस मे छूआए लागल। कभी कभी देह मे देह भी सटे लागल। दूनू मे भगवान राम आ सीता के प्रेम प्रसंग सुनैत सुनैत रंभा आ बैरागी जी मे प्रेम अंकुरित होय लागल। प्रेम अपन रंग चढावे लागल।अऽब प्रेम के अंतिम परिणति देहोक कामना भी जगे लागल।

एक दिन बैरागी जी रंभा से कहलन - रंभा अऽब इहां रहनाइ ठीक नै हैय। दूनू गोरे आइ राते रात भाग चला।

रंभा बोललक ~ हं ! पहिले सांझ मे हम घर से आ जायब। भगवान के सामने हम दूनू गोरे पहिले बिआह कऽ लैब तऽ राते- राति भाग जायब। बैरागी जी कहलन ~ अच्छा। देर नऽ करिहऽ। रंभा बोललन ~ जी।

रंभा पहिले सांझ मे सीताराम मंडप मे आ गेल। बैरागी जी सेनुर लेके तैयार रहत। पहिले रंभा के मांग मे पांच बेर सेनूर भऽर देलन। दूनू गोरे भगवान के परनाम कैलन। दूनू गोरे एक बार एक दोसर के आलिंगन कैलन। एक दोसर के अधरपान कैलन। तेकर बाद बैरागी जी कहलन~ रंभा अऽब देर नऽ करऽ। चलऽ ! भाग चलऽ !

अऽब दूनू गोरे एमपी के एगो होटल मे रुम बुक करा के रहे लागल। बैरागी जी झोटा दाढ़ी पहिले ही कटा के सामान्य युवक लेका लुक करा लैलै रहे। रुपया पैसा के तऽ कमिये नऽ रहे।

गांव मे हल्ला हो गेल। बाबाजी गांव के लड़की के लेके भाग गेल। लोग तरह - तरह के बात करै लागल। परंच आश्चर्य ई की लड़की के बाप बोललक भागल तऽ भागल परंच अपने जाति के ही बाबा जी रहे आ बुढ नऽ रहे। एकदम जवान बाबा जी रहे।

बुझाए हैय भगवान जोरि बनैले रहै। एक दम सीता आ राम जैसन।

बैरागी जी गांव के अपन खास चेला सभ से मोबाइल संपर्क बनैले रहे। ठोह लैत रहे। इहां चेला सभ कहे ~ गुरु जी परेम कैलथिन आ शादी कैलथिन। तऽ कोना बुरा करम नै कलथिन ? वोऽना तऽ बाबा जी सभ रखैल रखै छथिन परंच हमर गुरु महाराज वोऽना नऽ कैलथिन। भगवान के दरबार मे शादी कैलथिन। वोऽ तो लोकक आक्रोश के डर से भाग गेलथिन की आक्रोश मे लोग जान मार देय छैय। अऽब जौं वोऽ शादी कै लेलथिन। तऽ वोऽ हमरा सभ के गुरु माता भेलथिन। हमरा गुरु माता आ गुरु जी से कोई घृणा नऽ हैय। अई बात के असर भेल। लोग सभ के बैरागी जी आ रंभा के लेल सहानुभूति प्रेम आ श्रद्धा जागे लागल। चेला ई सभ सूचना बैरागी जी के दैत रहे।

दुइ बरिस बाद अनुकूल समय देखि के बाल बैरागी रम्भा सहित गांव मे अइलन। बैरागी जी तऽ अपना वेष मे रहिते रहे। परंच रंभा के बेष कोतुहल के विषय रहै। एक दम उजर भेष मे। रंभा बैरागिन (माइराम) लागै। चेला सभ रंभा के गुरु माता कहैत चरण छुए आ बाद मे बैरागी जी के। रम्भा आ बैरागी जी आशीर्वाद के मुद्रा मे हाथ उठैले ठरा रहै।

आइ रम्भा आ बैरागी जी वोऽही कुटिया मे गृहस्थ ऋषि परंपरा मे रहैत भजन भाव के साथ गैया के सेवा करैत हैय।

▪▪▪

| सामरथ के दुख नाहि गोसाईं |

रामखेलावन महतो अपना गांव के पूर्व जमींदार छोटन बाबू के खेती गृहस्थी के काज देखत रहे। छोटन बाबू लगभग सौ बीघा जमीन के मालिक रहै। हवेली आ कम्पाउण्ड मिला कै दू बीघा मे रहे। लगभग अढाइ बीघा मे बगीचा रहै, जैय मे तरह तरह के आम, जामून आ लुची के गाछी रहे। टाइम पर आम, जामून लुची खूब फरे। शेष जमीन पर धान गेहूं, तेलहन आ दलहन के खेती होय। खेती गृहस्थी के सभ काज राम खेलावन कराबै। जन मजदूर के बोइन भी रामखेलावन ही देवे।

छोटन बाबू खाली पंचायत के राजनीति करे। हालांकि कहियो वोऽ मुखिया मे नऽ जीतलन। कोई कोई हुनकर लगुआ भगुआ वार्ड मेम्बर मे जरूर जीत जाय। आ वोइ वार्ड मेम्बर के माध्यम से वार्ड मे परे वाला स्कूल के हेडमास्टर के खूब परेशान करे। स्कूल से चले वाला मध्याह्न भोजन , छात्रवृत्ति आ पोशाक योजना सभ मे जबरदस्ती कमीशन लेबे।

छोटन बाबू, राम खेलावन के खेती गृहस्थी कराबे के बदले दरमाहा नऽ देवे। वोकरा बदला मे पांच बीघा जमीन देले रहे। जैमै दू बीघा जमीन के पूरा उपजा रामखेलावन के होय आ तीन बीघा बटाई पर। मतलब की आधा उपज छोटन बाबू के। राम खेलावन भी अइ आमदनी से छोटने बाबू से दू बीघा जमीन खरीद लेले रहे। राम खेलावन भी सुखितगर हो गेल रहे।

छोटन बाबू के छोटके परिवार रहे। अपने, घरवाली सुलोचना आ एगो खूब सुंदर गोर बेटी पिरिया। तहिना रामखेलावन के भी परिवार मे अपने, घरवाली पारवती आ एगो खूब सुंदर श्यामला रंग के बेटा परेम। पिरिया आ परेम गांव के स्कूल मे पढ़े। परेम पढ़े मे बड़ा तेज रहे। ऊ क्लास मे फर्स्ट करे। पिरिया पढ़े मे मध्यम रहे। परेम, पिरिया के पढ़े मे खूब मदद करे। पिरिया भी परेम के कापी, किताब, पेंसिल से मदत

साथे खेलबो करे। चोर-सिपाही, लुकाछिपी, भगडिलो-भगडिलो, राजा-रानी। राजा-रानी मे तऽ परेम राजा आ पिरिया रानी बने।

मिडिल तक तऽ दूनू अपना गांव मे पढलक। हायर सेकंडरी स्कूल गांव से दो किलोमीटर दूर रहे। दूनू पैदलै स्कूल जाय। परेम क्लास टेन आ प्लस टू मे भी फर्स्ट आयल आ पिरिया सेकेंड डिवीजन से पास भेल। अऽब डिग्री मे परेम सीतामढ़ी के गोयनका कालेज मे नाम लिखैलक। परंच नम्बर कम होय के कारण पिरिया के एडमिशन गोयनका कालेज मे नऽ हो सकल। पिरिया के एडमिशन राम सकल सिंह महिला कालेज, डुमरा मे भे गेल। पिरिया कालेज के गर्ल्स होस्टल मे रहे लागल आ परेम गोयनका कालेज के हास्टल मे रह के पढ़े लागल। बीच बीच मे दूनू के भेंट सीतामढ़ी मार्केट मे होइत रहे।

परेम बीए राजनीति शास्त्र आनर्स मे बिहार यूनिवर्सिटी मे टाप रहल आ पिरिया समाजशास्त्र आनर्स फर्स्ट क्लास मे पास कैलक। पिरिया अऽब पटना मे जाके वोमेन्स कालेज मे एमए मे नाम लिखैलक। परेम एमए मे नाम नऽ लिखा के यूपीएससी के तैयारी करे लागल। पटना के आइएएस तैयारी कराबे वाला कोचिंग सुपर फोर्टी मे नाम लिखा लेलक।

जैइ दिन पिरिया के एमए फाइनल के रिजल्ट निकलल। वैहै दिन परेम के युपीएससी के फाइनल रिजल्ट निकलल। जहां पिरिया फर्स्ट क्लास से पास कैलक। परेम आइएस मे पंचवा स्थान पर रहे। एक दोसर के समाचार सुनि के दूनू खुश रहे। दूनू परिवार भी खूश रहे।

अऽब पिरिया घर पर रहे लागल आ परेम ट्रेनिग मे चल गेल। छोटन बाबू आ हुनकर घरबाली सुलोचना के पिरिया के शादी के चिंता सताबे लागल। एक राति दूनू गोरे पलंग पर लेटेल रहे। सुलोचना बोललन ~ न सुनै छी ! सुत रहली की ! छोटन बाबू आंख मूंद ले कहलन ~ अब हमरा नींद कंहा अबै हैय। जेकरा घर मे पढल

लिखल जवान बेटी होतै। वोकरा बाप के आंख मे नींद केन्नऽ से अतै।

सुलोचना बोललक ~ हं यौ ! हमरो नींद नऽ अबैय। झूठे के आंख मुंदले रहै छी। अहां के नजर मे पिरिया के लेल लरिका नऽ हैय।

छोटन बाबू कहलन ~ अऽब जर-जमिंदार के धिया पुता पढबे केन्नऽ करै छैय। इंटर-बीए कैलै रहत परंच योग्यता नऽ रहै छैय। ज़मीदारी तऽ हैय नऽ। गुमाने टेढ रहैत हैय। अऽब अपना जिला मे तऽ नऽ हैय। मुजफ्फरपुर, मोतिहारी मे पता लगवै छी। कुछ दोस्त मुजफ्फरपुर आ कुछ मोतिहारी मे भी हैय। बिहान होय दू डायरी मे मोबाइल नं खोजब।

सुलोचना अपन हाथ छोटन बाबू के छाती पर रखैत बोललन ~ आबि सुत रहु। कोनो चिंता नऽ करु। महादेव पर ध्यान रखूं। महादेव जे करथिन निके करथिन। छोटन बाबू कहलथिन~ अहूं सो जाउ।

पिरिया अपना रूम मे जगले पलंग पर परल रहे। अपन बाबू माय के खुसुर फुसुर सूनैत रहे। अपना बिआह के लेल बाबू माय के चिंता से चिंतित हो गैल। पिरिया के परेम के याद आबे लागल। वोकरा संग बितायल एक एक क्षण याद आवे लागल। आइ तक परेम के एक साथी के रूप मे देखले रहै। आइ परेम, परेमी लागे लागल। जीवन साथी लागे लागल। पिरिया के नींद उड़ गेल। केना ई बात बाबू माय के कहब। बाबू माय की सोचत। फेर पिरिया सोचे लागल, ई केना हम सोच लेलीयै। परेम हमरा चाहबो करै की नऽ। कनिको हमरा से परेम करबो करै की नऽ। हम याद अयबो करै छैय की नऽ। पिरिया अऽब सोचे लागल की वोऽ अऽब एसडीएम बन गेल हइ। कोनो एसडिमिन के चाहत, वोकरे से विआह करत। आइ के जमाना मे कपूल नौकरी चाहैत हैय। सेम नौकरी तऽ सोना मे सुगंध होय छैय। अइ सोचे मे पिरिया ई भूला गेल की हम दूनू दू जाति के छी। वोहु मे हमरे खेती गृहस्थी देखेवाला करपरदाज के बेटा। माय बाबू परेम के स्वीकारत की नै, ई सोचते सोचते पिरिया के आंखि लग गेल।

घड़ी के सूई सुवह के आठ बजा रहल रहे। सुलोचना बोललक ~ पिरिया ! पिरिया ! उठे नऽ ! आठ बज गैलै। केबारी के ढकढकाबे लागल।

पिरिया आंख मिजैत बोलल ~ हं मम्मी ! उठ गेली।

सुलोचना बोलल ~ ठीक।

परेम के ट्रेनिंग खतम भे गेल रहे। अऽब वोऽ रोहतास सबडिवीजन के एसडीएम पद पर ज्वाइन कै लेलक। आइ रात मे परेम के पिरिया के खूब याद आ रहल हैय। परेम अइ बीच मे ट्रेनिंग के चलते एतै नऽ बीजी भे गैल रहे के पिरिया के याद करे के फूरसत नऽ रहे। परंच आइ बहुत याद आ रहल हैय। बचपन सं ल के पढ़ाई लिखाई तलिक के कृषण याद आबे लागल। एगो साथी के रूप मे। परंच आइ पिरिया हृदय के धडकन लागै लागल। फैर दूनू दू जाति के छी। हमर बाबू पिरिया के बाबू के यहां खेती गृहस्थी देखेवाला करपरदाज। केना हम दूनू गोरे एक हो सकै छी। आइ हम एक एसडीएम छी। नियम कानून जनै छी। कानूनी रूप से हम आ पिरिया शादी कर सकै छी। हमर बाबू माय, पिरिया के बाबू माय आ समाज की कहतै। ई सोचते सोचते परेम के नींद पड़ गेल। चपरासी के साहेब-साहेब के आवाज से नींद खुलल।

आइ रात मे अचानक परेम के मोबाइल घनघनायल। देखै तऽ पिरिया के काल हैय। परेम बोलल ~ हेलो !पिरिया।

उधर से आवाज आयल। हेलो ~ परेम। परेम तू बहुत याद आ रहल छा। ज्वाइन तऽ कै लेला। तोहर बाबू जी हमरा बाबू जी कै बतैयब रहलन रहै।

परेम बोलल ~ हं ! काल्हे रोहतास सबडिवीजन के एसडीएम पद पर ज्वाइन कैली हैय।

पिरिया बोललन ~ आब तू तऽ बड़का आदमी हो गेला। एगो सबडिवीजन के मालिक

बन गेलऽ। हमरा तू अऽब केना याद करबऽ। परंच तू तऽ हमरा बड़ा याद आबै छाऽ। हमरा राति मे नींदो नऽ आबैय हैय। तू बड़ा याद आबै छाऽ।

परेम बोलल ~ एना ना कहऽ पिरिया। काल्हि रात मे हमरो नींद नऽ आयल। तोरे बारे मे सोचैत रहै छी। हमरा ई नऽ मालूम की हमरा की हो रहल हैय। पिरिया बोलल ~ अइ मर्म कै मर्द नऽ जान सकै छैय। ई एगो स्त्री जानै छैय। परेम ई परेम छैय।

अऽब अहिना मोबाइल पर बात होय लागल परेम परवान चढ़े लागल। तीन महीना बीत गेल। पिरिया के माय बाबू, पिरिया के बिआह लेल परेशान रहै। दूनू दोस्त से बात कैलक। परंच दूनू कहलक,पिरिया के लायक लड़का नै मिलत हैय। ई बात जान के पिरिया मने मने खूब खुश होय। पिरिया मन मे सोचलक की आइ परेम से विआह के बारे मे बात करब आ मोबाइल पर परेम के नम्बर पर रिंग कैलक।

परेम बोलल ~ हेलो, पिरिया !
पिरिया बोलल ~ हैलो! परेम ? आइ एगो खास बात करब। हमरा पूरन विश्वास हइ की तू मान जयबऽ।

परेम बोललन ~ कहऽ नऽ की बात हइ !
पिरिया बोललन ~ पहिले ई कहा की तू हमरा से परेम करै छा की नऽ।
परेम बोललक ~ कहा नऽ ! हम तोरा से बहुत परेम करै छी।
पिरिया बोलल ~ पहिले 'आइ लव यू' बोला तऽब कहब !
परेम बोललक ~ तू कहै छा तऽ हम बोलै छी, आइ लव यू ! अऽब बोला ?

पिरिया खुश होके बोलल ~ आइ लव यू ! आइ लव यू ! हम तोरा से बिआह करै के चाही छी। तूं अऽब एगो सबडिवीजन के मालिक तऽ हैयबे करऽ, हमरो मालिक बन जा।

परेम बोलल ~ पिरिया तू पगला तऽ नऽ गेलऽ हैय। ई केना होतै ? तोहर बाबू-माय मानतो ! समाज की कहतैय ?

पिरिया बोलल ~ हंऽ ! हम तोरा परेम मे पागल भे गेल छी। देखा बाबू माय के हमरा पर छोड़ दा। ऐगो बात आऊर सुन ला। बाबू माय नैयो मानतै, तैयो हम बिआह तोरे से करबो। हम दूनू गोरे बालिग छी। कानून हमरा साथ हैय।

परेम बोलल ~ कानून हमरा साथ हैय ई बात हमहुं जनै छी। ई तऽ अंतिम बात हैय। परंच तू अपना बाबू माय के राजी करा। हमर बाबू माय तऽ जे हम कहबै वोकरा मान लेथिन।

पिरिया बोललक ~ ठीक हैय। हम अपना बाबू माय के मना लेव। अच्छा। आइ लव यू आ लाइन काट देलक।

परेम बड़ा खुश रहे। सोचे लागल पिरिया के बाबू माय पिरिया के खुब मानै हैय। पिरिया असकरुआ बेटी जे रहे।

पिरिया के बाबू माय पिरिया के शादी के बारे मे बात करैत रहे। परंच लड़का नऽ मिले के कारण चिंतित रहे। एक दिन सांझ मे छोटन बाबू एगो पंचैती मे लागल रहे। माय के अकेला पाय के पिरिया माय के घर मे गेल। माय पलंग पर परल रहे।

पिरिया बोलल ~ माय, माथा दुखाय छौ की ?

माय बोलल ~ तनका- तनका। "ला जांति देउ छीयो", पिरिया बोलल, "माय, एगो बात कहियो ?" माय कहलक ~ कहे नऽ !

पिरिया बोललक ~ हम परेम से परेम करै छी। परेम हमरो से परेम करै छैय।

सुलोचना बोललक ~ ई तू की कहै छिहे ! अऽब परेम बड़का आदमी भे गेल हइ। वोऽ अऽब एसडीएम हैय। वोऽ तोरा से बिआह करतौ ?

पिरिया कहलक ~ हं माय ! वो हमरा से परेम करै हैय। वो हमरा से विआह करतैय। हम बतिआ ले ले छी।
माय कहलक ~ ठीक आइ रात मे तोरा बाबू जी से बतियाब।

परंच माय के बात सुनके पिरिया के बड़ा आश्चर्य लागल। माय आइ जाति-पाति के नाम नऽ लेलक। आब बाबू जी की करथिन्ह।

रात मे सुलोचना छोटन बाबू से बोललन ~ की भेल कोनो लड़का के पता चलल ? छोटन बाबू कहलन ~ कहां पता चलल।

सुलोचना बोललक ~ एगो बात कहु। बिगडब तऽ नऽ।

छोटन बाबू कहलन ~ सुलोचना। आइ तक हम नऽ तोरा पर बिगड़ली हैय नऽ तोहर कोनो बात कट ली हैय।

सुलोचना बोललक ~ हम पिरिया के लेल लरिका ढूंढली हैय। लड़का एसडीएम हैय।

छोटन बाबू हंसैत कहलन ~ **हं ! हं !** अपन परेम नऽ ? अरे वोऽ बड़का आदमी बन गैल हइ, एसडीएम सहैब **!**

सुलोचना बोललक ~ तऽ की भे गैले। अपन पिरिया परेम के परेम करै छैय। परेम भी पिरिया से परेम करै छैय। ई बात पिरिया हमरा बतैलक हैय। वोऽ दूनू बिआह करै लेल राजी हैय।

छोटन बाबू बोललन ~ तऽ हमहुं तैयार छी।

ई बात सून के सुलोचना बोललक ~ हमरा आश्चर्य लगैय की **अहां** जाति **-पाति** के मानै वाला विआह के लेल केना तैयार भे गैलीये।

छोटन बाबू बोललन ~ देखू। बड़का आदमी मे जाति पाति नऽ होय छैय। पहिले हम बड़का आदमी रही। अऽब परेम भी बडका आदमी भे गैले। अऽब वोऽ एस.डी.एम. हैय। रामखेलावन भी एसडीएम के बाप बन गैलैय हैय। अब हम दूनू परिवार समान छी। अब शादी ब्याह मे कोई बाधा नऽ हैय। काल्हि खुनमी रामखेलावन बाबू से बात करब।

ई सभ बात पिरिया सुन लेकर आ राते मे मोबाइल से परेम से बतिआ लेलक। दूनू

खुश रहे। ई सभ बात राते मे सुलोचना पिरिया के बता देलक। काल्हि दोपहर मे मौका देख के छोटन बाबू सभ बात रामखेलावन बाबू के कहलन। रामखेलावन बाबू कहलन की परेम जे चाहेत है वोहै होते। वोकर बात हम नऽ काटब।

तय समय पर पटना के मौर्या होटल मे परेम, पिरिया के मांग मे सिंदूर भर देलन। पिरिया आ परेम एक भऽ गेल। पूरा समाज ऐइ क्षण के गवाह भेल। सभ कहे 'सामरथ के दुख नाहि गोसाईं'।

▪▪▪

| मुंहफटपन |

दयानंद प्रसाद प्रधानाध्यापक पद से सेवानिवृत्त होयला के बाद अपना डेरा मुरलियाचक मे रहे लगनन। हम दूनू गोरे एक ही स्कूल फुलहर मे योगदान कैले रही। बाद मे दूनू गोरे के दू गो स्कूल मे बदली भे गेल। हमहुं प्रधानाध्यापक पद से रिटायर हो के बसबरिया मे डेरा पर रहे लगली। एक दिन हम दयानंद बाबू के डेरा पर मां जानकी जन्मभूमि मंदिर, पुनौरा धाम दर्शनसे लौटती मे भेट घाट करे गेली। दयानंद बाबू आइ कालि अस्वस्थ्य छथि। जब हम डेरा पर पहूंचली आ डोर बेल बजैयली तऽ वोऽ घरे मे से बजला ~ के छी ?

हम बोलली ~ घनश्याम महतो।

भीतर से दयानंद बाबू के आवाज आयल ~ घनश्याम बाबू !

दयानंद बाबू ग्रिल दरवाजा खोलैत बोललन ~ आउ घनश्याम बाबू ! बहुत साल पर मिलली हैय। कहु की हाल-चाल हैय ? आ बीचे मे अपना बेटा संजय से बोललन ~ संजय अपना मम्मी सऽ कहऽ चाय नाश्ता बनाबे के लेल। हमर साथी घनश्याम बाबू हमरा से भेट करे आयल छथि।

अऽब घनश्याम बाबू बोललन ~ कहु दयानंद बाबू की हाल चाल हैय ? लैइका सभ की करैत हैय ? संजीव आ संजय की करैत हैय ? वोऽ दूनूके तऽ हम छोटकारी मे ही देखले रही।

दयानंद बाबू बोललन ~ हं ! संजीव तऽ पंचायत शिक्षक हैय आ संजय कम्पीटीशन के तैयारी करैत हैय।

घनश्याम बाबू बोललन ~ सुनले रही की जौं अहां बाजपट्टी मे रही तऽ **उहां** के बीइओ घूस लैत पकड़ा गेल रहै। की भेलै वोइ बीइओ के ?

दयानंद बाबू बोललन ~ हं ! जौं राजीव गांधी पंचायती राज के स्कूली शिक्षा दे देलकै तऽ पंचायती राज के चनाव के बाद शिक्षक सभ के सामहिक बदली भेलैय। हमर

बदली रीगा से बाजपट्टी ब्लौक मे भे गेल। उहां के बीइओ राम खेलावन राय दिल के साफ रहे परंच मूंहफट रहे। कुछ शिक्षक हुनकर दिल सफाई से खुश रहे तऽ कुछ शिक्षक हुनकर मूंहफटपन से नाखुश रहे।

बाजपट्टी के मुख्यालय स्थित स्कूल सह सीआरसी सह बीआरसी मे प्रखंड शिक्षक के नियोजन कार्यालय भी रहे। बीइओ कार्यालय भी रहे। बीइओ अपना काज इहें करैत रहलैन। एक दिन शिक्षक सभ के संकुल स्तरीय प्रशिक्षन होयत रहे। अचांचक बीइओ साहेब के आवाज सुनाई पड़ल ~ बचाब हो ! बचाब हो !

सभ शिक्षक प्रशिक्षन छोड़ के कमरा से निकल गेल। हम देखै छी की चार गो आदमी हाथ मे पिस्तौल लहरैवैत बीइओ साहेब के बाहि पकड़लै घिसियबैत रोड पर ले जाइत। कुछ टीचर बीइओ साहेब के छोड़ाबे लेल बढल की बीइओ साहेब के गूंडा सभ अपहरन के ले लेते जा रहल हैय।

तखनिये पिस्तौल वाला कहलक ~ हम सभ निगरानी विभाग से हैय। बीइओ के घूस लेइत पकड़ली हैय। अहां सभ नै आउ। नऽ तऽ अहू सभ सरकारी काज के बाधा देवे मे फंस जायब। हमर ई देखू परिचय पत्र। परंच शिक्षक सभ के विश्वास नऽ भेल। शिक्षक सभ कहलक ~ जौ तक स्थानीय पुलिस नऽ पहूचत, बीइओ साहेब के नऽ लेय जाय देब।

कनिके देर के बाद स्थानीय पुलिस आ गेल। अऽब सभ के विश्वास भे गेल की बीइओ साहेब के निगरानी पकड़ के ले गेल। परंच ई पता नऽ लागल की कैला बीइओ साहेब पकड़ायल। निगरानी पुलिस सीआरसी पर से एगो शिक्षक के अपना गाड़ी मे बिठा के सीतामढ़ी थाना मे ले गेल। सांझ मे फेर एगो गाड़ी से पुलिस आयल की एगो शिक्षक आऊर चाही। सीजर लिस्ट पर दस्तखत के वास्ते। एगो शिक्षक के पहिले ही ले गेल छी।

परंच शिक्षक सभ के पुलिस से डर लागे। कोई जाय लेल तैयार नऽ। तऽब पुलिस मनाबे लागल। अहां सभ के डरे के जरूरत नै हैय। खाली सीजर लिस्ट पर दस्तखत

चल जाउ पुलिस के साथे आ सीजर लिस्ट पर दस्तखत करि देबै। हम निगरानी पुलिस के गाड़ी मे सीतामढ़ी थाना मे चल गेली। उहां पुलिस कागजी काम करैत रहे। बीइओ साहेब के पुलिस हाजत मे बंद देखली। एकदम गमगीन। मुरझायल चेहरा। इक दू घंटा के बाद पुलिस बोलैलक। पांच छह पन्ना पर लिखल स्टेटमेट पढ़े के लेल आतुर भेली की पुलिस कहलक ~ दस्तखत करा की..?

हम डर से दस्तखत कर देली। रुपया नोट पर भी दस्तखत कर देली। पुलिस कहलक की अइ बोतल पर दस्तखत कऽ दऽ। अइ मे बीइओ साहेब के हाथ के धोयाल लाल पानी हैय। ई रूपए मे लागल केमिकल से हिनकर हाथ मे केमिकल लागल रहे जे पानी से धोयला पर लाल हो गेल हैय। हम बोतल पर दस्तखत कर देली। हमरा देखा देखी पहिले आयल शिक्षक अजय कुमारो दस्तखत कर देलन।

पुलिस कहलक ~ आबि अहां आउर जाउ।

अऽब हम अजय बाबू से पुछली ~ की अहां के सामने मे बीइओ साहेब के हाथ धोलाइ गेल रहे। हमरा तऽ बाद मे पुलिस लायल रहे।

अजय बाबू कहलन ~ नऽ ! हमरा तऽ ओनी बाहरे बिठा देले रहल हैय। हम तऽ किछू नऽ देखि लियै हैय।

लगभग एगारह बरस के बाद पटना निगरानी कोर्ट से चिट्ठी मिलल की अमूक तारीख के जज साहब के इहां गवाही हैय। हम अजय बाबू बस से पटना गेली। पहिले सरकारी वकील से मिल ली।

सरकारी वकील कहलक ~ घटना सभ याद हैय नऽ ? हं ! बढ़िया से याद करे लेल पांच छह पन्ना मे लिखल कागज पढेले देलन।

हम दूनू गोरे कागज के पढली। कागज मे लिखल रहे की पकड़ते समय देखली की रूपया ले रहल हैय आऊर पकड़ाए वाला स्थान पर हाथ धुलबैत देखली आ सारा कागजी काम भेल।

हम दूनू गोरे वकील साहब के कहली की ई सभ काज हम सभ नऽ देखली हैय। हम दूनू गोरे सीतामढ़ी थाना पर डर से केवल दस्तखत कैले छी। दस्तखत हमर सभ के हैय। वकील साहब कहलन ~ जौं अहां दूनू गोरे दस्तखत कैले छियै तऽ लिखल सभ बात स्वीकार करे के पड़त।

हम दूनू गोरे पेशोपेश मे पड़ गेली। परंच हम दूनू गोरे सोचली की चाहे जे जाय हम सभ सच्चे कहब। जब हम देखबे नऽ कैली तऽ केना कहबै की हम देख ली हैय।

वकील साहब कहलन ~ अहां दूनू गोरे कोर्ट मे चलू।

हम अहां दूनू गोरे-गोरे के बुला लेब। हम दूनू गोरे कोर्ट कम्पाउन्ड मे बैठ गेली आ वकील साहब के फोन के इंतजार करे लगली। कोर्ट के समय खतम होय लागल तऽ हम दूनू गोरे जज साहेब के इजलास मे गेली। वकील साहब उहां रहे। वकील साहब कहलन ~ अहां दूनू गोरे केन्नऽ रहली हैय। अऽब समय समाप्त भे गेल हैय। अऽब दोसर तारीख पर आबै के होयत।

हम दूनू गोरे कहली की हमरा सभ के हाजरी तऽ ले लू नऽ तऽ हम दूनू गोरे एबसेंट हो जायब। वकील साहब आ पेशकार बोललक ~ नऽ ! नऽ ! अऽब हाजरी नऽ होयत। हम सभ जज साहब के कहली। वोऽ सभ देखैत सुनैत रहैति। जज साहब पेशकार के हाजरी ले लेवे के कहलन। पेशकार हाजरी लेके दोसर तारीख दे देलक। हम दूनू गोरे के नजर बीइओ साहेब पड़ल। गमगीन, मुरझायल चेहरा, फाटल जुत्ता आ फाटल सर्ट पहिनले। याद आ गेल ऊ हंसैत चेहरा, दमदार आवाज, कलफदार पैंट सर्ट आ वुडलैंड के जूता पहने गौरव पूर्न डिलडौल।

अगिला तारीख पर अजय बाबू संगे पटना गेली। सरकारी वकील से भेंट कैली।

वकील साहब कहलन ~ सब बात याद हइ नऽ ? जे कागत मे हैय, उहे बात जज साहब के नजदीक बोलबै। हम दूनू गोरे कहली ~ जी !

समय पर बुलाहट भेल। हम गवाह के बनायल कठधेरा मे गेली। पहिले जज साहब पूछलन ~ अहां रूपया लेइत देखली ?

हम कहली ~ जी नऽ ! हम पुलिस के बीइओ साहेब के पकड़ के घिसियबत रोड पर ले जाइत देखली।

जज साहब पूछलन ~ नोट पर अहां के ही दस्तखत हैय।

हम कहली ~ जी !पुलिस के कहला पर सीतामढ़ी थाना पर डर से दस्तखत कै देलियै।

जज साहेब कहलन ~अहीं के सामने मे हाथ धुलायल गेल ?

हम कहली ~ जी नऽ ! हम सीतामढ़ी थाना मे लाल रंग के पानी भरल बोतल पर पुलिस के कहला पर डर से दस्तखत कैऽ देलीयै।

जज साहब पुछलन ~ अइ सीजर लिस्ट पर अहीं के दस्तखत हैय ?

हम कहली ~ जी ! पुलिस के कहला पर डर से हम दस्तखत कऽ देलियऽ।

वकील साहब कहलन ~ अहां बात से मुकरैय छि।

हम कबीर साहब के उद्धृत करैत कहली ~ तू कहता कागद के लेखी। मै कहता अंखियन के देखी।

जज साहेब मुस्कुरैलन आ शिक्षक अजय के बुलैलन। अजय बाबू गवाही बला कठघरे मे गेलन वोऽ भी हमरे जेका सभ बात के दुहरा देलन। वकील बोललन ~ केश होसटाइल हो गेल।

हम दूनू गोरे बयान वाला कागज पर दस्तखत कऽ के कोर्ट से निकल गेली। फेर से हमरा दूनू गोरे के नजर बीइओ साहेब पर पड़ल। गमगीन आ उदास चेहरा पर कनिका खुशी के एकटा लहर। हम दूनू गोरे सोचे लगली समय समय के बात हैय।

बात अऽब तक खुल गेल की बीइओ साहेब के मूंहफटपन से कुछ नराज लोग

फंसा देले रहै। कहल गेल हैय "नऽ ब्रूयात् सत्यम् अप्रियम" अर्थात जे सच बात अच्छा नऽ लगे, नऽ बोले के चाही।

दयानंद बाबू कहलन ~ बहुत बाद मे मालूम भेल की बीइओ साहेब केस जीत गेलन। परंच केस जितीयो के जीवन मे हार गेलन। मुंहफटपन बीइओ साहेब के जीवन बर्बाद कैऽ देलक। नास्ता चाय के बाद हम अपना डेरा बसबरिया चल अइली।

▪▪▪

| शराब आ शबाब |

सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया मे विमलेश ठाकुर कैशियर रहथि। वोऽ गणित से एम.एस.सी. रहलन। हम चार गो साथी मिल के सेकेण्डरी कोचिंग सेंटर खोल ली, तऽ मैथ पढाबे लेल कहली, तऽ वोऽ मार्निंग सिफ्ट मे पढ़ावे लेल तैयार हो गेलन। हुनकर पढावे के शैली से विद्यार्थी सभ खुश रहे। कोचिंग मे विद्यार्थी के संख्या बढ़े लागल। हम जब मेहताना देबे के लेल कहली तो वोऽ कहला ~ दयानंद बाबू हम मेहताना नऽ लेब। हम अहां सभ के मदत करै छी। अहां सभ एगो वित्त रहित महाविद्यालय मे पढ़बै छी। अहां सभ के वेतन नऽ मिलै हैय। हमरा तऽ बैंक मे नौकरी हैय आ वेतन मिलै हैय। वोऽ एक नेक दिल इंसान रहैत।

बैंक के पार्टी फंक्शन मे वोऽ कभी-कभी शौकिया शराब पी ले रहैत। धीरे-धीरे हुनका शराब के लत्त पड़ गेल। वोऽ बड़का शराबी बन गेलन। अऽब तऽ तीन बजे भोर से पीये लगला। बैंक आवर मे भी पीये लगलन। अऽब शराब के नशा मे शबाब भी चाही। शबाब के लेल हुनकर नजर कपड़ा धोयवाली महिला पर पड़ल। वोऽ मैइल कपड़ा लावे आ साफ कैल कपड़ा देवे, डेरा मे अबैत रहे। तीस बर्षीय महिला नाटी, मोटी आ कारी रहे। गोल मुंह , पीठ पर लटकैत कारी केश, छोटकी छोटकी आंखि, मोट होंठ , ताड़ के फल जेका उरोज, हकलाइत आवाज आ हथिनी अइसन चाल रहे। बुझू बासना के मुरुत रहे। काम कला के मर्मज्ञ आ कामशास्त्र के रचयिता ऋषि वात्स्यायन के हिसाबें हस्तिनी श्रेणी के स्त्री रहे।

धीरे- धीरे स्त्री के साथ हुनकर वासनात्मक संबंध जुड़ गेल। शराब आ शबाब के लेल आबि विमलेश ठाकुर के धन (रुपया) के जरूरत पड़े लागल। वेतन कम पड़े लागल। कारण की वोऽ बाल बच्चेदार रहैत। सुंदर पत्नी भी रहे। परंच शराब के लत। जौं बैंक के अन्यकर्मी आ मैनेजर छुट्टी पर रहैत तऽ विमलेश ठाकुर कैशियर

के संगे मैनेजर के भी काज करैत। बैंक मे तीनेटा कर्मचारी रहे। एगो मैनेजर, एकटा क्लर्क आ एगो कैशियर ठाकुर जी स्वयं। ठाकुर जी कोनो ग्राहक के नाम पर भाउचर भरके आ वोकरा पास क के राशि(रुपया) निकाल लेबै। रूपया से खूब शराब पीये आ महिला संग ऐश करे। महिला के खूब रुपया देबे लागल।

बैंक के जौं औडिट भेल तऽ गड़बड़ी पकड़ल गेल। लेखा-बही के पन्ना फाड़ल भेटल। भाउचर गायब। ठाकुर जी पर आरोप लागल। ठाकुर जी कहलन हम ई काज नऽ कैली हैय। ई काज मैनेजर साहब कैलन हैय।

आडिटर कहलन ~ जै दिन अहां गड़बड़ी कैली हैय। वोइ दिन के उहे खास भाउचर गायब हैय आ कैश बुक के पन्ना फाटल हैय। वोइ दिन मैनेजर साहब आ क्लर्क छुट्टी पर हैय। केवल अहीं ड्यूटी पर छी आ वोकर नाजायज फायदा उठैली हैय। विमलेश ठाकुर शांत पड़ गेलन आ रोय लगलन। मैनेजर साहब थाना मे फोन कैलन।

तैनके देर बाद दारोगा दू टा पुलिस के साथ बैंक मे आ धमकल। कैशियर विमलेश ठाकुर पर एफआईआर दर्ज भेल। पुलिस हथकड़ी लगा के थाना मे ले गेल। बाद मे कोर्ट मे पेश कऽ के जेल ले गेल। विमलेश ठाकुर बैंक सेवा से बर्खास्त भे गेलन। शराब आ शबाब के कारण एक नेकदिल इंसान ठाकुर जी के जीवन बर्बाद हो गेल। अइ से लोग के दूर रहे मे ही भलाई हैय।

▪▪▪

| महायज्ञ |

आइ भाई समान राम बिलास ठाकुर जी बड याद आवैय हैय। फेसबुक एकटा पोस्ट से मालूम भेल की परसुये अइ दुनिया के छोड़ देला। वोऽ बड़ा बीमार छल आ अंतिम समय मे अपन नौकरीहा बेटा संग विशाखापट्टनम मे रहैत रहलन। हुनका संग बितायल समय मन के चित्रपट पर आबे लागल। वित्त रहित कालेज घनश्यामपुर मे काम करैत, आइ से सैंतीस बरस पहिले गायत्री महायज्ञ के।

ठाकुर जी गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार से जुड़ल रहथि। वोऽ परिव्राजक रहथिन। हुनकर मन घनश्यामपुर मे गायत्री महायज्ञ कराबे के भेल। वोऽ हमरा अपना मन के बात बतैलन। महायज्ञ के जगऽह जमीन के लेल घनश्यामपुर बस स्टैंड के बगल के जमीन वाला कपल साह से बातचीत कैली। वोइ जमीन पर हुनके बनायल महादेव मठो हैय। कपल बाबू महायज्ञ के लेल जमीन देबे के लेल तैयार हो गेलन। कपल बाबू कहलन ~ हम चंदा देब आ लोग सभ से देबाबे मे मदत करब।

अऽब यज्ञ के प्रचार-प्रसार आ चंदा संकलन के लेल टीम बनल। पहिले हम दूनू गोरे पैसा लगा के हैंड बिल आ पोस्टर छपबैली।

ठाकुर जी कहलन ~ दयानंद बाबू प्रचार इहे के करे के हैय। एगो रिक्शा आ लाउडस्पीकर भाड़ा पर लेके प्रचार -प्रसार पर निकल गेली। माइक से हम ही प्रचार करे लगली।

हम हाथ मे माइक लेके बोलली ~ हेलो ! हेलो ! घनश्यामपुर मे पहिल बेर गायत्री महायज्ञ बस स्टैंड मे पांच फरवरी उन्नीस सौ पचासी के हो रहल हैय। सभ कोई महायज्ञ मे भाग लू आ पूण्य के भागी बनू। महायज्ञ मे सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार, नामांकरण संस्कार, विद्यारंभ संस्कार, पुंगनवन संस्कार आऊर अन्य सभ संस्कार भी कैल जायत। यज्ञ के सफल बनाबे के लेल यथा शक्ति सहयोग करु।

लोग सभ उत्सुकता आ आश्चर्य से देखे। अइ क्षेत्र मे मे गायत्री महायज्ञ नऽ भेल रहे। ई क्षेत्र बाभन बहुल क्षेत्र भी रहे। बाभन सभ मे आंतरिक प्रतिक्रिया भी भेल। परंच खुल के बिरोध नऽ कैलन। कानाफूसी जरूर शुरू भे गेल। गायत्री महायज्ञ सोलकन सभ केना करतै !

आबि महायज्ञ मंडप के लेल बांस आ खरही के जरूरत भेल। मालूम भेल की बगल के गांव सियानानी जे नेपाल मे परैय हैय वहां के महनजी के बांस आ खरही बहुते हैय। हम दूनू गोरे महनजी के यहां गेली। दंड परनाम भेल। हम सभ अपन परिचय देली की हम सभ घनश्यामपुर कालेज मे पढवै छी आ घनश्यामपुर मे गायत्री महायज्ञ करवा रहल छी। यज्ञ मंडप बनाबे के लेल बांस खरही के जरूरत हैय।

महनजी अपना जिरितिया सियावर झा के बुलैलन आ कहलन ~ हिनकर सभ के काज कै दिऔ।

सियावर झा कहलन ~ अहां सभ परसू आउ।

हमरा से सियावर झा के बेटा टिउशन पढे। वोऽ आठवां पढैत रहे। जौं हम दूनू गोरे परसौ सियावर झा से मिलली तऽ बतैलैन की ~ अहां सभ के मालूम हैय। सियानानी संस्कृत कैंपस के गुरु जी सभ महनजी से मिल के कहलन हैय की गायत्री महायज्ञ के मंडप बनाबे के लेल बांस आ खरही नै दू। अइला की ई गायत्री महायज्ञ सोलकन सभ कऽ रहल हैय। सोलकन के गायत्री यज्ञ करे के अधिकार नै हैय। महनजी हुनका सभ के कोई उत्तर नऽ देलथिन हैय। गुरु जी सभ के चल गेला के बाद हम महनजी के कहैलियन की गायत्री महायज्ञ घनश्यामपुर कालेज के विद्वान शिक्षक सभ करैत छथि। हुनका मदत करनाइ जरुरी हैय। नऽ तऽ बड़का बबाल हो जायत। बैकवर्ड - फारबर्ड के लड़ाई हो जायत। अपन गांव सियानानी तऽ बैकवर्ड बहुल हैय। खाली सोलकने सोलकन। सभ पढल-लिखल।

महनजी कहलन ~ सियावर जी अहां के जे मन हैय से करु।

बाद मे सियावर झा हमरा कहलन ~ दयानंद बाबू अहां हमरा बेटा के गुरुजी छी। अहां हमरा इहां आयल छी। हम अहां के मांग के नै टाल सकै छी। अहां दूनू गोरे जाउ। हम स्थान के ट्रैक्टर से आइ सांझ मे बांस आ खरही यज्ञ स्थल पर गिरा देब। हम दूनू गोरे घनश्यामपुर चल अइली।

सांझ मे सियावर जी ट्रैक्टर से बास आ खरही गिरा देलन। अइ बीच मे पर्याप्त चंदा भी जमा भे गेल। खूब सुंदर यज्ञ मंडप बन के तैयार भऽ गेल। तीन फरवरी के सांझ मे शांति कुंज हरिद्वार से संगीत मंडली पहूच गेल।

चार फरवरी के सुबह मे मुख्य यजमान कपल साह आ हुनकर धर्म पत्नी के नेतृत्व मे यज्ञ के लेल एक सौ एक कुमैर कन्या के संगे मंगल कलश यात्रा निकलल। लाउड स्पीकर से 'ऊ भूर्भुवः स्वः' के उद्घोष होइत रहे। बगल के धौंस नदी के जल से घड़ा भरल गेल। नदी कत्ता के सुंदर दृश्य देखे लायक रहे। भक्त सभ कैमरा से फोटो खींचै आ खींचाबे लागल। मंगल कलश यात्रा यज्ञ मंडप तक आके समाप्त भे गेल। प्रसाद लेके लोग सभ अपन अपन घर चल गेल।

पांच फरवरी के सुबहे से लाउडस्पीकर से भक्ति गीत बजे लागल। पूरा वातावरण भक्तिमय हो गेल। यज्ञ देखे आ करे लेल भक्तन के भीड़ बढ गेल। गायत्री परिवार के परिव्राजक राम विलास ठाकुर के पौरिहित्य मे पंचकुंडीय महायज्ञ शुरू भेल। बेरा बेरी समूह मे भक्तसभ आहुति देबे लागल।

यज्ञ मंडप के भक्त सभ परिक्रमा करै लागल। आश्चर्य तऽ तऽब लागल जब सियानानी संस्कृत कैंपस के गुरु जी सभ हाथ जोड़ के यज्ञ मंडप के परिक्रमा करै लगनन जे यज्ञ के विरोधी रहै। तनी चिन्हा परिचय के लोग सभ गुरु जी के कहलकै की गुरूजी अहां सभ तऽ सोलकन के यज्ञ कहि के महनजी से यज्ञ मंडप लेल बांस आ

आ खरही के लेल मना कै देले रहलिये की गायत्री यज्ञ करे के सोलकन अधिकारी नै हैया।त अहां सभ सोलकन यज्ञ मे परिक्रमा कैला करे अइली हैय ?

गुरु जी कहलन ~ हंऽ ! हम सभ विरोध जरुर कैली हैय । परंच आबि गायत्री महायज्ञ शुरू हो गेलैय । गायत्री माता के आह्वान हो गेलैय । गायत्री माता के जौ पदार्पण हो गेलैय तऽ हम सभ विरोध नै कऽ सकै छी । विरोध कै के हम सभ राक्षस नै बन सकै छी । अऽब तऽ हम सभ भी पूर्णाहुति कर के ही जायब ।

सभ लोग उत्तर सुनके खुश हो गेल । यज्ञ होइत रहे । आहुति कार्यक्रम के बाद सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार, नामांकरण संस्कार, पुंसवन संस्कार, विद्यारंभ संस्कार आदि संस्कार कैल गेल । बाद मे पूर्णाहुति भेल । बहुत भक्त दीक्षा ले लेलन । प्रसाद बंटायल । भंडारा भेल । संध्या मे हरिद्वार से आयल संगीत मंडली भक्ति संगीत आ युग संगीत प्रस्तुत कैलक । लोग सभ गायत्री महायज्ञ मे भाग लेके गायत्री परिवार से जुड़ गेल ।

भाई साहब ठाकुर जी के प्रयास से वोइ यज्ञ स्थल पर कपल बाबू के सहयोग से पक्का पंचकुंडीय यज्ञशाला बन के तैयार हैय । आबि हर पूर्णिमा के भक्त सभ गायत्री यज्ञ करैत हैय । हऽर साल वसंत पंचमी के गायत्री महायज्ञ होइत हैय । आइ गायत्री परिवार के बड भाई रामबिलास ठाकुर जी बड़ा याद आवै हैय ।

▪▪▪

| हरबाह |

भजन अप्पन सिमरा गांव के ठोस गिरहस शेखर प्रताप के हरबाह रहे। हर साल सिरि पचैय के अप्पन मालिक के हर खड़ा कऽ के साल भर के लेल बंधुआ हरबाह बन जाय। बोइन मे पांच सेर अनाज मिलैय। अनाज मे धान तऽ कहियो गहूंम, तऽ कहियो मरुआ, तऽ कहियो मकैइ, तऽ कहियो अलुआ मिले। वोकर घरोवाली मजदूरिन के काम करे। खास के धनरोपनी, कमौटी आ कटौनी आऊर समय मे अपन घर के काम करे।

भजन गिरहस के हरबाही करैत आबि अधबैस भे गेल। परंच दमा के कारण बुढ जका भे गेल। भजन के एगो बेटा हैय मनोहर। जे आबि इक्कीस साल के हैय। मनोहर अपना गांव के स्कूल से आठवां पास हैय। आबि वोऽ चाहै हैय की दिल्ली जा के कमाई। गांव के वोकर उमर के मोहन, पदारथ आ बदरी कमाय के लेल दिल्ली जा रहल हैय। सभ सिरी पंचैय के दिल्ली जाय के प्लान बनैले हैय।

सिरी पंचैय के एक दिन पहिले सांझ में भजन गिरहस शेखर प्रताप के इहां गेल आ कहलक ~ मालिक। मनोहर कालि अपना संगी सभ के संगे दिल्ली कमाय जाइत चाहैय हैय। मनोहर के भाड़ा-खरचा के लेल हमरा एक हजार रूपया दू। जैयसे मनोहर दिल्ली जाइ सकै। हम ई रुपया जल्दीये सधा देव। हम तऽ अहां के हरबाही करबे करै छी।

शेखर प्रताप बिगड़ैत कहलन ~ तोरा मनोहर के दिल्ली कमाय लेल भाड़ा खरचा के लेल रुपया चाही आ हमर इहां हरबाही के करतै ? तू आबि दमा के कारण हरबाही मे नऽ सकै छे। आबि तोहर बेटा मनोहरा हरबाही करतौउ। कालि सिरी पचैय हैय। कालि तोरा बदले मनोहरे हर उठैतेउ। मनोहरा दिल्ली नऽ जतौउ। करजा लेले से आइ तक नऽ सधलौउ हैय।

तेज प्रताप बोलल ~ तोहर बाप करजा लेके हरबाही करैत नऽ सधा पैलक। तू अपना बाप के आ अपन करजा नऽ सधा पैलै आ तू आब बेटा के लेल करजा लेबे। अपने तऽ अऽब काज मे सकै छे नऽ।आब तोरा बेटा के कालि हर खड़ा करे के परतौउ।

भजन आ तेज प्रताप मे बात होइत मनोहर आ वोकर संगी सभ सुनलक। जे तेज प्रताप के इहां देखे अपन संगी सभ के संगे अपन बाबू के बुलावे आयल रहे। वोकरा सभ के दिल्ली जाय के लेल तैयारी करे के रहे। मनोहर के एगो संगी बदरी तनी ज्यादा होसगर आ निडर लैइका रहे। घर सऽ थोडा मजबूत भी रहे। वोकर बाबू अर्द्ध सरकारी हाई स्कूल के चपरासी रहे।

बदरी कहलक ~ चलऽ घरे भजन काका। मनोहर के दिल्ली जाय के भाड़ा खरचा हम देबैइ। ई तेजप्रताप बाबू कैला मनोहर के दिल्ली जाय देतौ। हिनका तऽ बंधुआ मजदूर चाही। जे साल भर पांच सेर अनाज पर हरबाही करैत रहे। ई मिथिला मे जमींदार के परथा की सिरी पंचैय के जे मजदूर हर खड़ा करतै, ऊ हरबाह बन के साल भर मालिक खेत जोत तैइ। ऊ बीच मे हरबाही नऽ छोड़ सकै छैय। ई एगो परंपरा बना देले हैय। आबि ई बंधुआ मजदूर बनाबे के प्रथा बन गेल हैय। ई दास प्रथा हैय। अइ दास प्रथा के चलते आइ तक कोनो मजदूर के करजा नऽ सध ले हैय। आबि अइ चंगुल मे मनोहर नऽ फंसतैय। मनोहर हरबाह नऽ बनतैय।

मनोहर भी कहलक ~ हम हरबाह नऽ बनबैय।

भजन आ मनोहर सभ संगी के संगे अपना घरे चल आयल। तेज प्रताप मूंह तकैत रह गेल। सिरी पंचैय के मनोहर सभ संगी के साथ दिल्ली चल गेल।

▪▪▪

| झापन |

विनिता हंसमुख आ बातूनी लैइकी रहे। वोऽ दू बहिनी रहे। विनिता बड़ आ शमिता छोट रहे। एगो भाइ मोहन रहे। जे विनिता से छोट रहे। पनरह बरख के विनिता जौं नवमा मे पढैत रहे तऽब विनिता के बाबू शिव प्रसाद वोकर बिआह संवलपुर के विधुर जयकांत से कै देलथिन। जयकांत ग्राम सेवक रहे। हुनका एकटा बेटी आ एकटा बेटा रहे। बेटा बहुत बहुत बाद मे भेल रहे। बेटी तऽ विनिता के उमर के रहे। बेटी सुजाता के बिआहो भे गेल रहे। बेटा मोहन पांच बरस के रहे तऽ जयकांत के पत्नी के अकस्मात मृत्यु भे गेल रहे।

विनिता अऽब हंसमुख आ बातूनी नै रह गेल। वोऽ आबि गंभीर आ मितभाषी बन गेल। आबि तऽ वोऽ तीनटा लैइकी आ एकटा लैइका के माय बन गेल। एतबे नऽ वोऽ सास भी बन गेल। एगो लैइकी के बिआह के बाद पारिवारिकता आ सामाजिकता के निर्वाह तऽ करिहे के पडैय छैय। भले वोऽ उमर आ अनुभव मे परिपक्व भले नऽ होय।

दू बरख बीत गेल। अचानक जयकांत के मृत्यु भऽ गेल। विनिता मसोमांत भे गेल। हाथ के चुड़ी टूट गेल। मांग के सेनुर धो आ गेल। उजरि सारी पहने के भेल। चेहरा उजरि आ सपाट भे गेल। कनैत कनैत आंखि के गढ़ा कारी हो गेल। पेटकोनीय पलंगरी पर परल रहे लागल। बहुत कर-कुटुंब सभ समझैलक। बाबू माय समझैलक। मृत्यु केकरो हाथ मे नऽ हैय। बिधना के जे लिखल हैय। वोहे होय छैय। अपना लिखल के बिधना नऽ मिटा सकै छैय। आबि तऽ अहिना जीबै पड़तैय। आबि बाल बच्चा के देखे के पड़तौअ।

विनिता के नोर सुख गेल। सामाजिक आ पारिवारिक काज मे लागि गेल। दुख आबि काज मे धीरे-धीरे गुम होय लागल। आबि कखनियो - कखनियो कोनो बात

पर हंसे भी लागल । उन्नीस बरख के औरत आबि अपन रूप निखारे लागल । कखनियो - कखनियो अपन बिआह बाला सारी आ गहना भी पेन्हे लागल। आंखि मे काजर भी लगा लेबे । परंच परिवार के लोग कुच्छो नऽ कहे । बल्कि सांत्वना दैत आह भी भरे की भरल जवानी मे बेचारी बिधवा भे गेल । घाव भी समय पर भरि जाय छैय । ई तऽ जवान हैय।

धीरे-धीरे विनिता आबि अपन देयाद मे के दिअर मणिकांत मे रूचि लेबे लागल । हालांकि मणिकांत भी बाल बच्चेदार रहे । परंच विधवा भाउज के मन लगाबे के लेल वोहो मजाक करे लागल । धीरे धीरे ई मजाक आबि शारीरिक छेड़छाड़ तक पहुंच गेल । जौं ई दिअर-भाउज के हंसी मजाक होय लागे तऽ परिवार के लोग वोइ जगऽह से हट जाय । की दिअर-भाउज के हंसी मजाक आ गपशप मे बाधा नऽ होय । परिवार के ई डर होय की एतबा छूट नऽ देबै तऽ विनिता के मन कोनो दोसर युवक के संग लग सकै हैय । कारण की विनिता अखनी जवानी से गुजर रहल हैय । जवानी के समय बीत गेला पर सभ ठीक हो जतैय । जवानी के आगि तऽ मसोमांत के राखि से झपल रहै छैय । कोनो जवान पुरुष के प्रेम हवा से वोऽ आगि प्रज्वलित होय जाय छैय । जवान मसोमांत के पैर घर से बाहर निकल सकै हैय । तऽ वोइ से सामाजिक इज्जत पर आंच आबै छैय । तैइला घर मे तनी छूट देल जाय छैय । कारण की कुलिन वर्ग मे मसोमांत के बिआह करे पर सामाजिक रोक हैय ।

विनिता आ मणिकांत के ई छूट शारीरिक संबंध बनाबे के लेल सहायक बनल । आबि तऽ दूनू के शारीरिक सम्बन्ध के चर्चा घर मे होय लागल । परंच घर के बड़ बुजुर्ग के कहल रहे के जै परिस्थिति मे विनिता हैय । अइ स्थिति मे झापन देना आवश्यक हैय । ई कुल आ परिवार के इज्जत बचाबे के लेल जरूरी हैय ।

विनिता आइ साठ बरख मे मोहन के धिया पुता के बुढ़िया दादी बन गेल हैय । आइ वोऽ पारिवारिक आ सामाजिक इज्ज़तदार महिला मानल जाइ हैय । ▪▪▪

| रनियां भिखारिन |

कही से आके एगो भिखारिन प्रखंड मुख्यालय गोपालपुर बस स्टैंड मे रहे लागल। वोऽ दुधिया गोर रंग के पचीस बरस के युवती रहे। दुबर पातर शरीर रहे। वोऽ बामा अंग से पोलियो ग्रस्त भी रहे। वाया पैर से तनिका घिसिया के चले तऽ बामा हाथ भी झूलैत रहे। वोऽ बस स्टैंड मे के होटल सभ मे मांग के खाइत रहे।

हम स्थानीय वित्त रहित इण्टर कॉलेज मे डिमान्सट्रेटर रही। बस स्टैंड के बगल मे भाड़ा के मकान मे रही। कालेज आइत जाइत हम वोकरा देखी। बस स्टैंड के किनारे भूइयां पर फाटल चिटल गुदरी पर कभी परल तऽ कभी बैठल रहे। कभी कोनो होटल पर खाना लेल खड़ा रहे। होटल वाला वोकरा खाना देबे तऽ वोही भुइयां बैठ के खा लेबे आ कल पर जा के पानी पी लेबे।

एक बात आऊर रहे जे वोऽ साफ सुथरा से रहे। बस स्टैंड के बगल मे के पोखरी मे नहाय आ कपड़ा भी खीच लेबे। किराना दुकानदार से साबून भी मांग लेबे। बस स्टैंड के सभ दुकानदार वोकरा से सहानुभूति रखे। दुकानदार सभ वोकरा रनियां कह के पुकारे।

एक दिन वोकरा बस स्टैंड मे लागल खाली बस से उतरैत देखली। हमरा आश्चर्य लागल। हम जै होटल मे खाइ, वोइ होटल वाला मनोहर के ई बात कहली। तऽ वोऽ कहलक – हं ! दयानंद बाबू। रनियां बस मे झांरू मारै छैय। बस के साफ कै दैय छैय तऽ कंडक्टर वोकरा कुछ पैसा दे देइ छैय।

कुच्छे दिन बाद देखै छी की रनियां मे शारीरिक परिवर्तन आ रहल हैय। वोकर शरीर धीरे धीरे फुलल जा रहल हैय। गाल लाल-लाल होके उभर रहल हैय। छाती के उभार भी उन्नत हो रहल हैय। केश भी खोल ले डांर तक लटकैले रहल हैय। ओठ पर मुस्की रहै हैय। तनी अजीब नाहित हमरा लागे लागल।

तनिके आऊर दिन बाद वोकरा पेट मे उभार देखली। हम फेर होटल वाला मनोहर के रनियां के बारे मे बतैली तऽ होटल वाला मनोहर कहलक ~ ई सभ बस के कंडक्टर के करदानी हैय। कंडक्टर रनियां के यौन शोषण करे छैय परंच रनियां के मन लगै छैय।

हम कहली ~ की कंडक्टर रनियां के संगे बलात्कार नऽ तऽ कैले हैय।

होटल वाला मनोहर कहलक ~ कंडक्टर बलात्कार नऽ कैले हैय। हम सभ बस स्टैंड मे रहै छी। बलात्कार करितै तऽ रनियां हो-हल्ला जरूर करितै आ हमरा सभ के जरूर बतैतैय। बस स्टैंड के सभ दूकानदार सभ रनियां के मानै छैय। कंडक्टर रनियां के फुसला के आ बस मे लागल भीसीपी से एडल्ट फिल्म देखा के वोऽकर नारीगत कामवासना के जगा के यौन शोषण करै छैय। रनियां के जवानी आ वोकर शारीरिक भूख के फायदा कंडक्टर उठा रहल हैय। देखैय नऽ छियै रनियां आबि केते खुश रहै हैय। केते खिलल-खिलल रहे हैय।

रनियां के पेट काफी बढ़ गेल। बस स्टैंड मे खुसर फुसर होय। स्थानीय पुलिस दारोगा, संभ्रांत लोग सभ देखे बतिआय परंच विरोध मे कुच्छो नऽ बोले। नव महिना पूर गेल। रनियां खुब सुंदर गोर लैइका के जनम देलक। आबि वोऽ माय बन गेल। कोई महिला कोतुकबश लैइका के मांगे तऽ वोऽ लैइका के वोऽकरा नऽ देबे। हर समय बच्चा के पहरा दैत रहै।

एगो नारी जौं माय बनै छैय तऽ वोऽ सिरफ माय होय छैय। चाहे वोऽ बच्चा प्रेम के होय की यौनशोषण से होय आ की बलात्कार से होय। की बैध होय, की अबैध होय!

आइ जौं की अविवाहित माय समाज के डर से अपना बच्चा के फेंक दैय छैय। मार दैय छैय। परंच रनियां अपना बच्चा के प्यार करै छैय। भले वोऽ बच्चा अबैध भेल होय। परंच रनियां के बच्चा रनियां के शरीर के हिस्सा लगैय। हर समय बच्चा के निघारैत आ चुम्मैत रहैत रहे तऽ कभी स्तनपान करवैत रहैत रहे।

रनियां मे मां के रूप सत्य, वात्सल्य शिव आ ममता सुन्दर लगै छैय। रनियां आइ

आइ पूर्ण नारी लगैय हैय। रनियां आइ भिखारिन नै रानी लगैय हैय। रनियां आबि बस स्टैंड छोड़ के कहौं दोसर जगह चलि गेल।

▪▪▪

कथाकार परिचय

नाम- आचार्य रामानंद मंडल
(सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक)
माता- चन्द्र देवी
पिता- स्व. राजेश्वर मंडल
पत्नी- प्रमिला देवी
जन्म तिथि- 01 जनवरी 1960

योग्यता- एम. एससी. (रसायन शास्त्र), एम. ए. (हिन्दी) मैथिली-हिन्दी कविता आ कहानी लेखन, सामाजिक चिंतन।

दायित्व: पूर्व जिला प्रतिनिधि, प्राथमिक शिक्षक संघ, डुमरा, सीतामढ़ी।

प्रकाशित कृति: कविता संग्रह 'भासा के न बाटियों', सझिया कविता संग्रह 'जनक नंदिनी जानकी' आ 'शौर्य-गान'. विभिन्न पत्र-पत्रिका मे प्रकाशित कथा, कविता.

स्थायी पता: ग्राम-पिपरा विशनपुर थाना-परिहार, जिला-सीतामढी, मिथिला (बिहार)/भारत.

वर्तमान पता: पिपरा सदन, मुरलियाचक वार्ड-19, सीतामढ़ी पोस्ट-चकमहिला जिला- सीतामढी मिथिला पिन-843302

मो नं: 9973641075

ईमेल: ramanandmandal001@gmail-com

ISBN
978-93-94207-03-5

MST PUBLICATION
मिथिला समाज ट्रस्ट

mithilasamajtrust@gmail.com
9911562859 7053886423
2nd Floor, Pl. No. 12, Kh.No. 122/5/1
Bramh Kumari Marg, Sant Nagar Delhi-84

मूल्य:- ₹200/-